हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची ● शनिवार ● 03.08.2024 ● वर्ष : 15 ● अंक : 15 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3~~ 2 रुपया

PR- 331678 (Women, Child Development & Social Security) 24-25

महिला, बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग, झारखण्ड सरकार

एक नजर

कल से मंईयां सम्मान योजना को लेकर केदारुत में लगेगा शिविर

बरही : बरही प्रखंड के केदारुत पंचायत में 4 अगस्त को मुख्यमंत्री मईयां सम्मान योजना को लेकर पंचायत भवन में शिविर का आयोजन किया गया है। उक्त जानकारी पंचायत की मुखिया सरिता देवी ने दी। उन्होंने बताया कि पंचायत के अधिक से अधिक लाभुकों को इसका लाभ मिले। उन्होंने पंचायत वासियों से अपील करते हुए कहा कि इस शिविर का लाभ उठाते हुए ज्यादा से ज्यादा संख्या में फॉर्म भरकर इसका लाभ उठाए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने महिलाओं के लिए महत्वकांक्षी योजना लाई है, जिसके तहत 21 से 49 वर्ष की आहर्ता रखने वाली महिलाओं को 1000 रुपये प्रति माह प्रोत्साहन के रूप में दिया जाएगा।

बद्री यादव ने वन भूमि क्षेत्र अतिक्रमण को लेकर जांच की मांग की

बरही : हरिला निवासी सह वन क्षेत्र समिति के अध्यक्ष बद्री यादव ने वन भूमि अतिक्रमण को लेकर लगातार आवाज उठाई है। उन्होंने बताया कि इस संबंध में उन्होंने कई बार स्थानीय वन पदाधिकारी को लिखित शिकायत किया है पर अब तक कोई ठोस पहल नही हुई है। उन्होंने कहा कि लगातार अतिक्रमण जारी है। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि कुछ भूमाफियाओं ने हरीला वन भूमि क्षेत्र को अतिक्रमित कर निजी खेत बना कर कृषि कर रहे है। वन भूमि क्षेत्र के कुछ हिस्सों पर सरकारी आवास बनाने का भी आरोप है। कहा कि विभाग को सूचना के बाद भी कारवाई नही किया है। इस संबंध में बद्री यादव ने दर्जनों ग्रामीणों का हस्ताक्षरयुक्त आवेदन डीएफओ हजारीबाग को देकर वन भूमि सुरक्षित करने की मांग किया है। मामले के संबध में वनपाल शिशिर कुमार ने बताया कि आवेदन के अनुसार जांच कर उचित कारवाई हेतु वरीय अधिकारियो को सूचित किया गया है। साथ ही उन्होंने बताया कि कई क्षेत्रों में ऐसे ही वन क्षेत्र को अतिक्रमण किया जा रहा है।

अभाविप ने विभावि में 'विद्यार्थी संवाद' कार्यक्रम का किया आयोजन

चौपारण : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद हजारीबाग नगर के द्वारा विनोबा भावे विश्वविद्यालय के एम.बी.ए सभागार में एक दिवसीय छात्र संवाद कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन राष्ट्रीय मंत्री राहुल राणा, राष्ट्रीय कार्यकारणी सदस्य नवलेश सिंह एम.बी.ए निदेशक अमिताभ सामंता, हिंदी विभाग के प्राध्यापक सुबोध सिंह शिवगित, प्रदेश सह मंत्री रीतेश यादव, जिला संयोजक बाबूलाल मेहता, नगर मंत्री रूद्र राज ने एक साथ दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय कार्यकारणी सदस्य नवलेश सिंह व संचालन नगर मंत्री रूद्र राज ने किया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय मंत्री धर्मशाला हिमाचल प्रदेश से श्री राहुल राणा का आगमन हुवा राणा ने विद्यार्थियों को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के 75 वर्षो के स्वर्णिम इतिहास के बारें में बताने के साथ भारतीय ज्ञान परंपरा से अवगत करवाया साथ ही छात्रों की समसामयिक विषयो को लेकर जिज्ञासाओं,शैक्षणिक, सामाजिक विषयों पर छात्र - छात्राओं से विस्तृत संवाद करते हुए उनकी समस्याओं को भी जाना। कार्यक्रम को एमबीए निदेशक अमिताभ सामंता, हिंदी विभाग के प्राध्यापक सुबोध सिंह शिवगीत,एमबीए के प्राध्यापक सरोज रंजन आदि ने भी संबोधित किया। अंत में जिला संयोजक बाबूलाल मेहता ने धन्यवाद ज्ञापन कर कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की।

बिरहोर समुदाय के लोगों ने विधायक अंबा प्रसाद के नेतृत्व में मुख्यमंत्री से की मुलाकात

चट्टी बारियातु कोयला परियोजना की मार झेल रहे हैं बिरहोर, कंपनी प्रबंधन पर कार्रवाई करें : अंबा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

केरेडारी : केरेडारी प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत एनटीपीसी की बारियातु कोयला खनन परियोजना के खनन क्षेत्र के पास निवास करने वाले आदिम जनजाति के बिरहोर परिवार के प्रतिनिधिमंडल ने स्थानीय विधायक अंबा प्रसाद के नेतृत्व में राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से उनके विधानसभा स्थित कार्यालय कक्ष में मुलाकात किया। इस दौरान आदिम जनजाति बिरहा समुदाय के लोगों ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को बताया कि एनटीपीसी चट्टी बारियातु कोयला खनन परियोजना के अंतर्गत कार्य कर रहे ऋत्विक कंपनी के द्वारा बिरहोर टोला के सामने हो रही हैवी ब्लास्टिंग एवं ट्रांसपोर्टिंग से आदिम जनजाति बिरहोर लोगों की स्थिति एवं सेहत काफी खराब हो गई है व आए दिन मौत का सामना करना पड़ रहा है। बिरहोर लोगों ने कहा कि लगभग तीन चार लोगों की मृत्यु पहले ही हो चुकी है दो-चार दिन पहले भी एक 10 वर्षीय बच्चे की मौत हो गई। इस संबंध में कंपनी प्रबंधन द्वारा सिर्फ आश्वासन दिया जाता है जबकि पुनर्वास एवं पुनर्स्थापन संबंधित किसी प्रकार का कार्य नहीं किया गया है। विधायक अंबा प्रसाद ने कहा कि चट्टी बारियातु कोयला परियोजना की मार झेल रहे हैं बिरहोर व? हातिम जनजाति के लोग, कंपनी प्रबंधन पर कार्रवाई की जाए। मौके पर सोमर बिरहोर,ममता देवी, सुंदर बिरहोर,रंगीला बिरहोर,सुमंती देवी,चरखी कुमारी सहित कई बिरहोर समुदाय के लोग मौजूद रहे।

कांग्रेस नेता विनोद कुशवाहा ने कटकमसांडी प्रखंड का किया दौरा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : झारखंड प्रदेश कांग्रेस के महासचिव विनोद कुशवाहा ने सदर विधानसभा के सदर प्रखंड और कटकमसांडी का लगातार तूफानी दौरा कर रहे हैं। इस दौरान विनोद कुशवाहा ने लोगों से झारखंड सरकार द्वारा झारखंड वासियों के हित के लिए चलाए जा रहे दर्जनों योजनाओं का लाभ लेने के लिए प्रेरित किया। अपने कार्यक्रम के दौरान उन्होंने लोगों को बताया कि झारखंड के हेमंत सोरेन के नेतृत्व में झामूमो कांग्रेस एवम अन्य घटक दलों की महागठबंधन सरकार के द्वारा दर्जनों जनकल्याणकारी योजना चलाए जा रहे हैं। जिसमे अबुआ आवास, 2 लाख तक कृषि कर्ज माफी, 200 यूनिट निःशुल्क बिजली, सोना सोबरण साड़ी धोती, 21 से 51 वर्ष तक के महिलाओं के प्रतिमाह 1000 महिला सम्मान योजना सहित अन्य योजना शामिल है आगे उन्होंने कहा कि यह सभी योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे इसीलिए मैं ग्रामीणों के साथ संवाद कर रहा हुं। कुशवाहा ने कहा कि मैं पार्टी का सिपाही हूं सरकार की बातें जन जन तक और जन समस्या को सरकार तक पहुंचाना मेरा फर्ज है। मौके पर अशोक कुशवाहा अजय राणा, विनय कुशवाहा, रविंद्र कुशवाहा, अजय प्रजापति समेत दर्जनों लोग उपस्थित थे।

मुखिया और पंचायत सेवक से किया जाएगा शो कौज : बीडीओ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चौपारण : चौपारण प्रखंड में सभी प्रकार की योजना को सही तरीके से धरातल पर उतर जा रहा है कि नहीं इसकी निरीक्षण बीडीओ सीमा कुमारी लगातार कर रही है। शिकायत के आलोक में अबुआ आवास का जांच आवंटन में गड़बड़ी के शिकायत के आलोक में बीडीओ ने निमार्णाधीन 7 अबुआ आवास का स्थलीय निरीक्षण किया। जिसमें 2 के लाभुक योग्य पाए गए। जबकि पांच लाभुक का गलत तरीके से आवंटन पाया गया। इस सम्बंध में बीडीओ ने कहा कि गलत तरीके से अबुआ आवास के आवंटन कहीं न कहीं पंचायत के मुखिया और पंचायत सेवक के मिलीभगत को दशार्ता है। दोनों से शो कौज किया जाएगा। वहीं सभी अवेदम लाभुकों से राशि की पूरी रिकवरी की जाएगी। प्रखण्ड के पाण्डेयबारा और बसरिया पंचायत के कई योजनाओं का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में पंचायत पाण्डेयबारा में पाया कि आंगनबाड़ी का नया भवन हैंड ओवर नहीं होने के कारण एक ही कमरे में आंगनबाड़ी संचालित था और नौनिहाल बच्चे भी भींगते पाए गए। जिसके बीडीओ ने संवेदक से बात कर एक सप्ताह के अंदर आंगनबाड़ी के नए भवन को हैंड ओवर करने का निर्देश दी। वहीं मुख्यमंत्री मइयां सम्मान योजना का फॉर्म वितरण की भी जानकारी सेविका से ली। जहां 98 फॉर्म का वितरण हो चुका था और कई महिलाएं लाइन में खड़ी थी। उसके बाद बीडीओ ने बसरिया के हेल्थ सेंटर का निरीक्षण किया। उसके बाद बसरिया आंगनबाड़ी केंद्र में मुख्यमंत्री मइयां सम्मान योजना के फॉर्म वितरण का जायजा लिया जहाँ सभी 100 आवेदन बंट चुका था और लाइन में खड़ी कई महिलाओं को आवेदन नहीं मिल पाया। बीडीओ ने सेविका से जिन्हें आवेदन नहीं मिल पाया है। उनका सूची तैयार कर डिमांड भेजने को कहा, उसके आधार पर फॉर्म उपलब्ध करवा दिया जाएगा।

हमारी संस्था का उद्देश्य गरीब, जरूरतमंद एवं युवाओं को रोजगार से है जोड़ना : संजय सिंह

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : हजारीबाग के जगदीशपुर गांव में श्री रामचरितमानस सेवा संस्थान के केंद्रीय अध्यक्ष संजय सिंह के द्वारा एक सेवा कैंप लगाकर महिलाओं व बुजुर्गों के बीच वस्त्र एवं रामचरितमानस पुस्तक का वितरण किया गया । सबसे पहले श्री रामचरितमानस सेवा संस्थान के अध्यक्ष संजय सिंह जगदीशपुर गांव पहुंच कर ग्रामवासियों के साथ गांव के मंदिर में विधिवत पूजा अर्चना की एवं उसके पश्चात सैंकड़ों की संख्या में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए संजय सिंह ने रामचरितमानस सेवा संस्थान के उद्देश्य को बताते हुए कहा कि हमारी संस्था शुरूआत से ही जनमानस से जुड़ी समस्याओं को निदान करने के लिए हमेशा से प्रयासरत है । हमारे संस्थान का उद्देश्य युवा, नौजवान लोगों को रोजगार से जोड़ना , पिछड़ी जगह पर पुस्तकालय खोलकर गरीब विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए पुस्तक उपलब्ध करवाना और गरीब के छोटे छोटे बच्चों के लिए टॉय बैंक खोलना, जरूरतमंदों के लिए मेडिकल की सुविधा, ब्लड बैंक की स्थापना, हर गांव में धार्मिक स्थलों की साफ सफाई के साथ-साथ उसका रंग रोगन, बिजली पानी की समुचित व्यवस्था उपलब्ध करवाना एवं जगह जगह पर मेडिकल कैंप लगाकर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाना है । इस दौरान जगदीशपुर गांव के लोगों में एक अलग उत्साह देखने को मिला, लोग इन्हें सुनने के लिए अत्यंत लालायित दिखे। वही इस दौरान सेवाएं पाकर वहां मौजूद महिलाओं, बुजुर्गों एवं बच्चों के चेहरे पर एक अलग खुशी देखने को मिल रही थी। गांव के मिथलेश सिंह ने श्री रामचरितमानस सेवा संस्थान के कार्यों की प्रशंसा की और इनके द्वारा किए जाने वाले हरेक काम की काफी सराहना की। महिलाएं एवं बुजुर्ग वस्त्र पाकर काफी खुश दिखे और उन्होंने संजय सिंह को अपना आशीर्वाद भी दिया । मौके पर उपस्थित कई बेरोजगार युवा लोगों ने श्री रामचरितमानस सेवा संस्थान के केंद्रीय अध्यक्ष संजय सिंह से मिलकर रोजगार संबंधी बातों को रखा और उन्हें अपना बायोडाटा भी सौंपा।

उप समिति गठन को लेकर रविवार को होगी बैठक

बरही : अखिल भारतीय कायस्थ महासभा बरही उप समिति का गठन किया जाना है। इस संबंध में आगमी रविवार को पूर्वाहन 11 बजे सूर्य मंदिर परिसर स्थित चित्रगुप्त मंदिर ने महासभा की बैठक आहूत की गई है।बैठक में महासभा के जिला समिति के पदाधिकारी गण उपस्थित रहेंगे। उक्त जानकारी अखिल भारतीय कायस्थ महासभा हजारीबाग जिला उपाध्यक्ष शैलेंद्र सिन्हा ने दिया। श्री सिन्हा ने बरही प्रखंड के सभी चित्रांश परिवार से उक्त बैठक में उपस्थित होने की अपील किया है। जिससे संगठन को मजबूती मिल सके। बरही में कायस्थ समाज के दो गुट के संबध में उन्होंने कहा कि बरही का चित्रांश एक है। यहां के चित्रांश समाज सभी कायस्थ महासभा का स्वागत करेगी।

फाइलेरिया रोधी दवाएं खाने के बाद मितली, आना चक्कर आना होते हैं शुभ संकेत : डॉ. बीरेन्द्र कुमार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : झारखण्ड को जल्दी ही फाइलेरिया मुक्त बनाने के लिए राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक स्तर पर प्रयास किये जा रहें हैं। यही कारण है कि राष्ट्रीय फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत चलाये जाने वाले मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अन्तर्विभागीय समन्वय के साथ- साथ सामुदायिक सहभागिता और मीडिया सहयोगियों का भी सहयोग लिया जा रहा है। इसी क्रम में शुक्रवार को सिविल सर्जन कांफ्रेंस हाल, सदर अस्पताल, हजारीबाग में चिकित्सा शिक्षा एवं परिवार कल्याण विभाग, झारखंड एवं ग्लोबल हेल्थ स्ट्रेटेजीज संस्था द्वारा अन्य सहयोगी संस्थाओं, विश्व स्वास्थ्य संगठन, पीरामल स्वास्थ्य, प्रोजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल के साथ समन्वय बनाते हुए मीडिया संवेदीकरण कार्यशाला का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता करते हुए झारखंड के राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, भी.बी.डी. डॉ. बीरेन्द्र कुमार सिंह ने बताया कि आगामी 10 अगस्त से राज्य के फाइलेरिया प्रभावित 9 जिलों दुमका, गोड्डा, जामताड़ा, हजारीबाग, चतरा, पलामू, लातेहार, पश्चिम सिंहभूम और सरायकेला- खरसावाँ में मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन कार्यक्रम की शुरूआत कीजायेगी। इसमें तीन दवा यानी डीईसी, अल्बेंडाजोल और आइवरमेक्टिन के साथ यह कार्यक्रम चलाया जायेगा। इस हेतु जिलों में 1 करोड़ 27 लाख जन समुदाय को बूथ और घर- घर जाकर दवा खिलाने का लक्ष्य रखा गया है तथा किसी भी विषम परिस्थितियों से निपटने हेतु चिकित्सक के नेतृत्व में रैपिड रेस्पान्स टीमों का भी गठन किया गया हैं। डॉ. सिंह ने कहा कि मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन कार्यक्रम में खिलाई जाने वाली फाइलेरिया रोधी दवायें पूरी तरह से सुरक्षित हैं। इस बात का विशेष ध्यान रखना है कि 2 साल से कम उम्र के बच्चों, गर्भवती महिलाओं और गंभीर रूप से बीमार लोगों को छोड़कर, सभी को फाइलेरिया रोधी दवाओं का सेवन स्वास्थ्य कर्मियों के सामने करना है। यह दवायें खाली पेट नहीं खानी हैं। कभी- कभी इन दवाओं को खाने के बाद मितली आना, चक्कर आना जैसे लक्षण पैदा होते हैं लेकिन इसका यह मतलब होता है कि उनके शरीर में फाइलेरिया के परजीवी हैं। हमें इसे शुभ संकेत की तरह लेना चाहिये, क्योंकि इससे यह मालूम हो गया कि दवा खाने के बाद शरीर में मौजूद फाइलेरिया के परजीवी मर रहें हैं। इसीलिए हम सभी को यह फाइलेरिया रोधी दवायें अवश्य खानी चाहिये। उन्होंने यह भी कहा कि हम सब फाइलेरिया मुक्त झारखण्ड के लिए प्रत्येक स्तर पर प्रयास कर रहें हैं। कार्यक्रम में उपस्थित जिले के सिविल सर्जन डॉ. एस. पी. सिंह ने बताया कि हजारीबाग, फाइलेरिया मुक्त झारखण्ड के लक्ष्य को पाने के लिए राज्य के दिशा- निदेर्शानुसार जिला स्तर से ब्लाक स्तर तक गाँव के अंतिम छोर की आबादी तक मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन कार्यक्रम को सफलता पूर्वक आयोजित कर रहा है।

संक्षिप्त खबरें

पाण्डेयबारा की दो दुकानों में चोरी, कैश सहित कैमरा भी ले भागे चोर

चौपारण : चौपारण थाना क्षेत्र के पाण्डेयबारा में महाराज होटल के समीप दो दुकानों में हुई चोरी। अज्ञात चोर रात्रि को शटर का ताला तोड़कर चोरी की घटना को दिया अंजाम। दोनो भुक्तभोगी ने चौपारण थाना में आवेदन देकर चोर को जल्द पकड़ने का गुहार लगाया। जिसमे आकांक्षा जनरल स्टोर के संचालक अभिषेक कुमार सिंह ने आवेदन देते हुए कहा कि रोजाना की तरह बुधवार रात्रि को करीब 10 बजे दुकान को बंद करके अपनी घर चपरीकला चला गया था और दूसरे दिन सुबह जब मैं अपनी दुकान खोलने गया तो देखा शटर का ताला टूटा हुआ है। दुकान के अंदर जाने पर देखा तो दुकान का सारा समान बिखरा पड़ा था और गल्ला पूरा गायब था। चोरों ने दुकान में कैश 80 हजार, आधा किलोग्राम चांदी का सिक्का एवं लाखों का सामान जैसे काजू, किशमिश, हॉर्लिक्स, सर्फ साबुन सहित कैश काउंटर चोर उखाड़ कर ले भागे। दुकान में लगा सी० सी० टीवी कैमरा को भी अज्ञात चोरों ने चोरी कर लिया। वही जय मां भद्रकाली ट्रेडिंग के संचालक अभिमन्यु सिंह ने कहा कि मैं भी रोजाना की तरह सुबह में जब अपनी दुकान खोलने गया तो देखा दुकान का शटर टूटा हुआ है और गल्ला खुला हुआ है जिसमे रखा 11,500 गायब है ।

दो गाड़ियों की टक्कर में ट्रक के उड़े परखच्चे, चालक व उपचालक की हुई मौत

चौपारण : चौपारण प्रखंड में मौत की घाटी से मशहूर दनुवा घाटी में मौत का सिलसिला लगातार जारी है। इस घाटी में अब तक लाखो लोगो की जान जा चुकी है। खून की पियासी दनुवा घाटी में दूर दराज के लोग अक्सर दुर्घटना का शिकार होकर अपना दम तोड देते हैं। ऐसी ही घटना शुक्रवार को दनुवा घाटी में घटी। जब यूपी से आ रहे ट्रक जिसकी संख्या यूपी 54 टी 7811 अपनी नियंत्रण खोकर दूसरी ट्रक से लड़ गई। जिससे ट्रक के आगे का भाग बुरी तरीके से क्षतिग्रस्त हो गया और चालक, उपचालक दबकर मौके पर ही मौत हो गया। खबर लिखे जाने तक दोनो मृत व्यक्ति की पहचान नहीं हो सकी थी।

संसद की प्राक्कलन समिति के लिए सांसद मनीष जायसवाल हुए नामित

हजारीबाग : भारतीय संसद की प्राक्कलन समिति (2024-25) के लिए हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल को सदस्य के रूप में नामित किया गया। इस समिति में कुल 30 सदस्य होते हैं जिसमें सभी को लोकसभा से नामित किया जाता है। सांसद मनीष जायसवाल ने कहा की मुझे लोकसभा क्षेत्र के इस महत्वपूर्ण समिति के लिए नामित किया गया इसके लिए अत्यंत गर्व की अनुभूति हो रही है। सांसद मनीष जायसवाल ने इसके लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला का आभार जताया और उन्हें धन्यवाद दिया । इधर सांसद मनीष जायसवाल को संसद की प्राक्कलन समिति के लिए सदस्य के रूप में नामित किए जाने पर हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र की जनता, एनडीए कार्यकर्ता और उनके शुभचिंतकों में खुशी की लहर हैं। क्षेत्र वासी बड़ी संख्या में अपने सांसद मनीष जायसवाल को विभिन्न माध्यमों से बधाई और शुभकामनाएं दे रहें हैं ।

पारा शिक्षकों के मामले को सांसद मनीष जायसवाल ने लोकसभा में उठाया

हजारीबाग : झारखंड की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के मौजूदा हालात और पारा शिक्षकों के मामले को हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल ने शुक्रवार की लोकसभा में बड़े ही बेबाकी से उठाया। उन्होंने कहा की झामुमो-कांग्रेस-राजद गठबंधन की झारखंड सरकार राज्य में शिक्षा को बर्बाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। सांसद मनीष जायसवाल ने अपनी बात बेबाकी से रखते हुए कहा की पहले पारा शिक्षकों को वोट लेने के लिए झूठे वादे करके ठगा गया, और अब जब वे अपनी हक व अधिकार की बात कर रहे हैं तो उन्हें लाठियां मारी जा रही है और उन पर सरकार आंसू गैस छोड़ रही है। सांसद मनीष जायसवाल ने यह भी बताया की सरकारी स्कूलों के नाम को उर्दू स्कूल किया जा रहा है और रविवार की जगह झारखंड के स्कूलों में छुट्टियां शुक्रवार को की जा रही है। यहां के स्कूलों के मुख्य द्वार पर चारमीनार का निर्माण कर दिया जा रहा है ।

तय मानकों का पालन नहीं करने वाले कोचिंग संस्थान नहीं कर सकेंगे संचालन : उपायुक्त

हजारीबाग : उपायुक्त नैंसी सहाय के निदेर्शानुसार हजारीबाग जिले के सभी प्रखंडों में संचालित विभिन्न शिक्षण कोचिंग संस्थानों में आवश्यक मानकों यथा अग्नि सुरक्षा, प्रवेश एवं निकास द्वार, वेंटिलेशन, बिजली की व्यवस्था की जांच के लिए उपायुक्त के द्वारा छह सदस्यीय जांच दल गठित की गई थी। गत दिन हुए निरीक्षण में जांच कमिटी द्वारा सौपें गए जांच रिपोर्ट में ज्यादातर कोचिंग संस्थानों में आवश्यक मानकों का अभाव पाया गया था, जिसपर उपायुक्त नैंसी सहाय ने निर्देश जारी करते हुए कहा है की वैसे सभी कोचिंग संस्थान जो तय मानकों को पूरा नहीं करते है वें कोचिंग का संचालन नहीं कर पाएंगे। उन्होंने कहा है कि जिला प्रशासन के द्वारा जारी निदेशी का उल्लंघन करने वाले कोचिंग संस्थानों के संचालकों पर कड़ी कारवाई की जायेगी। गौरतलब है कि गुरूवार को शहरी क्षेत्र के 12 कोचिंग संस्थानों तथा सभी प्रखंडों के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में उपरोक्त वर्णित बिंदुओ को लेकर जांच की गई थी,जिसपर ज्यादातर कोचिंग संस्थानो ने सुरक्षा मानकों को पूर्ण नहीं करने के मामले पाए गए थे।

बॉन सेकोर्स स्कूल मे लगाया निःशुल्क दंत चिकित्सा शिविर

हजारीबाग : हजारीबाग कॉलेज ऑफ डेंटल साइंसेस एंड होस्पिटल द्वारा ढेंगुरा मटुकद्वार स्थित बॉन सेकोर्स स्कूल में दिन शुक्रवार को बाल चिकित्सा और निवारक दंत चिकित्सा विभाग ने नि:शुल्क दंत चिकित्सा शिविर और एक स्कूल शिक्षा स्वास्थ्य कार्यक्रम का आयोजन किया। शिविर डेंटल कॉलेज के सचिव डॉ प्रवीण श्रीनिवास, प्राचार्य डॉ. के. श्रीकृष्ण एवं उप प्राचार्य डॉ. अंकुर भार्गव के मार्गदर्शन में लगाया गया। दंत चिकित्सा शिविर और एक स्कूल शिक्षा स्वास्थ्य कार्यक्रम का नेतृत्व एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. स्वाति सिंह ने किया। शिविर में 371 छात्रों की जांच की गई और चिकित्सकों ने छात्रों को मौखिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूक किया। मौके पर डेंटल कॉलेज के सचिव डॉ प्रवीण श्रीनिवास ने कहा कि शिविर में बुनियादी उपचार बिलकुल मुफ्त है।

हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची ● शनिवार ● 03.08.2024 ● वर्ष : 15 ● अंक : 15 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

एक नजर

गृह विभाग ने भारी बारिश के मद्देनजर राज्य के सभी डीसी को अलर्ट रहने का दिया निर्देश

रांची : झारखंड में हो रही भारी बारिश को देखते हुए गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग ने शुक्रवार को सभी डीसी को अलर्ट रहने का निर्देश दिया है। गृह विभाग के जरिये जारी पत्र में कहा गया है कि दो और तीन अगस्त को राज्य में भारी बारिश की संभावना है। मौसम विभाग ने इसके लिए अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग के अलर्ट को मद्देनजर रखते हुए जिलों में सुरक्षा के उपाए किए जाएं। दूसरी ओर, मौसम विभाग ने तीन अगस्त के लिए येलो अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग के अनुसार, शनिवार को पलामू, चतरा, लातेहार और लोहरदगा में भारी बारिश की संभावना है। आने वाले दो दिनों में वज्रपात की भी आशंका है। चार और पांच अगस्त को राज्य में हल्के दर्जे की बारिश की संभावना है। छह और सात अगस्त को राज्य में फिर से भारी बारिश की संभावना है। कोडरमा, गिरिडीह, बोकारो, रामगढ़, रांची, खूंटी और सिमडेगा जिलों के लिए येलो अलर्ट जारी किया गया है। इसके अनुसार, इन जिलों में कुछ स्थानों पर बहुत भारी बारिश होने की आशंका है। देवघर और जामताड़ा जिले में कुछ स्थानों पर भारी बारिश होने की संभावना है।

दिल्ली में स्वतंत्रता दिवस समारोह के लिए खूंटी के छात्र का चयन

खूंटी : बिरसा कॉलेज, खूंटी के एनएसएस का स्वयंसेवक नवीन किशोर का चयन वर्ष 2024 के स्वतंत्रता दिवस के मुख्य समारोह, नई दिल्ली के लिए हुआ है। इस संबंध में भारत सरकार से बिरसा कॉलेज को पत्र प्राप्त हुआ है, जिसमे इस महाविद्यालय के विद्यार्थी के चयन की सूचना दी गई है। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ जी किड़ो नवीन किशोर के चयन पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा कि नई दिल्ली के स्वतंत्रता दिवस के मुख्य समारोह में शामिल होना गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि ऐतिहासिक लालकिला के मुख्य समारोह में तिरंगे की सलामी देना बहुत बड़ी बात है।

मानसून सत्र के अंतिम दिन झारखंड विस से ध्वनिमत से चार विधेयक पारित

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र के अंतिम दिन शुक्रवार को चार विधेयक ध्वनिमत से पारित हो गए। इन विधेयकों में झारखंड अग्निशमन सेवा विधेयक 2024, झारखंड कारा एवं सुधारात्मक सेवाएं विधेयक 2024, झारखंड खनिज धारित भूमि उपकर विधेयक 2024 और झारखंड निजी विश्वविद्यालय विधेयक 2024 शामिल हैं। सबसे पहले झारखंड अग्निशमन सेवा विधेयक 2024 को प्रभारी मंत्री बैजनाथ राम ने सदन में रखा। इसपर लंबोदर महतो ने विधेयक को प्रवर समिति में भेजने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि एक दिन पहले ही विधेयक की कॉपी मिली है। इसका अध्ययन नहीं कर पाए हैं। राज्य में अग्निशमन की भयावह स्थिति है। अनुमंडल तक ही दमकल रहता है। प्रखंड तक पहुंचते-पहुंचते सब कुछ जलकर खाक हो जाता है। इसे और अधिक जनोपयोगी बनाना चाहिए था। इसपर प्रभारी मंत्री ने कहा कि वर्तमान और भविष्य की चुनौती को देखते हुए यह विधेयक लाया गया है।

जेल प्रणाली का बोझ कम होगा : बैजनाथ राम

प्रभारी मंत्री बैजनाथ राम ने सदन में कारा एवं सुधारात्मक सेवाएं विधेयक सदन में रखा। इस पर विधायक लंबोदर महतो और विनोद सिंह ने प्रवर समिति को भेजने का आग्रह किया। लंबोदर महतो ने कहा कि इस विधेयक के जरिए कारा में सुधार के लिए किन प्रावधानों को किया गया है। इसे बताना चाहिए। ओपेन कारा का प्रावधान है या नहीं। इसकी भी जानकारी दी जानी चाहिए। विनोद सिंह ने कहा कि कारा में और भी सुधार की जरूरत है। कैदी बीमार भी न हो तो वे बड़े-बड़े हॉस्पिटल की सेवाओं में रहते हैं। विराधीन कैदियों के परिजनों की मुलाकात काफी मुश्किल हो जाती है। कारा में सुसाइड की घटनाएं बढ़ी हैं। राज्य के जेलों में दो तिहाई कैदी विचाराधीन हैं। इसपर प्रभारी मंत्री ने कहा कि इस विधेयक से जेल प्रणाली का बोझ कम होगा। कैदियों के स्वास्थ्य और सुरक्षा का प्रावधान किया गया है। रिहाई के बाद कैदियों को समाज में प्रवेश करने में सहायता की जाएगी। अंतराष्ट्रीय मानवाधिकार के मानकों का पालन किया गया है।

राज्यहित में महत्वपूर्ण है झारखंड खनिज धारित भूमि उपकर विधेयक

प्रभारी मंत्री मिथिलेश ठाकुर ने सदन में झारखंड खनिज धारित भूमि उपकर विधेयक पेश किया। इस पर विधायक लंबोदर महतो ने कहा कि बिना वित्तीय संलेख के वित्त विधेयक का क्या औचित्य है। हड़बड़ी में लाया गया विधेयक है। विनोद सिंह ने कहा कि इस पर जो कर लगाया गया है वह भार आधारित है। यह मूल्य आधारित होना चाहिए। सरयू राय ने कहा कि इस विधेयक से जो आय होगी, उस राशि का खर्च पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण नियंत्रण में भी खर्च किए जाने का प्रावधान होना चाहिए। इस पर प्रभारी मंत्री मिथिलेश ठाकुर ने कहा कि उनमें अन्य उद्देश्यों के लिए राशि खर्च का प्रावधान किया गया है।

झारखंड निजी विश्वविद्यालय विधेयक से शिक्षा की गुणवत्ता में होगा सुधार : चम्पाई सोरेन

शिक्षा मंत्री चम्पाई सोरेन ने सदन में झारखंड निजी विश्वविद्यालय विधेयक 2024 रखा। इस पर लंबोदर महतो ने कहा कि यह विधेयक में यूजीसी गाइडलाइन के विपरित प्रावधान किया गया है। जांच समिति को पूरी तरह से ऑटोनॉमस बना दिया गया है। उच्च शिक्षा के लिए यह जहर की पुड़िया है। 10 करोड़ की सिक्योरिटी मनी का प्रावधान किया जाना राज्यहित में नहीं है। निजी विश्वविद्यालय में सरकार की कोई भूमिका नहीं होती है। सारी चीज प्राइवेट यूनिवर्सिटी ही करता है, तो सरकार प्राइवेट यूनिवर्सिटी में कुलपति की नियुक्ति क्यों करेगी। इस पर शिक्षा मंत्री ने कहा कि विधेयक में सर्च कमेटी के द्वारा कुलपति नियुक्ति का प्रावधान किया गया है। विनोद सिंह ने कहा कि पांच एकड़ में विश्वविद्यालय तो नहीं, बल्कि कोचिंग संस्थान ही चल सकता है। निजी विश्वद्यालयों की मॉनिटिरिंग नहीं होती है। शिक्षा मंत्री ने कहा कि सोच-समझ कर विधेयक लाया गया है। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होगा।

अग्निशमन सेवा के दायरे में आएंगी ये सारी चीजें

अग्निशमन सेवा विधेयक 2024 सदन में पारित हो गया। राज्य सरकार की अधिसूचना के बाद इसे झारखंड अग्निशमन सेवा अधिनियम 2024 कहा जायेगा, जो कि पूरे राज्य में प्रभावी होगा। इसके तहत अग्नि सुरक्षा पदाधिकारी की नियुक्ति होगी। इनके जिम्मे यह 100 से अधिक लोगों के बैठने की क्षमता वाले सिनेमाघर, 10 हजार वर्गमीटर से अधिक क्षेत्रफल में बने वाणिज्यिक कॉम्प्लेक्स व एक से अधिक सिनेमा को प्रदर्शित करनेवाले भवनों की सुरक्षा होगी। इसके अलावा 50 से अधिक कमरे वाला होटल, भूमिगत व्यापारिक कॉम्प्लेक्स, जिला केंद्र, उप केंद्रीय व्यावसायिक जिले जिसमें एक हजार वर्ग मीटर या उससे अधिक क्षेत्रफल में बना तहखाना शामिल होगा। वहीं, 50 मीटर से ऊंची बहुमंजिली गैर आवासीय इमारतें, तेल व प्राकृतिक गैस प्रतिष्ठान, 20 हजार से अधिक क्षमता वाला खुला स्टेडियम व पांच हजार से अधिक क्षमता वाला इंडोर स्टेडियम की सुरक्षा। 100 से अधिक बेड वाले अस्पताल व नर्सिंग होम के अलावा सार्वजनिक, अर्द्धसरकारी भवनों, रेलवे स्टेशन, बस टर्मिनल, हवाई अड्डा, मनोरंजक पार्क सहित अन्य भवन भी अग्निशमन सेवा के दायरे में आयेगा।

विधेयक में उल्लेखित बातें-

- झारखंड में अग्निशमन प्रशिक्षण अकादमी प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना होगी।
- अग्निशन सेवा के तहत भवनों व परिसरों को सील करने की शक्ति होगी ।
- अग्निशमन बचाव कार्य में जानबूझ कर बाधा डालने या हस्तक्षेप करने वाले को अधिकतम तीन माह की सजा या पांच हजार रुपये तक जुमार्ने के दंड का प्रावधान होगा।
- आग लगने के बारे में जानबूझकर गलत प्रतिवेदन देने पर भी दंड का प्रावधान होगा।
- किसी भवन या परिसर का निरीक्षण करने के बाद आग से सुरक्षा के उपायों का अपर्याप्त पाये जाने पर विभाग नामित पदाधिकारी नोटिस जारी करेगा।
- कोई व्यक्ति जिसकी संपत्ति स्वयं या उसके एजेंट के जानबूझकर किये गये कार्यों या उपेक्षा के कारण आग के हवाले हो जाये, तो इस मामले में भी दंड का प्रावधान किया गया है।

विधानसभा में सीएम हेमन्त का दावा- बीजेपी के लोग भी करते हैं उनकी सरकार पर भरोसा

रांची : हेमन्त सोरेन ने शुक्रवार को विधानसभा के मॉनसून सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि बीजेपी के नेता भी उनकी सरकार पर भरोसा करते हैं। वहीं, सीएम ने विधानसभा में बीजेपी विधायकों पर जमकर हमला बोला। हेमंत ने कहा कि ये वो लोग हैं, जो बड़े कारोबारियों का करोड़ों का कर्ज माफ कर देते हैं, लेकिन इनसे किसानों का कर्ज माफ नहीं किया जाता है। लेकिन हमारी सरकार ने किसानों के 50000 हजार के कर्ज माफी का फैसला किया। इसके साथ किसानों के लिए अनेक योजनाओं को धरातल पर उतारा है। हमारी सरकार इस बात पर मंथन कर रही है कि किसानों को और किस तरह से राहत पहुंचाई जा सकती है। कहा कर्ज माफी का दायरा और बढाने की कोशिश करेंगे। कहा कि शहीद अग्निवीर जवानों के परिजन को झारखंड सरकार मुआवजा और नौकरी देगी। बीजेपी विधायकों ने सवाल उठाया है कि झारखंड के युवकों को बेरोजगारी नहीं मिल रहा है। इस पर सीएम ने कहा कि इनको पता नहीं हैं। ये लोग गांव और प्रखंडों में जाकर देख लें कि बेरोजगारी भत्ता दिया जा रहा है या नहीं। नौकरियां देने के मुद्दे पर कहा कि हमने सरकारी और गैरसरकारी मिलाकर लगभड़ डेढ लाख नौकरियां दी हैं। इस काम को और आगे बढाया जा रहा था तो मुझे जेल में डाल दिया गया। सीएम ने आग कहा, अगर मैं 5 महीने जेल में नहीं रहता तो दावे के साथ कह सकता हूं कि 5 लाख नौकरियां युवकों को दे चुका होता। हेमंत ने दावा किया कि उनकी सरकार पर खुद बीजेपी के संगठन के लोग भरोसा करते हैं। उन्होंने बिना किसी का नाम लिये कहा, लेकिन बीजेपी के विधायक अपने स्वार्थ के लिए सदन को चलने नहीं देना चाहते। सरकार को बाधा पहुंचा रहे हैं। सहायक पुलिसकर्मियों के मुद्दे पर कहा कि बीजेपी के पूर्व सरकार ने इनकी बहाली अनुचित तरीके से की। लेकिन इनको सबसे अधिक एक्सटेंशन देने का काम हमारी सरकार ने किया।

सीएम ने मंईयां सम्मान योजना के प्रचार वाहन को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने शुक्रवार को झारखंड विधानसभा परिसर से 'झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना (जेएमएमएसवाई)' के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए 10 एलईडी वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इन सभी एलईडी वाहनों के माध्यम से रांची, रामगढ़ एवं खूंटी जिला के विभिन्न क्षेत्रों में झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना का प्रचार-प्रसार किया जाएगा। झारखंड विधानसभा परिसर से वाहन रवाना होने के पश्चात राज्य के सभी जिलों के उपायुक्तों ने अपने-अपने जिलों में 'झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना' के बृहद प्रचार-प्रसार के लिए आज एलईडी वाहनों हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस प्रकार आज से पूरे राज्य में 'झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना' का व्यापक प्रचार-प्रसार की शुरूआत हुई है।

इस अवसर पर झारखंड विधान सभा अध्यक्ष रबीन्द्रनाथ महतो, मंत्री, महिला, बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग बेबी देवी, विधायक सविता महतो, विधायक कल्पना सोरेन, विधायक अम्बा प्रसाद, विधायक शिल्पी नेहा तिर्की, सचिव मनोज कुमार सहित अन्य वरीय पदाधिकारीगण तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री से साकेत कुमार ने की मुलाकात

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से शुक्रवार को झारखंड विधानसभा स्थित मुख्यमंत्री कक्ष में आईजी, सीआरपीएफ, झारखंड सेक्टर साकेत कुमार सिंह ने मुलाकात की। मुख्यमंत्री से यह उनकी शिष्टाचार भेंट थी।

राज्यपाल ने केंद्रीय मंत्री से की मुलाकात

रांची : राज्यपाल संतोष गंगवार ने केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल से शुक्रवार को दिल्ली स्थित निवास पर शिष्टाचार मुलाकात की। इस दौरान केंद्रीय मंत्री के जरिये स्वलिखित पुस्तक 'एक सफर हमसफर के साथ' की एक प्रति उन्होंने राज्यपाल को दिया। इसके लिए राज्यपाल ने आभार जताया।

नीट-यूजी परीक्षा के लिए मानक संचालन प्रक्रिया बनाये केंद्र सरकार व एटीए : सुप्रीम कोर्ट

- पीठ ने 23 जुलाई के अपने फैसले में नीट परीक्षा दोबारा कराने की गुहार ठुकरा दी थी।
- समिति को एक मजबूत परीक्षा प्रक्रिया के लिए सात चरणों को शामिल करना चाहिए।

एजेंसी

नयी दिल्ली : उच्चतम न्यायालय ने स्नातक स्तर की मेडिकल और संबंधित अन्य पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए आयोजित होने वाली राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट-यूजी) के प्रश्नपत्र बनाने से लेकर परीक्षा केंद्र पर सुरक्षित पहुंचाने, सुरक्षित रखने, संबंधित परीक्षार्थियों को समय पर देने और कड़ी जांच सुनिश्चित करने के लिए शुक्रवार को केंद्र सरकार और राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) को एक मानक संचालन प्रक्रिया बनाने का निर्देश दिया।

मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ तथा न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने पांच मई 2024 को आयोजित नीट-यूजी में गड़बड़ी समेत अन्य अनियमितताओं के खिलाफ दायर याचिकाओं पर विस्तृत फैसला सुनाते हुए यह निर्देश दिया। पीठ ने 23 जुलाई के अपने फैसले में नीट परीक्षा दोबारा कराने की गुहार ठुकरा दी थी। पीठ ने अपने विस्तृत फैसले में कहा कि उपलब्ध तथ्यों से पता चलता कि परीक्षा में कोई प्रणालीगत उल्लंघन नहीं हुआ कि परीक्षा रद्द कर दोबारा कराने का आदेश दिया जाए। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने नीट-यूजी परीक्षा आयोजित करने के लिए निष्पक्ष, पूर्णतः सुरक्षित, पारदर्शी और मजबूत प्रणाली सुनिश्चित करने का निर्देश दिया।

पीठ ने धोखाधड़ी को रोकने के लिए विभिन्न चरणों में पहचान जांच बढ़ाने और तकनीकी नवाचारों का भी आदेश दिया। शीर्ष अदालत ने नीट-यूजी 2024 के प्रश्न पत्र सार्वजनिक होने और अन्य अनियमितताओं की जांच के लिए केंद्र सरकार द्वारा गठित के राधाकृष्णन विशेषज्ञ समिति के दायरे को भी बढ़ाते हुए कहा कि समिति को एक मजबूत परीक्षा प्रक्रिया के लिए सात चरणों को शामिल करना चाहिए। सात चरणों में मूल्यांकन समिति, मानक संचालन प्रक्रिया, परीक्षा केंद्र आवंटित करने की प्रक्रिया की समीक्षा, बढ़ी हुई पहचान जांच के लिए प्रक्रिया, परीक्षा केंद्रों की सीसीटीवी निगरानी, पेपर में छेड़छाड़ न हो, यह सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षित लॉजिस्टिक प्रदाता और एक मजबूत शिकायत निवारण तंत्र की सिफारिश करना शामिल है। पीठ ने यह भी कहा कि विशेषज्ञ समिति को परीक्षा प्रणाली की कमियों को दूर करना चाहिए। शीर्ष अदालत ने प्रश्नपत्र केंद्रों तक पहुंचाने के लिए खुले ई-रिक्शा के बजाय वास्तविक समय के लॉक वाले बंद वाहनों का उपयोग करने की व्यवहार्यता पर विचार करने का भी निर्देश दिया। पीठ ने कहा कि यदि किसी छात्र को फैसले में हल किए गए मुद्दों से संबंधित किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत शिकायत है तो वह संबंधित उच्च न्यायालयों में जाने के लिए स्वतंत्र होगा।

पीठ ने इस बात पर भी जोर दिया कि वह इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि प्रश्न पत्र सार्वजनिक होने की घटनाएं केवल पटना और हजारीबाग तक ही सीमित थीं। प्रश्नपत्रों का कोई व्यवस्थित तौर पर दुरुपयोग नहीं हुआ है। उच्चतम न्यायालय ने 23 जुलाई को नीट 2024 दोबारा परीक्षा आयोजित करने का आदेश देने की याचिका को खारिज कर दिया था। उसने तब कहा था कि रिकॉर्ड पर उपलब्ध तथ्य यह संकेत नहीं देते है कि प्रश्न पत्र सार्वजनिक होने की घटनाओं के कारण पूरी परीक्षा की पवित्रता प्रभावित हुई थी।

मोदी ने राज्यपालों से केंद्र-राज्य के बीच महत्वपूर्ण सेतु बनने का किया आग्रह

एजेंसी

नयी दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राज्यपालों से शुक्रवार को आग्रह किया कि वे केंद्र और राज्य के बीच प्रभावी सेतु की भूमिका निभाएं तथा लोगों और सामाजिक संगठनों के साथ इस तरह से संवाद करें, जिससे वंचित लोगों को भी इसमें शामिल किया जा सके।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की अध्यक्षता में आयोजित राज्यपालों के दो दिवसीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि राज्यपाल का पद एक महत्वपूर्ण संस्था है, संविधान के दायरे के भीतर लोगों के कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, विशेष रूप से आदिवासी क्षेत्रों के संदर्भ में। उद्घाटन सत्र को राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भी संबोधित किया। राष्ट्रपति भवन द्वारा जारी एक विज्ञप्ति में कहा गया है, अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने राज्यपालों से आग्रह किया कि वे केंद्र और राज्य के बीच एक प्रभावी सेतु की भूमिका निभाएं तथा लोगों और सामाजिक संगठनों के साथ इस तरह से संवाद करें कि वंचित लोगों को भी इसमें शामिल किया जा सके। विज्ञप्ति के अनुसार, शनिवार को समाप्त होने वाले इस सम्मेलन में उन विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जाएगी, जो न केवल केंद्र-राज्य संबंधों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, बल्कि आम लोगों के लिए कल्याणकारी योजनाओं को बढ़ावा देने में भी सहायक होते हैं। मुर्मू ने अपने संबोधन में कहा कि लोकतंत्र के सुचारू संचालन के लिए यह महत्वपूर्ण है कि विभिन्न केंद्रीय एजेंसियां सभी राज्यों में बेहतर समन्वय के साथ काम करें।

उन्होंने राज्यपालों को इस संबंध में विचार करने की सलाह दी कि वे अपने-अपने राज्यों के संवैधानिक प्रमुख के रूप में इस समन्वय को कैसे बढ़ावा दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन के एजेंडे में ऐसे मुद्दे शामिल हैं, जो राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। राष्ट्रपति ने विश्वास व्यक्त किया कि सभी राज्यपाल जनता की सेवा और कल्याण में योगदान देते रहेंगे। उन्होंने कहा कि आपराधिक न्याय से संबंधित तीन नये कानूनों के लागू होने से देश में न्याय व्यवस्था का एक नया युग शुरू हुआ है।

एक नजर

बारिश और गैस रिसाव से विजिविलिटी हुई कम, सड़क पर देखना हुआ मुश्किल

धनबाद : लगातार हो रही बारिश ने धनबाद जिले का जन जीवन अस्त-व्यस्त कर दिया है। बारिश के कारण सबसे अधिक दिक्कतें कोलियरी इलाकों में है। यहां की बस्तियों में धुंध छाया हुआ है और सड़कें पूरी तरह से धुंधली हो गई हैं। सामने 50 मीटर की दूरी पर भी कुछ दिखाई नहीं दे रहा है। यह हाल खास कर बीसीसीएल के उन कोलियरी इलाकों का है, जहां अग्नि परियोजनाएं हैं।
गोधर काली मंदिर से मोड़ तक सड़क पर छाया धुंध
बैंक मोड़ से केंदुआ जाने वाली धनबाद-बोकारो मुख्य सड़क पर गोधर काली मंदिर से लेकर मोड़ तक सड़क पर धुंध जमी हुई है। नतीजतन यहां गाड़ियों को अपनी हेडलाइन ऑन कर पार होना पड़ रहा है। इस सड़क के महज 100 मीटर की दूरी पर ही बीसीसीएल की एक खुली खदान है, जो अग्नि प्रभावित है। बारिश के कारण यहां से काफी धुआं निकल रहा है, जो सड़क पर आकर जमा हो गया। इतना ही नहीं इस गैस रिसाव से निकल रही दुर्गंध भी बर्दास्त के बाहर है।

चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के प्रतिनिधि मंडल ने भारी उद्योग एवं इस्पात मंत्री से की मुलाकात

बोकारो: चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज का एक प्रतिनिधि मंडल धनबाद सांसद श्री ढुल्लू महतो के नेतृत्व में आज दिल्ली में केंद्रीय भारी उद्योग एवं इस्पात मंत्री श्री एचडी कुमार स्वामी से उनके कार्यालय में मिला। चेंबर की सप्लायर उप समिति के संयोजक असीम गोराई ने इस्पात मंत्री का ध्यान आकृष्ट कराते हुए कहा कि बोकारो इस्पात संयंत्र की नीतियों के कारण बियाडा औद्योगिक क्षेत्र को समुचित कायार्देश नहीं मिल रहे हैं। असीम ने मंत्री जी को बताया कि पूर्व में एल-1 की दर पर स्थानीय उद्योग को 75प्रतिशत कायार्देश मिल जाता था लेकिन अब केवल 25प्रतिशत तक ही कायार्देश दिए जा रहे हैं। इसके अलावा बोकारो हवाई अड्डे को शीघ्र चालू करने, बोकारो जनरल अस्पताल में रियायती दर पर उद्यमी व्यवसाईयों का इलाज, बोकारो इस्पात संयंत्र के क्वाटर लीज अथवा भाड़े पर उद्यमी व्यवसाईयों को आवंटित करने का आग्रह माननीय मंत्री महोदय से किया। धनबाद सांसद ढुल्लू महतो ने भी बोकारो औद्योगिक क्षेत्र अवस्थित उद्योगों को प्राथमिकता एवं संरक्षण देने का आग्रह इस्पात मंत्री से किया। धनबाद सांसद ने माननीय मंत्री एचडी कुमार स्वामी को बोकारो इस्पात संयंत्र आने के लिए भी आमंत्रित किया जिसे मंत्री जी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया और कहा कि वे जल्द ही बोकारो आएंगे।

लगातार हो रही बारिश से जलमग्न हुआ चास

बोकारो: गुरुवार शाम से बारिश की फुहार शुरू हुई। शुक्रवार सुबह से ही बारिश ने तेजी पकड़ी। लगातार बारिश से बोकारो का जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया। चास नगर निगम के वार्ड 14 का तो बुरा हाल हो गया। पानी निकासी को लेकर वर्षों से संघर्षरत इस क्षेत्र के लोगों की मुश्किलें बढ़ गई। घर से निकलते ही पैर डूबने वाला माहौल गली की पहचान बन गई। नाली का गंदा पानी और बारिश की फुहार सड़क पर मिलकर साथ बहती रही। रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर जगह-जगह पानी-पानी- लगातार हो रही बारिश ने जहां लोगों के लिए रास्ते भर परेशानी खड़ी कर दी है। वहीं, गंतव्य स्थान तक पहुंचने के लिए बोकारो रेलवे स्टेशन पर पहुंचने वाले यात्रियों को स्टेशन का प्लेटफार्म भी राहत देने में नाकामयाब रहा।

भारी वर्षा के वावजूद कामगारों ने प्रबंधन की मनमानी के खिलाफ किया प्रदर्शन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : इस्पात मजदूर मोर्चा (सीटू) का बी.एस.एल. कैन्टीन के छंटनी ग्रस्त मजदूरों की कमिटी की ओर से बोकारो स्टील प्रबंधन की मनमानी के खिलाफ महात्मा गांधी गोलम्बर सेक्टर 4 के पास धरना कार्यक्रम किया गया । भारी वर्षा के वावजूद कार्यक्रम में मजदूरों ने भाग लिया। इस अवसर पर युनियन के संयुक्त महामंत्री बी.डी.प्रसाद ने कहा कि वर्ष 1978 में जब ये कैन्टीन मजदूर अपनी मांगों के लिए शान्ति पूर्ण आन्दोलन कर रहे थे,128 कैंटीन मजदूरों की छंटनी बोकारो स्टील प्रबंधन ने कर दिया था। वर्ष 2009 में इंडस्ट्रियल ट्रीब्युनल रॉची इन मजदूरों के पक्ष में फैसला देते हुए बोकारो स्टील प्रबंधन को आदेश दिया था कि इन डिसमिसड कैन्टीन मजदूरों को फुल बैक वेज के साथ 29 जूलाई 1979 से बोकारो स्टील प्लांट में स्थाई मजदूर के रूप में बहाल किया जाय। प्रबंधन, फैसला के खिलाफ माननीय उच्च न्यायालय झारखंड में याचिका दायर कर दिया। माननीय उच्च न्यायालय झारखंड ने प्रबंधन को कहा कि आपकी याचिका तभी सुनी जायगी जब इंडस्ट्रियल डिस्पुट एक्ट 1947 के अनुसार धारा 17बी के तहत उन सभी मजदूरों को मिलने वाली मासिक मजदूरी प्रति माह तब तक भुगतान करना होगा जबतक उपरी न्यायालय में मुकदमा लम्बित रहेगा। बी.डी.प्रसाद ने बताया कि याचिका अभी भी माननीय उच्च न्यायालय झारखंड में लम्बित है लेकिन 60 साल उम्र पुरा करने के बहाने मजदूरों को प्रति माह 6000/- रूपया दी जाने वाली राशि को प्रबंधन मनमानी तरीके से भुगतान करना बंद कर कर दिया है। प्रबंधन का यह कदम कानून का उल्लंघन है। क्योंकि मजदूरों को 6000/- रू प्रति माह भुगतान की जाने वाली राशि इंडस्ट्रियल डिस्पुट एक्ट 1947 की धारा 17बी के तहत की जा रही है और याचिका अभी माननीय उच्च न्यायालय झारखंड में लम्बित है। आज धरना के माध्यम से युनियन की ओर से निदेशक प्रभारी, बोकारो स्टील प्लांट को पत्र लिखकर मांग की गई है कि इंडस्ट्रियल डिस्पुट एक्ट 1947 की धारा 17बी के तहत प्रति माह 6000/- रू की भुगतान छंटनी ग्रस्त कैन्टीन मजदूरों का बन्द नहीं की जाय और कानून की रक्षा की जाय । छंटनी ग्रस्त कैन्टीन मजदूरों और उनके परिवार को भूखमरी से बचाया जाय। धरना कार्यक्रम की अध्यक्षता शंकर पोद्दार ने किया। धरना में आर.बी.सिन्हा, परमानंद मंडल, अशोक गुप्ता, अशोक सिंह, विजय कुमार, शेशनरायन, आदित्य गोराईं, गणेश राम, ब्रजनाथ महतो ,गोपाल रजक, ननकी सहनी आदि ने भाग लिया।

अधिवक्ता गोपाल कृष्ण की हत्या की उच्च स्तरीय जॉच होनी चाहिए : गिरि

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : रांची सिविल कोर्ट के अधिवक्ता गोपाल कृष्ण उर्फ गोपी बाबू की हत्या से पूरे झारखंड के अधिवक्ता मर्माहत है। वकील की हत्या से जिले के अधिवक्ताओं में काफी आक्रोश है. अपने गुस्से का इजहार करते हुए बोकारो सिविल कोर्ट के अधिवक्ताओं ने एक मिनट का मौन रख कर श्रद्धांजलि दी। इंडियन एसोसिएशन ऑफ लॉयर्स के नेशनल कौंसिल मेंबर अधिवक्ता रणजीत गिरि ने अधिवक्ताओं के संग हो रही अपराधिक घटनाओं पर चिंता जाहिर की. उन्होंने रांची सिविल कोर्ट के अधिवक्ता गोपाल कृष्ण के हत्यारों की अविलंब गिरफ्तारी की मांग की और इस घटना के उच्च स्तरीय जॉच की मांग की। ज्ञात हो कि आज से शनिवार तक रांची सिविल कोर्ट के सभी अधिवक्ता न्यायिक कार्य का बहिष्कार करते हुए न्यायिक कार्य से दूर है। अधिवक्ताओं ने एक स्वर से मांग की यदि अधिवक्ता के हत्यारे को दो दिनों के अंदर नहीं पकड़ा गया तो पूरे राज्य के अधिवक्ता न्यायीक कार्य का बहिष्कार करेंगे। श्रद्धांजलि देने वालो में अधिवक्ता रंजन कुमार मिश्रा, अतुल कुमार, निखिल कुमार डे, सुभाषचंद्र नायक, रितेश जयसवाल, विकास कुमार, दीपिका सिंह, वंशिका सहाय, मुनमुन कुमारी, संजीत कुमार सिंह,सोमनाथ शेखर, राज श्री, संजीव ओझा, बिनोद कुमार सिंह, दिनेश प्रसाद शर्मा,मो. हसनैन आलम, शंकर दे, संजय कुमार प्रसाद, फटिक चंद्र सिंह, रंजन कुमार मिश्रा, कमल कुमार सिन्हा, रीना कुमारी, दीप्ति सिंह,सुकमती हेसा, बबिता कुमारी, प्रीति श्रीवास्तव, कमल कुमार सिन्हा, राकेश ओझा, गोविंद नारायण सिंह, मिथलेश कुमार, अशोक कुमार यादव समेत सैकड़ों अधिवक्ता मौजूद थे।

सेवानिवृत्त गृहस्वामी को कब्जे में लेकर चोरी को दिया अंजाम

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कतरास (धनबाद): तेतुलमारी थाना क्षेत्र के अंतर्गत पी एस टी रोड में बीती रात्रि अज्ञात अपराधियो ने ताला तोड़कर घर मे प्रवेश की और कुंती देवी व नतिनी अनुष्का को हथियार के बल पर कब्जे में लेकर लगभग दो से ढाई घंटे तक घटना को अंजाम दिया। घटना में लगभग 10- 11 लाख के समान ले जाने की बात भुगतभोगी ने बताया है। घटना के संबंध में पीड़ित मुनी महतो ने बताया कि हमारे तेतुलमारी चंदौर पहाड़ी रोड स्थित कुंती भवन में घटना को अंजाम दिया। बीते रात्रि अज्ञात लुटेरो ने हथियार के बल पर गृहस्वामी मुनी महतो व कुंती देवी ने बताया कि 1 लाख नगद , व लगभग 9/10 लाख रुपये मूल्य के सोने के चैन,हार, कान की बाली,पायल,जेवर ,कीमती कपड़े व अलमारी व बक्सा तोड़कर अन्य सामान लेकर चलते बने, भुगतभोगी मनी महतो ने कहा कि मेरी जीवन भर की जमा पूंजी लुटरों ने लेकर चलते बना, देर रात्रि सूचना पाकर तेतुलमारी थाना प्रभारी लव कुमार चौधरी दल बल के साथ पहुचे व सुबह में पुलिस अधिकारी ने पुनः मिलकर घटना का जायजा लिया। मनी को अपराधियो ने कुछ स्प्रे का प्रयोग किया था जो बेहोसी हालत में सोते ही रह गया,व कुंती देवी को अपराधियो ने कब्जा में लेकर पूरी घटना को अंजाम दिया था। छोटी बच्ची अनुष्का ने बताया कि चोर लोग मुझे कब्जे में लेकर कहा कि कहा कहा पैसा रखा हुआ है बताओ नही तो गोली से उड़ा देगे। दो दिन पूर्व भी तेतुलमारी सुभाष चौक के रिमा ज्वेलर्स में भी हजारों की चोरी हुई थी। चोरी की अंजाम थाना क्षेत्र से लगभग 400 मीटर अंदर की है।

मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना प्रचार रथ को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : महिला आत्मसम्मान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के तहत 21 से 50 वर्ष की महिलाओं को रोजमर्रा की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए प्रतिमाह एक हजार रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी। अधिक से अधिक लाभुकों को योजना का लाभ प्रदान करने के लिए शुक्रवार को जिला जनसंपर्क कार्यालय द्वारा तैयार एलईडी प्रचार रथ को अपर समाहर्ता विनोद कुमार, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी श्रीमती अनीता कुजूर, निदेशक सामाजिक सुरक्षा श्री नियाज अहमद, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी सुनिल कुमार सिंह, एनडीसी दीपक दुबे, डीएलएओ राम नारायण खलको ने कलेक्ट्रेट से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। प्रचार रथ ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों का भ्रमण करेगा। योजना से लाभुकों को जोड़ने के लिए शनिवार, 3 अगस्त से 10 अगस्त तक पंचायत स्तरीय शिविरों का आयोजन होना है। लाभुकों को आवेदन जमा करने के लिए पंचायतों में लगने वाले शिविर में आना होगा। आवेदनों को पोर्टल में इंट्री करने के लिए वीएलई मौजूद रहेंगे। झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना महिला आत्मसम्मान को बढ़ावा देने के लिए सरकार का एक कारगर कदम है। इसमें 21 से 50 वर्ष की महिलाओं को रोजमर्रा की जरूरत को ध्यान में रखते हुए एक हजार रुपए प्रतिमाह की आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी। प्रत्येक माह की 15 तारीख तक सरकार उनके एकल लिंक्ड बैंक खाते में राशि क्रेडिट करेगी। लाभुकों के लिए पात्रता को सरल रखा गया है। आवेदिका झारखण्ड की निवासी होनी चाहिए। उनकी आयु 21 वर्ष से अधिक एवं 50 वर्ष से कम होनी चाहिए।

लगातार बारिश से टूटा तालाब का किनारा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : बोकारो में शुक्रवार की सुबह से शुरू हुई बारिश थमने का नाम नहीं ले रही है। ऐसे में आम जनमानस की परेशानी बढ़ गई है। जहां-तहां जल-जमाव का नजारा है। वहीं, बालीडीह थाना क्षेत्र के माराफारी पुनर्वास पंचायत स्थित पांडेय टोला और केवट-साव टोला के बीच स्थित तालाब की मेड़ ने शुक्रवार दूसरे पर दम तोड़ दिया। इसके साथ ही तालाब का पानी तेज धारा के साथ खेत की ओर बहने लगा। तालाब का पानी खेत होकर बियाडा क्षेत्र स्थित भारत पेट्रोलियम कॉपोरेशन लिमिटेड की बाउंड्री वॉल तक जा पहुंचा। हालांकि इससे कोई हताहत की सूचना नहीं है।

सैंकड़ों लोगों के लिए वरदान था यह तालाब-

उक्त तालाब के टूटने से सैंकड़ों ग्रामीणों को परेशानी का सामना करना पड़ेगा। खासकर वैसे लोग जो पूर्ण रूप से इस तालाब पर निर्भर है। हालांकि पंचायत के वार्ड सदस्य ओम नाथ ओझा उर्फ मुन्ना ओझा ने कहा कि तालाब की साफ-सफाई का काम चल रहा था। इसी बीच बारिश होने लगी और तालाब टूट गया। जल्द ही तालाब को अच्छी तरह साफ-सफाई कर उपयोग लायक बनाने के लिए प्रयास जारी हैं।

चोरी के पिकअप वाहन के साथ पुलिस ने चार को किया गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : बालीडीह थाना पुलिस ने 19 जुलाई को कुमीर्डीह से चोरी गई पिकअप वाहन को अंततः बरामद कर, चार को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की. पुलिस ने इसकी जानकारी शुक्रवार को बालीडीह थाना में एक प्रेस कांफ्रेंस कर दिया. गिरफ्तार सभी आरोपी बालीडीह थाना क्षेत्र के कुमीर्डीह का ही निवासी है। इनमें से तीन का पूर्व में भी आपराधिक इतिहास रहा है। प्रेस कांफ्रेंस के दौरान पुलिस ने बताया कि 19 जुलाई की रात बालीडीह थाना क्षेत्र के कुमीर्डीह निवासी ब्रजेश चौरसिया का पिक अप वाहन रजि० न0-खल10अछ-8278 को घर के बाहर से अज्ञात अपराधीयों द्वारा चोरी कर लिया गया था। आवेदक ब्रजेश चौरसिया के थाना में दिए गए आवेदन के अधार पर बालीडीह थाना कांड सं0-202/24 दर्ज कर, अनुसंधान प्रारम्भ किया गया था। घटना की गंभिरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक बोकारो के द्वारा मामले का त्वरित उद्देभेदन, अपराधियो की गिरफ्तारी, चोरी गए पिकअप वाहन की बरामदगी एवं गुणवता पूर्ण अनुसंधान हेतु पुलिस उपाधीक्षक मुख्यालय के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया था। टीम के द्वारा कड़ी मेहनत करते हुए मानवीय आसूचना के आधार पर इस कांड का त्वरीत उद्देभदन करते हुए चार अपराधियों को गिरफ्तार किया। वहीं, इनके निशानदेही पर चोरी गए पिक अप वाहन को आरा (बिहार) से बरामद किया गया। गिरफ्तार तीन अपराधियो के विरूद्ध अपराधिक इतिहास दर्ज है।
गिरफ्तार व्यक्ति का नाम एवं विवरण गोपाल कुमार साह उर्फ कोयला उम्र करीब 21 वर्ष, अजय कुमार गुप्ता 26 वर्ष, संतोष कुमार यादव 27 वर्ष तथा अंकित सिंह 20 वर्ष, चारों बालीडीह थाना क्षेत्र स्थित कुमीर्डीह का निवासी है। इसके साथ ही पुलिस ने चोरी गए पिक अप वाहन रजि० न0-खल10अछ-8278 तथा घटना में प्रयुक्त दो मोबाईल फोन भी जब्त किया गया। छापेमारी दल में शामिल पुलिस पदाधिकार एवं कर्मियो की सूची- पुलिस निरीक्षक सह बालीडीह थाना प्रभारी नवीन कुमार सिंह, पुलिस अवर निरीक्षक जितेन्द्र कुमार यादव, पुअनि विरमणी कुमार, पुअनि संदीप कुमार, पुअनि शशिकांत ठाकुर, पुअनि अभिषेक रंजन, पुअनि अजय कुमार राय, सहायक अवर निरीक्षक नवीन कुमार, आरक्षी अमीत कुमार सिंह, आरक्षी राजेश पासवान तथा आरक्षी मरियानुस जोजो सभी बालीडीह थाना के शामिल थे।

संक्षिप्त खबरें

यूजी कटने के विरोध में संयुक्त मोर्चा ने कोलियरी में की ताला बंदी

तेतुलमारी : सिजुआ क्षेत्र तेतुलमारी कोलियरी कार्यालय के पी एस टी 2 नंबर खदान के कर्मियों का अंडर ग्राउंड काटे जाने के यू जी के टैग लगा है टैग हटाने के विरोध किया।टैग हटने के बाद आगे की कार्यवाई के लिये प्रबंधन ने तत्कालीन आदेश को स्थगित करने का आश्वाशन दिया। प्रबंधन ने कहा कि जल्द ही क्षेत्रीय कार्यालय में महाप्रबंधक से समक्ष क्षेत्रीय सलाहकार समिति के सदस्य के साथ बैठक में ठोस निर्णय लेने की बात कही। क्षेत्रीय प्रबंधन की ओर से क्षेत्रीय कार्मिक प्रबंधक चंदन श्रीवास्तव, असैनिक अभियंता कुंदन कुमार,के के सिंह,तेतुलमारी कोलियरी के परियोजना पदाधिकारी पंकज कुमार,कोलियरी प्रबंधक संतोष चौधरी,तारा सिंह व यूनियन प्रतिनिधि की और से आर सी एम यू के वरीय नेता रामप्रीत प्रसाद,रवि चौबे, नागेंद्र वर्मा,विजय यादव,रमेश सिंह,गोपाल सिंह,लक्ष्मण पासवान,मो शाहजादा, मृत्युंजय चटर्जी,अभिनव सिंह,मनोज साव, पंचू सिंह,सदेश चौहान,संजीव यादव,महेश साव, सहित अन्य लोग मौजूद थे।

भारत छोड़कर भागने की तैयारी में था साइबर ठग, पुलिस ने जाल बिछाकर धर दबोचा

धनबाद : आरपीएफ ने धनबाद स्टेशन से एक साइबर ठग को पकड़ा है। पकड़ा गया युवक एनाइस्लामपुर झरिया निवासी नियाज अंसारी का बेटा समीर अंसारी है। उसे शक्तिपुंज एक्सप्रेस पकड़कर हावड़ा जाना था। हावड़ा से फ्लाइट लेकर चेन्नई और वहां से वह कोलंबो भागने की फिराक में था। इसी बीच उसे पकड़ लिया गया। समीर अंसारी के खाते से हुए करोड़ों के ट्रांजेक्शन समीर अंसारी के खाते से करोड़ों का ट्रांजेक्शन हुआ है। हाल में ही बेकारबांध के रहने वाले एक व्यक्ति के खाते से भी 49 लाख रुपये की ठगी की गयी थी। यह राशि भी समीर के खाते में आयी थी। बुधवार की देर रात साइबर पुलिस उसे अपने साथ ले गयी है। उसके खिलाफ रांची साइबर थाना में 25 जुलाई को कांड संख्या 179/24 दर्ज है। उसपर धारा 318(4), 319(2), 336(3), 338, 340(2), 61 बीएनएस तथा धारा 66(बी), 66(सी), 66(1) आइटी एक्ट दर्ज है। आरपीएफ ने बिछाया था जाल रांची साइबर सेल की डीएसपी नेहा वाला ने आरपीएफ के प्रभारी निरीक्षक पंकज कुमार को सूचना दी कि मो समीर अंसारी साइबर अपराधी है। वह शक्तिपूंज या शताब्दी एक्सप्रेस से धनबाद से हावड़ा जाने वाला है। उन्होंने उसकी तस्वीर भी भेजी। इसके बाद प्रभारी निरीक्षक के नेतृत्व में रेसुब पोस्ट धनबाद के अधिकारी व जवानों ने सादे लिबास में धनबाद स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या सात व आठ की घेराबंदी कर चेकिंग शुरू की। इसी दौरान आपीएफ को रांची से समीर का लोकेशन दिया गया, जो धनबाद स्टेशन के आसपास दिख रहा था। शक्तिपूंज एक्सप्रेस के धनबाद स्टेशन पर आने पर कालका छोर ब्रिज के पास फोटो से उसकी पहचान की गयी. उसके बाद उसे पकड़ लिया गया।

शहीद शक्ति नाथ महतो की 76वीं जयंती मनायी गयी

धनबाद: शुक्रवार को झारखंड के वीर सपुत क्रांतिदूत शहीद शक्ति नाथ महतो का 76वां जयन्ती शहीद शक्ति नाथ महतो चौक तेतुलमारी में धुमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम उनकी पत्नी सुची देवी एवं पुत्री अंजना देवी ने दुध एवं गंगा जल से उनके स्मारक को नहला कर पुजा पाठ कर फुल माला उनके चरणो में अर्पित कर श्रंधाजलि दी।तत्पश्चात इपटा के कलाकारों द्वारा श्रंधाजलि गीतों की प्रस्तुति दी गई।कार्यक्रम में मुख्य रूप से बाघमारा के पुलिस अनुमंडल पदाधिकारी आनन्द ज्योति मिंज ने श्रंधाजलि अर्पित कर सभा को सम्बोधित करतें हुए शहीद शक्ति नाथ महतो के जीवन पर प्रकाश डालतें हुये कहा कि महज 29 वर्ष की आयु में ही उन्होंने गुंडों ,माफिया और सुदखोर महाजनों से लडाई लड़ी तथा गरीब ,किसान ,मजदुर ,छात्र नवजवानों ,शोषित व पीड़ितों के लिए काम किया। जो हमेशा झारखंड के इतिहास में याद किया जायेगा। शहीद शक्ति नाथ महतो का जीवन संघर्ष पूर्ण रहा। आगे उन्होने कहा कि आज की युवा पीढ़ी को उनके बताये हुये रास्ते एवं विचारों पर चलने की जरुरत हैं।तभी हम बेहतर झारखंड का निर्माण कर सकते हैं।उनके अधूरे सपने को पूर्ण करना ही सच्ची श्रंधाजलि होगी। कार्यक्रम में जेबीकेएसएस के केन्द्रिय अध्यक्ष जयराम महतो, झारखंड मुक्ति मोर्चा के जिलाअध्यक्ष लखी सोरेन ,जिला सचिव मननु आलम ,राष्ट्रीय जनता दल के बाघमारा प्रखंड अध्यक्ष रोहित यादव ,मासस के केन्द्रिय महासचिव हलधर महतो ,पार्षद छोटु सिंह , मुकेश सिंह ,एपीएम रामानुज प्रसाद ,जदयू झारखंड प्रदेश महासचिव दीपनारायण सिंह ,नकुल महतो ,जिला परिषद सदस्य मो. इसराफील ,पूर्व जिला सचिव झामुमो पवन महतो ,रतिलाल टुडू ,पंकज सिंह ,सबाना परवीन ,सुनिल चांदना ,मुखिया राजेंद्र प्रसाद महतो ,संतोष महतो ,सुशील सिंह , बबलू महतो, संजय कुमार सिंह, काला चन्द साव ,करम चन्द महतो सहित स्मारक समिति के सभी सदस्यगण मौजूद थे। धन्यवाद ज्ञापन मनोज कुमार महतो ने किया।कार्यक्रम समाप्ति पर स्कूल के बच्चों के बीच कॉपी कलम तथा महिलाओं को अंग वस्त्र वितरण किया गया।

राज्य जूडो प्रतियोगिता के लिए बोकारो की टीम घोषित

बोकारो: झारखंड जूडो संघ के तत्वाधान में दो दिवसीय कैडेट और जूनियर झारखंड राज्य जूडो प्रतियोगिता का आयोजन रांची जूडो संघ के द्वारा आईबीएन पब्लिक स्कूल धुर्वा, रांची में दिनांक 3 और 4 अगस्त को किया जा रहा है बोकारो जूडो संघ के सचिव राजीव सिंह ने बताया कि बोकारो जूडो संघ के द्वारा 52 सदस्य टीम घोषित की गई है चयनित खिलाड़ियों बालक वर्ग में ऋतुराज,शशांक शौर्य,संदीप कुमार साहू करण कुमार, राजवीर सिंह,जयंत कुमार, शुभम कुमार,आयुष कुमार, अयान अजहर,स्वास्तिक कुमार दिव्यांशु,हर्षवर्धन सिंह, आदित्य,आरव भारद्वाज, दीपेश कुमार,संदीप कुमार, आयुष प्रथम, प्रिंस कुमार,सती नाथ चक्रवर्ती एवं बालिका वर्ग में रिमझिम कुमारी सुरभि,चित्र, अनुप्रिया,आस्था पांडे,सिमरन कुमारी,अन शांडिल्य,तरन्नुम प्रवीण स्नेहा कुमारी,दीपशिखा, खुशी उपाध्याय शामिल है।

एक नजर

रांची में दिनदहाड़े चाकू मारकर अधिवक्ता की हत्या

रांची : राजधानी के सुखदेवनगर थाना क्षेत्र अंतर्गत मधुकम में शुक्रवार को सिविल कोर्ट के अधिवक्ता की दिनदहाड़े चाकू मारकर हत्या कर दी गई। बताया गया है कि अधिवक्ता गोपाल कृष्ण सुखदेव नगर थाना क्षेत्र स्थित मधुकम आवास के पास खड़े थे। इसी दौरान एक अपराधी ने उनपर चाकू से हमला कर दिया। हमले में बुरी तरह घायल गोपाल कृष्ण को अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। दिनदहाड़े अधिवक्ता की हत्या से वकीलों में काफी आक्रोश है। डीएसपी प्रकाश सोए ने बताया कि पूरे मामले की जांच-पड़ताल की जा रही है। हत्या के कारणों का अब तक पता नहीं चल पाया है। शव को पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया गया है।

नेहा शिल्पी तिर्की ने सदन में भुईंहर मुंडा जाति का मुद्दा उठाया

रांची : झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र के अंतिम दिन शुक्रवार को कांग्रेस विधायक नेहा शिल्पी तिर्की ने सदन में भुईंहर मुंडा जाति का मुद्दा उठाया, जो अपनी जाति की पहचान को कायम रखने के लिए 24 साल से संघर्ष कर रहे हैं। विधायक ने कहा कि झारखंड राज्य के अनेक अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित जाति जैसे- भुईहर मुंडा, खूंटकटी मुआईण्डा, कम्पाट मुण्डा, चीक बड़ाईक, भईया (पाईक), लोहरा, लोहार, चीक बड़ाईक, स्वांशी, घटवार, घटवाल आदि समुदायों के खतियान में लिपिकीय त्रुटि के कारण उनकी मूल अनुसूचित जाति या जनजाति के स्थान पर अन्य असंगत जाति या तथ्य दर्ज हो गये हैं, जिसके कारण उक्त जातियों के संबंधित लोगों को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है और वे सभी अपने संवैधानिक अधिकारों से वंचित है। इसपर मंत्री दीपक बिरुवा ने कहा कि टीआरआई की रिपोर्ट के आलोक में सरकार निर्णय लेती है, हम टीआरआई से रिपोर्ट मांगेंगे। नेहा शिल्पी ने विधानसभा की कमेटी बनाने की मांग की, जिसका कई विधायकों ने समर्थन किया।
टीआरआई सही से अपना काम ठीक से नहीं किया, इसलिए विधानसभा की कमेटी बने।
उन्होंने कहा कि 2025 के नेशनल जनगणना के पहले यह काम हो नहीं हुआ तो आदिवासी की संख्या फिर घटेगी। दीपक बिरुवा ने कहा कि टीआरआई की रिपोर्ट को ही नेशनल एसटी आयोग मानती है। इसलिए टीआरआई के माध्यम से ही ये हो सकता है। इसके लिए विधानसभा की कमेटी की कोई जरूरत नहीं है।

क्राइम कैपिटल बन गई है रांची : संजय सेठ

रांची : शहर के सांसद सह रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने रांची में सिविल कोर्ट के अधिवक्ता गोपाल कृष्ण की हत्या और कांके में दिनदहाड़े एक युवक को गोली मारने की घटना की कड़ी शब्दों में निंदा की। सेठ ने शुक्रवार को कहा कि आखिर रांची की पुलिस कर क्या रही है। रोज दिनदहाड़े अपराध हो रहे हैं। प्रशासन मौन है। सरकार को कोई मतलब नहीं। आखिर इसकी जिम्मेदारी कौन लेगा। सेठ ने कहा कि क्या सरकार, प्रशासन और अपराधियों का गठजोड़ चल रहा है। राजधानी रांची क्राइम सिटी का अड्डा बन चुका है। इन अपराधियों के सामने सरकार और प्रशासन पंगु बनी हुई है। रांची में कोई भी वर्ग सुरक्षित नहीं रांची में आज ना तो पुलिस अधिकारी सुरक्षित है, ना ही अधिवक्ता, ना ही व्यापारी वर्ग और ना ही कारोबारी। सभी थाना और अधिकारी बालू के अवैध धंधे में लिप्त हैं। पैसे की उगाई का खेल चल रहा है। जनता मर रही है और बाबू लोग मस्त हैं। उन्होंने कहा कि सरकार और प्रशासन धैर्य की परीक्षा ना ले।

खूंटी बाइपास सड़क पर राजनीति न कर भूमि अधिग्रहण कराएं जनप्रतिनिधि : अर्जुन मुंडा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : पूर्व सांसद और पूर्व केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने कहा है कि खूंटी बाईपास रोड को लेकर कांग्रेस राजनीति कर रही है। जन समस्याओं को लेकर राजनीति करने या जनता को बरगलाने की बजाय जन प्रतिनिधियों को यह चिंता करनी चाहिए कि जनहित के काम को कैसे आगे बढ़ाया जाए। मुंडा ने कहा कि हास्यास्पद बात यह है कि खूंटी बाई पास रोड का शिलान्यास इसी वर्ष 10 मार्च को खूंटी में हुआ। केंद्रीय सड़क, परिवहन एवं राष्ट्रीय राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने 2500 करोड़ की लागत से दो सड़कों का शिलान्यास किया था, जिसमें स्थानीय जन प्रतिनिधिगण भी शामिल थे। खूंटी के कचहरी मैदान में आयोजित शिलान्यास समारोह में मीडिया और खूंटी के हर व्यक्ति की जुबान पर इस बहुप्रतीक्षित रोड का स्मरण में रहा लेकिन कांग्रेस वालों को शायद यह पता नहीं था। इसलिए अब संसद सत्र में यह मामला उठा रहे हैं और खूंटी में बाईपास रोड बनाने की मांग कर रहे हैं। अर्जुन मुंडा ने कहा कि रांची से खूंटी तक चार लेन एनएच का निर्माण, जिसमें खूंटी बाईपास भी शामिल है, के लिए 15 मार्च को 1907.31 करोड़ रुपये की लागत की स्वीकृति दी गई थी। यह सड़क तुपुदाना से कुंदी बरटोली तक 31.31 किलोमीटर लंबी फोर लेन है। इसके लिए निविदा 13 मार्च को आमंत्रित की गई थी। परियोजना के रिक्वेस्ट फॉर प्रोपोजल को अंतिम रूप दिया जा रहा है और इसे शीघ्र ही अपलोड किया जाएगा। इस परियोजना में 156.6 हेक्टेयर निजी भूमि और 15 हेक्टेयर वन भूमि का अधिग्रहण शामिल है। ड्राफ्ट 3ए की तैयारी के अंतिम चरण में है। भूमि अधिग्रहण और वन अधिग्रहण की प्रगति को ध्यान में रखते हुए डाक की नियत तिथि तय की जाएगी ताकि 90 फीसदी लंबाई में साइट को निर्धारित तिथि पर संवेदक को सौंपा जा सके। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा कि झारखंड में कांग्रेस और झामुमो गठबंधन की सरकार है। राज्य सरकार भूमि अधिग्रहण करने में शिथिलता बरत रही है। इसलिए कांग्रेस जनप्रतिनिधि को चाहिए कि इस महत्वाकांक्षी सड़क योजना के लिए राज्य सरकार से भूमि अधिग्रहण का काम शुरू कराएं। केंद्र सरकार इस योजना के लिए पूरी राशि दे रही है।

राजधानी हुई पानी पानी, जान जोखिम में डाल पार कर रहे पुल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : राजधानी रांची समेत अन्य जिलों में बारिश को लेकर मौसम विभाग ने अलर्ट जारी किया है। गुरुवार से हो रही बारिश ने पूरे शहर को अस्त-व्यस्त कर दिया है। लगातार हो रही बारिश से शहर के कई निचले इलाकों में पानी भर गया। कई सड़कों पर जलजमाव हो गया। वहीं, कई घरों व दुकानों में भी नालियों का गंदा पानी घुस गया। इससे लोगों को काफी परेशानी हो रही है। लोग देर शाम तक घरों से पानी निकालने में लगे रहे।वहीं हरमू नदी उफान पर है।करम चौक के पास यह पुल के ऊपर से बह रही है। वहीं जान जोखिम में डालकर लोग पुल को पार कर रहे है। इसके अलावा शहर कई इलाकों में बारिश के कारण जल जमाव की स्थिति हो गई है। दुकानों और घर में लोगों के पानी भर जाने से परेशानी हो गई है। कई लोगों के सामान भी बर्बाद हो गए है। बरियातू में जोड़ा तालाब वैसे तो सालों पर पानी रहता है। लेकिन बारिश में तालाब लबालब हो गया है। वहीं रोड से पानी एक तालाब से ओवर फ्लो होकर दूसरे तालाब में जा रहा है। हालांकि लोग इसे लेकर अलर्ट है।

विधानसभा का मानसून सत्र खत्म कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड विधानसभा का मानसून सत्र आनिश्चितकाल के लिए स्थगित हो गया है। यह पूरा सत्र काफी हंगामेदार रहा। सत्र के आखिरी दिन झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र में 18 विधायकों के निलंबन से मुख्य विपक्षी पार्टी भाजपा बेहद नाराज है। सत्र के आखिरी दिन शुक्रवार (2 अगस्त) को भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) ने विधानसभा के अध्यक्ष को उनके पद से हटाने का नोटिस दे दिया। भारतीय जनता पार्टी के विधायकों ने मानसून सत्र के आखिरी दिन विधानसभा के स्पीकर रवींद्र नाथ महतो को पद से हटाने का नोटिस दिया। विधानसभा के सचिव को लिखे पत्र में भाजपा विधायकों ने आरोप लगाया है कि वर्तमान अध्यक्ष अपने पद के संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने में असफल रहे हैं। वह झारखंड विधानसभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन के अनुरूप सदन का संचालन नहीं कर रहे हैं। इसलिए उन्हें पद से हटाया जाए।

हाई कोर्ट से कैश कांड में अधिवक्ता राजीव कुमार को मिली अग्रिम जमानत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड हाई कोर्ट में कोलकाता कैश कांड में आरोपित हाई कोर्ट के अधिवक्ता राजीव कुमार की दाखिल अग्रिम जमानत याचिका पर शुक्रवार को सुनवाई हुई। मामले में कोर्ट ने राजीव कुमार को राहत देते हुए अग्रिम जमानत प्रदान कर दी। पूर्व में सीबीआई की विशेष अदालत ने राजीव कुमार की अग्रिम जमानत याचिका खारिज कर दी थी। कोलकाता कैश कांड में राजीव कुमार एवं अमित कुमार अग्रवाल के खिलाफ सीबीआई ने प्राथमिकी दर्ज कराई थी। मामले में आरोप पत्र दाखिल हो चुका है। कैश कांड में सीबीआई की दिल्ली शाखा ने तीन फरवरी को कोलकाता कारोबारी अमित अग्रवाल और राजीव कुमार के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की थी, जिस पर अदालत ने संज्ञान लेते हुए आरोपित को समन जारी किया था। राजीव कुमार को कोलकाता में 50 लाख रुपये नकदी के साथ गिरफ्तार किया गया था। इसमें अमित अग्रवाल की संलिप्तता थी। एक साजिश के तहत अमित अग्रवाल ने राजीव कुमार को रांची से कोलकाता बुलाया और उन्हें गिरफ्तार करवा दिया था। सीबीआई की दिल्ली शाखा ने अमित अग्रवाल और राजीव कुमार के खिलाफ 20 जनवरी, 2023 को प्राथमिकी दर्ज की थी।

विधानसभा चुनाव से संबंधित तैयारियों के क्रम में सीईओ ने प्रवर्तन एजेंसियों के साथ की बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने राज्य की 21 इन्फोर्समेंट एजेंसियों के साथ आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों को लेकर बैठक की। इस दौरान मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा सभी पदाधिकारियों को आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों के संबंध में विशेष रूप से निर्देश दिए गए। कुमार ने कहा कि आगामी विधानसभा निर्वाचन की तैयारियों की समीक्षा के लिए भारत निर्वाचन आयोग का झारखण्ड दौरा भी संभावित है। इस हेतु सभी इन्फोर्समेंट एजेंसी के राज्य स्तरीय अधिकारी अपने विभाग से संबंधी सभी निर्वाचन विषयों की सुव्यवस्थित तैयारी करते हुए रिपोर्ट तैयार कर लें। उन्होंने कहा कि बीते लोकसभा चुनाव के आंकड़ों का विश्लेषण करते हुए अद्यतन परिस्थितियों के अनुरूप विधानसभा चुनाव की तैयारियों का ससमय खाका तैयार कर लें। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने राज्य एवं जिला स्तरीय प्रवर्तन एजेंसियों के नोडल पदाधिकारियों की फोन बुक तैयार करने का भी निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि सभी प्रवर्तन एजेंसियां आपसी सामंजस्य स्थापित कर कार्य करें। अवैध शराब और प्रतिबंधित नशीले पदार्थों के रोकथाम पर लोकसभा चुनाव में बेहतर कार्य हुए थे, आगामी विधानसभा चुनाव में भी अवैध शराब, हथियार अथवा पैसे के आवागमन पर नजर रखते हुए इनपर पूरी तरह से रोक लगाने के कार्य हेतु अभी से कार्ययोजना तैयार कर लें। उन्होंने कहा कि यातायात, हवाई अड्डा, वन विभाग, बैंकों से भी निर्वाचन के क्रम में सहयोग की अपेक्षा है। सभी के सम्मिलित प्रयास से ही भयमुक्त एवं स्वच्छ निर्वाचन का लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि सभी चेकपोस्ट को एक्टिव करते हुए व सीमावर्ती राज्यों के पदाधिकारियों से समन्वय स्थापित कर आवश्यक कार्य योजना तैयार कर लें।

विधानसभा अध्यक्ष को पद से हटाने के लिए भाजपा विधायकों ने प्रभारी सचिव को लिखा पत्र, लगाए कई आरोप

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : भाजपा विधायकों ने झारखंड विधानसभा अध्यक्ष रबींद्र नाथ महतो को पद से हटाने के लिए प्रभारी सचिव को पत्र लिखा है। विधायकों ने प्रभारी सचिव से झारखंड विधानसभा की प्रक्रिया व कार्य संचालन के नियम 158 (1) के तहत उन पर कार्रवाई की मांग की है। भाजपा के विधायकों ने पत्र के माध्यम से स्पीकर पर कई आरोप लगाए हैं। वहीं, सरयू राय का गैर सरकारी संकल्प वोटिंग के माध्यम से खारिज हुआ। प्रभारी सचिव को प्रेषित पत्र पर बाबूलाल मरांडी समेत भाजपा के 22 विधायकों ने हस्ताक्षर किया है। पत्र में कह गया है कि झारखंड विधानसभा के वर्तमान अध्यक्ष रबिन्द्रनाथ महतो ने पद का विवेकपूर्ण उपयोग नहीं करते हुए पार्टी के 18 विधायकों को हेमंत सरकार के इशारे पर निलंबित किया। इन विधायकों में अनंत कुमार ओझा, रणधीर कुमार सिंह, नारायण दास, अमित कुमार मंडल, डॉ. नीरा यादव, किशुन कुमार दास, केदार हाजरा, बिरंची नारायण, अपर्णा सेनगुप्ता, राज सिन्हा, कोचे मुंडा, भानु प्रताप शाही, समरी लाल, सीपी सिंह, नवीन जयसवाल, डॉ. कुशवाहा शशि भूषण मेहता, आलोक कुमार चौरसिया एवं पुष्पा देवी हैं। भाजपा ने कहा है कि झारखंड विधानसभा के फुटेज से स्पष्ट है कि नेता प्रतिपक्ष अमरं कुमार बाउरी ने 31 जुलाई को सदन शुरू होते ही युवाओं एवं संविदाकर्मियों के विषय पर चर्चा करवाने एवं मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से जवाब दिलवाने का आग्रह किया था और यह बता भी दिया था कि यदि रात को भी रुकना पड़े तो भी हम तैयार हैं लेकिन बिना मुख्यमंत्री का जवाब सुने हमलोग नहीं जाएंगे। स्पीकर ने अपने पद का निष्पक्ष रूप से उपयोग नहीं किया और मुख्यमंत्री के हित की रक्षा करते हुए सरकार के इशारे पर झामुमो के एक विधायक सुदिव्य कुमार के द्वारा लाये गए निलंबन प्रस्ताव पर भाजपा विधायकों को निलंबित किया है जबकि अमूमन इस प्रकार का प्रस्ताव माननीय संसदीय कार्य मंत्री सदन में लाते हैं तथा उसके पूर्व में कार्य मंत्रणा समिति की बैठक होती है, जो नहीं हुआ। पत्र में लिखा है कि झारखंड विधान सभा के वर्तमान अध्यक्ष ने अपने पद का सही रूप से निर्वहन नहीं करते हुए करीब पांच वर्ष अध्यक्ष की भूमिका में कम झामुमो के कार्यकर्ता के रूप में ज्यादा कार्य किया। इसका प्रमाण है विधानसभा अध्यक्ष रहते 2024 के संपन्न लोकसभा चुनाव में दुमका लोकसभा क्षेत्र में झामुमो का झंडा लगाकर झामुमो प्रत्याशी नलिन सोरेन के पक्ष में चुनाव प्रचार किया।

संक्षिप्त खबरें

दीपाटोली के घरों में घुसा पानी, एनडीआरएफ की टीम ने लोगों को बाहर निकाला

रांची : रांची के दीपाटोली इलाके के कई घरों में आज बारिश का पानी घुस गया। इस कारण लोग घरों के अंदर फंस गये। इनको बाहर निकालने और राहत कार्य के लिए एनडीआरएफ की टीम को बुलाया गया। एनडीआरएफ की टीम ने कई घरों से लोगों को बाहर निकालने का काम किया। इधर मौसम विभाग द्वारा बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग ने जारी किया अलर्ट मौसम विभाग ने कहा कि आगामी दिनों में तेज वर्षा की संभावना है, जिससे जलभराव और यातायात में बाधा उत्पन्न हो सकती है। रांची नगर निगम ने लोगों से अपील की है कि सुरक्षा का ध्यान रखें, घर से बाहर निकलते समय सावधानी बरतें। जल-जमाव की स्थिति उत्पन्न होने पर हमारे टॉलफ्री नंबर 1800-570-1235 या व्हाट्सएप 814-123-1235 पर तुरंत सूचित करें।

अधिवक्ता गोपाल कृष्ण की हत्या के बाद रांची सिविल कोर्ट में न्यायिक कार्य ठप्प

रांची: रांची सिविल कोर्ट के अधिवक्ता गोपाल कृष्ण उर्फ गोपी बाबू की हत्या के बाद सिविल कोर्ट में काम काज ठप्प है। वकील की हत्या से जिले के अधिवक्ताओं में काफी आक्रोश है। अपने गुस्से का इजहार करते हुए रांची सिविल कोर्ट के सैकड़ों अधिवक्ताओं ने रांची जिला बार एसोसिएशन से सिविल कोर्ट परिसर में मौन जुलूस निकाला और सिविल कोर्ट के प्रधान न्याययुक्त से इस मामले में हस्तक्षेप का आग्रह किया। इससे पहले सिविल कोर्ट के अधिवक्ताओं ने बार भवन में एक बैठक कर अधिवक्ताओं के संग हो रही अपराधिक घटनाओं पर चिंता जाहिर की। एसोसिएशन अधिवक्ता गोपाल कृष्ण के हत्यारों की अविलंब गिरफ्तारी के लिए रांची एसएसपी से भी बातचीत करेगा। फिलहाल एसोसिएशन ने यह निर्णय लिया है कि शनिवार तक रांची सिविल कोर्ट के सभी अधिवक्ता न्यायिक कार्य का बहिष्कार करते हुए न्यायिक कार्य से दूर रहेंगे।

लोबिन हेंब्रम की सदस्यता रद मामला : स्पीकर के फैसले पर हस्तक्षेप से हाई कोर्ट का इनकार

रांची : झारखंड हाईकोर्ट ने जेएमएम से निष्काषित संथाल परगना के बोरियो के निवर्तमान विधायक लोबिन हेंब्रम की सदस्यता रद्द किये जाने के आदेश पर फिलहाल हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया है। शुक्रवार को लोबिन हेंब्रम की याचिका पर हाईकोर्ट के एक्टिंग चीफ जस्टिस सुजीत नारायण प्रसाद और जस्टिस अरुण कुमार राय की खंडपीठ में सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान अदालत ने स्पीकर कोर्ट के फैसले में हस्तक्षेप करने से इनकार करते हुए स्पीकर कोर्ट में चली सुनवाई से जुड़े रिकॉर्ड पेश करने का निर्देश दिया। अब इस मामले की अगली सुनवाई चार सप्ताह बाद होगी। लोबिन हेंब्रम की ओर से अधिवक्ता अनुज कुमार और विधानसभा की ओर से अधिवक्ता अनिल कुमार ने बहस की।वहीं राज्य सरकार की ओर से अधिवक्ता शाहबाज ने अपना पक्ष रखा। लोबिन ने स्पीकर कोर्ट द्वारा सदस्यता रद्द करने के फैसले को झारखंड हाईकोर्ट में दी है चुनौती बता दें कि बोरियो के निवर्तमान विधायक लोबिन हेंब्रम ने 25 जुलाई को विधानसभा के स्पीकर कोर्ट द्वारा उनकी सदस्यता रद्द करने के फैसले को झारखंड हाई कोर्ट में चुनौती दी है। उन्होंने अपनी याचिका में कहा है कि स्पीकर ने विशेष दबाव में आकर या फैसला लिया है। यह बोरियों की जनता के साथ एक विश्वास घात करने जैसा है। याचिका में कहा गया है कि मॉनसून सत्र की घोषणा पहले हो चुकी थी और उसे सत्र में लोबिन अपने क्षेत्र से जुड़े दो सवालों को पटल पर रखने वाले थे, जिसकी अनुमति भी स्पीकर से प्राप्त हो चुकी थी। उसका जवाब भी आना था।लेकिन एकाएक स्पीकर कोर्ट ने सुनवाई करते हुए उनकी सदस्यता रद्द कर करने का फैसला सुना दिया। स्पीकर कोर्ट का यह फैसला पूरी तरह से असंवैधानिक है, क्योंकि एक ही पार्टी के दो सदस्यों के एक ही कृत्य को लेकर अलग-अलग रवैया अपनाया जा रहा है। उन्होंने विधायक चमरा लिंडा का उदाहरण दिया है और उन्होंने कहा है कि चमरा लिंडा ने भी पार्टी के आदेश की अवहेलना करते हुए लोकसभा चुनाव लड़ा। लेकिन उन पर कोई कार्रवाई नहीं हुई।जबकि वह 1995 में भी इस तरह से चुनाव लड़ चुके हैं। वहीं उन्होंने 2024 में चुनाव लड़ा। इसके बाद यह कार्रवाई हुई है। लोबिन हेंब्रम ने पार्टी से निष्कासित किये जाने मामले को भी अपनी याचिका में उठाया है। उन्होंने कहा है कि पार्टी से निष्कासित करने के लिए केंद्रीय कमेटी की सहमति का होना जरूरी है। लेकिन पार्टी संविधान को दरकिनार कर उन्हें पार्टी से निकाला गया जी न्याय संगत नहीं है।

रांची विश्वविद्यालय में मनाया केमिस्ट्री-डे

रांची : रांची विश्वविद्यालय के आर्यभट्ट सभागार में शुक्रवार को केमिस्ट्री-डे मनाया गया। यह आयोजन पीजी केमिस्ट्री आरयू तथा आइक्यूएसी रांची विश्वविद्यालय जरिये किया गया। भारत के प्रसिद्ध रसायनज्ञ आचार्य प्रफुल्ल चंद्र रे की याद में केमिस्ट्री डे दो अगस्त को मनाया जाता है। आचार्य पीसी रे ने ही आधुनिक भारत में शिक्षा के क्षेत्र में रसायन विज्ञान को स्थापित किया। उन्होंने अध्यापन के साथ ही पहला स्वदेशी दवा और कास्मेटिक्स उद्योग भी स्थापित किया। नेशनल केमिस्ट्री डे आयोजन में सबसे पहले कुलपति प्रो.डा.अजीत कुमार सिन्हा, प्रो. डॉ. जीडी मिश्र (वरिष्ठ प्राध्यापक केमिस्ट्री) प्रो. डॉ. एके डेल्टा (पीजी केमिस्ट्री हेड) डीएसडब्ल्यू डॉ. एसके साहू, डॉ. अरुण कुमार (डीन साइंस) कुलसचिव डॉ. विनोद नारायण ने आचार्य पीसी रे के तस्वीर पर माल्यार्पण किया।

दीदी नीलम आनंद के जन्मदिवस पर पौधरोपण का हुआ आयोजन

रांची : शिव शिष्यता की जननी दीदी नीलम आनंद के 72वेंजन्मदिवस के अवसर पर शिव शिष्यों द्वारा पूरे भारत वर्ष एवं विदेशों में भी वृक्षारोपण पखवाड़ा मनाया गया। 31 जुलाई को पखवाड़ा का समापन राँची में वृक्षारोपण के साथ हुआ जिसमें मुख्य रूप से अर्चित आनंद (मुख्य सलाहकार)शिव शिष्य परिवार, बरखा आनंद, अध्यक्ष शिव कुमार, भूषण, गौतम, राजेश, रजनीश, आदित्य, सरिता सहित अन्य गुरुभाई/बहन उपस्थित थे। इस अवसर पर अर्चित ने बताया कि प्रति वर्ष दीदी के नीलम के जन्मदिन के अवसर पर वृक्षारोपण अभियान चलाया जाता है और उसका संरक्षण का संकल्प भी लिया जाता है। आज के बदलते परिवेश में प्रकृति को बचाने और उसके संरक्षण की जिम्मेवारी सभी को उठानी ही होगी,अब तक हमलोगों ने शिव शिष्यों के द्वारा एक करोड़ से ज्यादा पौधे लगाये हैं इसी कड़ी में इस वर्ष भी करीब चार लाख पौधों को रोपित कर उसके संरक्षण का संकल्प लिया गया है। सभी को ज्ञात हो की दीदी नीलम आनंद जी शिव शिष्यता के जनक साहब हरीन्द्रानंद जी की धर्मपत्नी हैं।

राहुल की जनगणना की मांग के परिणाम

कुलदीप चंद अग्निहोत्री

आगा खान ने यह पिटीशन दी थी या ली गई थी, यह बहस का विषय हो सकता है, लेकिन अंग्रेज सरकार ने उसे सही रूप से पकड़ लिया था। इसका तरीका उन्होंने 1910 की जनगणना में निकाला। उन्होंने हिंदू को आगे हिंदू, जनजाति और अछूत नाम से तीन हिस्सों में बांट दिया। उस समय कांग्रेस ने इसका विरोध किया था। लेकिन ब्रिटिश नीति कामयाब रही और 1947 में देश विभाजित हो गया। अंग्रेजों के चले जाने के बाद कुछ लोगों ने मांग की थी कि जनगणना जाति के आधार पर की जाए, लेकिन पंडित जवाहर लाल नेहरु इसके पीछे छुपी भावना को समझ गए थे, इसलिए उन्होंने इस मांग को ठुकरा दिया था।

इस प्रतिवेदन का अगला भाग चौंकाने वाला है, जिसमें आगा खान कहते हैं कि जब भारतीयों को किसी भी संस्थान में उनकी संख्या के बल पर हिस्सेदारी दी जाए तो मुसलमानों को हिस्सेदारी का आधार उनकी संख्या को न माना जाए, बल्कि यह आधार रखा जाए कि मुसलमानों ने ब्रिटिश साम्राज्य की कितनी सेवा की है। आज भी यह शक जाहिर किया जाता है कि आगा खान ने यह प्रतिवेदन स्वयं दिया था या फिर अंग्रेजों ने उसे ऐसा प्रतिवेदन देने के लिए कहा था। ब्रिटिश सरकार ने शायद तभी से देश को विभाजित करने की योजना बनानी शुरू कर दी थी। आगा खान की पिटीशन से वायसराय इतना तो समझ गए थे कि हिंदुओं की जनसंख्या कृत्रिम रूप से कम करने का अवसर है...

वर्ष 1857 की आजादी की पहली लड़ाई के बाद जब ब्रिटेन ने ईस्ट इंडिया कम्पनी को अपदस्थ कर भारत का शासन स्वयं संभाल लिया तो उसने 1880 में भारत में पहली बार जनगणना शुरू की। उस समय मरदमशुमारी के लिए हिंदू, मुसलमान और ईसाई के नाम से तीन कॉलम होते थे। सिख, बौद्ध, जैन, ईरानी (पारसी को ईरानी कहा जाता था) की गणना भी अलग होती थी। सन् 1900 तक जनगणना इसी हिसाब से चलती रही। इस जनगणना में ब्रिटिश सरकार की यह इच्छा थी कि भारत में विभिन्न मजहबों के लोगों की संख्या कितनी है, यह जान लिया जाए ताकि आगे की रणनीति बनाने में आसानी रहे। अब तक भारत में विदेशी मूल के मजहबों को मानने वालों की संख्या भी अच्छी खासी हो गई थी। विदेशी मूल के तीन मजहब ही भारत में पैर पसार रहे थे। इस्लाम पंथ, एशिया पंथ और मसीही पंथ (क्रिश्चियन)। तीनों का भारत में आगमन मोटे तौर पर आक्रमणकारियों के माध्यम से हुआ था। अरबों, तुर्कों व मुगलों के लंबे शासन काल में इस्लाम पंथ में मतांतरित हो जाने वाले भारतीयों की संख्या भी अब तक काफी हो गई थी। इस्लाम पंथ में मतांतरित भारतीयों के अतिरिक्त एटीएम, यानी विदेशी मूल के मुसलमान भी थे। उस समय ईसाइयों की गिनती तो इस देश में नाममात्र ही थी। केरल में कुछ सीरिआई ईसाई थे जिन्होंने कभी अपने देश में इस्लामी आक्रमणों से भाग कर इस देश में शरण ले रखी थी। इसी प्रकार यूरोपीय जातियों को भी भारत के कुछ हिस्सों पर राज करते हुए लगभग सौ साल हो ही गए थे। इसलिए ईसाई पंथ में मतांतरित भारतीयों की भी कुछ संख्या थी ही। कुछ एंग्लो इंडियन थे। लेकिन इनकी संख्या उस समय निश्चित ही

उंगलियों पर गिनी जा सकती थी।

वर्ष 1900 की जनगणना में ईसाई केवल एक प्रतिशत थे और मुसलमान 21 फीसदी थे। मुसलमानों में विदेशी मूल के मुसलमान, देसी मुसलमान और शिया मजहब को मानने वाले भी शामिल थे। इन दोनों के अतिरिक्त शेष भारतीय हिंदू हैं। लेकिन यह भी साफ हो गया था कि ब्रिटिश सरकार ने इस जनगणना में हिंदू शब्द को भौगोलिक न मान कर उसे मजहब का द्योतक शब्द मान लिया था। लेकिन 1885 में कांग्रेस और 1905 में मुस्लिम लीग के गठन से देश में कहीं-कहीं कुछ निकायों में भारतीयों को हिस्सा देने के लिए कानून बनने शुरू हो गए थे। यह चयन मतदान द्वारा होता था। यह ठीक है कि मतदान का अधिकार कुछ गिने-चुने भारतीयों को ही दिया जाता था, लेकिन एक नई पद्धति की शुरूआत तो थी ही। 1909 के अधिनियम में तो विधानपालिकाओं में भी चुनाव द्वारा कुछ स्थान भारतीयों द्वारा भरे जाने थे। इसलिए 1910 की जनगणना से पहले मुसलमानों का एटीएम (अरब, तुर्क, मुगल) मूल का खेमा सक्रिय हो गया। उनकी चिंता थी कि ब्रिटिश सरकार ने इस्लाम पंथी (जिसमें मुसलमान और शिया पंथी दोनों ही शामिल थे) व मसीही के अतिरिक्त अन्य सभी भारतीयों को हिंदू स्वीकार लिया था। इसका अर्थ परोक्ष रूप से यही था कि हिंदू इस देश की भौगोलिक पहचान को ही इंगित करता है। ब्रिटिश सरकार ने मुसलमान और मसीही समुदाय को तो इस भौगोलिक पहचान से अलग कर ही दिया था। लेकिन यदि हिंदू को भी खंडित किया जा सके तो भारत को मानसिक तौर पर घायल करना आसान हो सकता था। 1910 की गणना से पहले एटीएम और ब्रिटिश सरकार ने इस संबंधी पूरी रणनीति तैयार कर ली थी। उसकी शुरूआत आगा खान के ज्ञापन से होती है जो उसने जनगणना के बारे में सरकार को दिया था। लेकिन हिंदू के भौगोलिक आधार को आगे बांटने की जरूरत ब्रिटिश सरकार को क्यों हुई, इसकी चर्चा भीमराव अंबेडकर ने की है। उनका मानना है कि इस प्रश्न का उत्तर मुसलमानों द्वारा आगा खान के नेतृत्व में 1909 में ब्रिटिश सरकार को दिए गए प्रतिवेदन में से मिलेगा।

यह मैमोरंडम आगा खान ने उस समय के वायसराय लार्ड मिंटो को दिया था। आगा खान ने इस प्रतिवेदन में लिखा था कि 1900 की जनगणना में मुसलमानों की संख्या 62 मिलियन है, जो कि भारत की कुल जनसंख्या का 1/5 प्रतिशत से लेकर 1/4 प्रतिशत के बीच ठहरता है। आगा खान ने आगे कहा कि जनगणना में से असभ्य समुदाय के लोगों, जिन्हें छिटपुट मजहब और एनिमिस्ट के नाते दर्ज कर रखा है, को निकाल दिया जाए। दूसरे, उन लोगों को जिन्हें हिंदू मान लिया गया है, लेकिन वे हिंदू नहीं हैं, भी निकाल दिया जाए तो देश में हिंदुओं की तुलना में मुसलमानों की संख्या का प्रतिशत और भी बढ़ जाएगा। अंबेडकर ने वह पूरा मैमोरंडम अपनी किताब ह्यअछूत कौन थेह्न में दिया है। लेकिन इस प्रतिवेदन का अगला भाग चौंकाने वाला है, जिसमें आगा खान कहते हैं कि जब भारतीयों को किसी भी संस्थान में उनकी संख्या के बल पर हिस्सेदारी दी जाए तो मुसलमानों को हिस्सेदारी का आधार उनकी संख्या को न माना जाए, बल्कि यह आधार रखा जाए कि मुसलमानों ने ब्रिटिश साम्राज्य की कितनी सेवा की है। आज भी यह शक जाहिर किया जाता है कि आगा खान ने यह प्रतिवेदन स्वयं दिया था या फिर अंग्रेजों ने उसे ऐसा प्रतिवेदन देने के लिए कहा था। ब्रिटिश सरकार ने शायद तभी से देश को विभाजित करने की योजना बनानी शुरू कर दी थी। अंबेडकर ने प्रश्न को आगे और बढ़ाया है। एक बात तो स्पष्ट है कि आगा खान की पिटीशन से वायसराय इतना तो समझ गए थे कि प्रथमया, हिंदू को उसकी भौगोलिकता से काट कर मजहब से पहले ही जोड़ दिया गया है, अब कृत्रिम रूप से उसकी जनसंख्या कम करने का भी अवसर है।

आगा खान ने यह पिटीशन दी थी या ली गई थी, यह बहस का विषय हो सकता है, लेकिन अंग्रेज सरकार ने उसे सही रूप से पकड़ लिया था। इसका तरीका उन्होंने 1910 की जनगणना में निकाला। उन्होंने हिंदू को आगे हिंदू, जनजाति और अछूत नाम से तीन हिस्सों में बांट दिया। उस समय कांग्रेस ने इसका विरोध किया था। लेकिन ब्रिटिश नीति कामयाब रही और 1947 में देश विभाजित हो गया। अंग्रेजों के चले जाने के बाद कुछ लोगों ने मांग की थी कि जनगणना जाति के आधार पर की जाए, लेकिन पंडित जवाहर लाल नेहरु इसके पीछे छुपी भावना को समझ गए थे, इसलिए उन्होंने इस मांग को ठुकरा दिया था। लेकिन आज नेहरु की हवेली पर जिन लोगों का कब्जा हो गया है, वे इटली के मैकियावली के सिद्धांतों पर चलते हुए किसी भी कीमत पर सत्ता प्राप्त करना चाहते हैं। इसलिए वे आज 2024 में उसी नीति को फिर से जीवित करना चाहते हैं, जो ब्रिटिश सरकार ने शुरू की थी। राहुल गांधी सलाहकारों की दी हुई स्क्रिप्ट पढ? की बजाय यदि बाबा साहेब अंबेडकर का संविधान सभा के अंतिम सत्र में दिया गया उनका भाषण पढ़ लें तो वे देश की ज्यादा सेवा करेंगे।

(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार है)

संपादकीय

जालसाजी की सजा

पूजा खेड़कर अब अफसर नहीं रहेंगी। यूपीएससी ने ट्रेनी पूजा का न केवल सिलेक्शन रद्द कर दिया है बल्कि वह भविष्य में भी किसी इम्तिहान में शामिल नहीं हो पाएंगी। उन पर उम्र, माता-पिता की गलत जानकारी, पहचान बदलने, तय सीमा से अधिक बार सिविल सेवा में शामिल होने के आरोप हैं। पूजा को दस्तावज की जांच के बाद सीएसई-2022 के नियमों के उल्लंघन का दोषी पाया गया। कारण बताओ नोटिस जारी किए गए, उनके भी कोई जवाब नहीं मिले। पुणे में पूजा ट्रेनी अफसर थीं, उस दौरान वीआइपी नंबर वाली निजी ऑडी में लाल बत्ती व महाराष्ट्र सरकार की प्लेट भी लगवा ली। शिकायत के बाद वहां से उनका तबादला हो गया, इसी दरम्यान हुई जांच में कई खुलासे होते चले गए। इस मामले के बाद यूपीएससी ने पंद्रह हजार से ज्यादा रिकमेंडेट उम्मीदवारों के दस्तावेज को भी जांचा। पूजा मनोरमा दिलीप खेड़कर ने न केवल अपना नाम, बल्कि मां-बाप का नाम बार-बार बदल कर परीक्षा दी। नाम के साथ, हस्ताक्षर, ई-मेल आईडी, पता, मोबाइल नंबर व फर्जी दस्तावेज भी लगातार बदले। इसलिए पता नहीं चल पाया कि पूजा कुल कितनी बार इस महत्वपूर्ण परीक्षा में शामिल हुई। जिस ओबीसी कैटेगरी से होने का दावा उन्होंने किया उसके प्रमाणपत्र के लिए अभिभावकों की सालाना आमदनी आठ लाख से कम होनी चाहिए। पूजा के पिता अवकाशप्राप्त आईएएस हैं, उनके चुनावी हलफनामे के अनुसार उनकी सालाना आमदनी 43 लाख रुपये व संपत्ति चालीस करोड़. की है। इस लिहाज से वह नॉन-क्रीमीलेयर कोटे का लाभ लेने की दोषी भी हैं। सत्रह करोड़. की संपत्ति की मालिक पूजा पेशे से डॉक्टर हैं। तीन सालों में विभिन्न दस्तावेज में उनकी उम्र बस एक वर्ष ही बढ़ी। उनके कई विकलांगता प्रमाण-पत्र भी सामने आ चुके हैं और विभिन्न दस्तावेज में आधार कार्ड. की बजाय राशन-कार्ड. नत्थी है। यह मामला पेचीदा, धोखाधड़ी व जालसाजी का भी है। कानून व कानूनी प्रक्रिया का दुरुपयोग करने के अलावा फजीवाड़े. व जालसाजी से पूजा ने देश की सबसे प्रतिष्ठित परीक्षा को धूमिल किया है। उन्हीं को नहीं, बल्कि इस प्रक्रिया में शामिल तमाम लोगों को सख्त सजा होनी चाहिए ताकि भविष्य में कोई ऐसी हिम्मत भी न कर सके।

चिंतन-मनन

दूसरों के दुख से अपना दुख ज्यादा बेहतर

एक कहावत है राजा दुखी, प्रजा दुखी सुखिया का दुख दुना। कहने का अर्थ यह है कि संसार में जिसे देखो वह अपने को दुखी ही कहेगा। राजा का अपना दुख है, प्रजा का अपना और जिसे आप सुखी माने बैठें हैं उससे पूछ कर देखेंगे तो वह भी अपने दुखों की पोटरी खोलकर अपनी व्यथा गाने लगेगा। लेकिन अगर आपके पास यह विकल्प हो कि आप अपना दुख किसी और को देकर दूसरे का दुख खुद स्वीकार कर लें तब आप कहेंगे कि अपना ही दुख भला है। इस संदर्भ में एक कथा है कि किसी गांव में एक फकीर आये। उनकी विशेषता यह थी कि वे किसी की भी समस्या दूर कर देते थे। उनकी इस विशेषता के बारे जिसे भी पता चला, वह उनके पास दौड़ा आया। अच्छी खासी भीड़ जमा हो गई और लोग जल्दी से जल्दी अपनी समस्या फकीर को बताने की जुगत भिड़ाने लगे। नतीजा यह हुआ कि हर कोई बोलने लगा। कोलाहल मच गया। फकीर ने सभी को चुप होने के लिए कहा। सभी लोग चुप हो गये तब फकीर ने कहा, मैं सबकी समस्या दूर कर दूंगा। आप सब लोग एक-एक कागज पर अपनी समस्या लिखकर लाएं और मुझे दे दें।

कुछ ही देर में कागजों का ढेर लग गया। फकीर ने कागजों को एक टोकरी में रखा और उसे सबके बीच में रख दिया। एक आदमी की तरफ इशारा करके फकीर मे कहा, यहां से शुरू करके सब बारी-बारी से आएंगे और एक-एक कागज उठा लें। ध्यान रहे किसी को अपना कागज नहीं उठाना है। लोग एक-एक कर आए कागज उठा-उठा कर अपनी-अपनी जगह बैठ गए। फकीर ने कहा, अब इस कागज में लिखी किसी दूसरे की समस्या पढ़ो। अगर चाहो तो मैं तुम्हारी समस्या दूर कर दूंगा पर उसके बदले कागज पर लिखी समस्या तुम्हारी हो जाएगी। तुम्हें लगता है कि तुम्हारी समस्या बड़ी है तो उसे दूर करवाकर कागज पर लिखी दूसरे की छोटी-सी समस्या अपना लो। चाहो तो आपस में कागज बदल लो। जब तय कर लो कि अपनी समस्या के बदले कौन सी समस्या लोगे तो मेरे पास आ जाना।

लोगों ने जब अपने पास कागज पर लिखी समस्या पढी तो वे घबरा गए। लोग एक दूसरे से कागज बदल-बदल कर पढ़ रहे थे। हर बार उन्हें लगता कि उनकी समस्या तो जैसी है वैसी है, पर इस नई समस्या का सामना नहीं कर पाएंगे। ...

आसान नहीं है 'विकसित भारत -2047'

भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना 'विकसित भारत-2047' पर देश में हर जगह चर्चा हो रही है। चचाओं का केंद्र अगले कुछ वर्षों में 7 प्रतिशत सालाना से अधिक औसत आर्थिक वृद्धि दर हासिल करना है। इस समय भारत और चीन की तुलना करना उपयोगी हो सकता है। विश्व बैंक के आंकड़ों के मुताबिक 1991 में दोनों देशों में कृषि में रोजगार का प्रतिशत आसपास ही था। चीन में यह 60 प्रतिशत तथा भारत में 63 प्रतिशत था, किंतु विश्व बैंक के अनुसार करीब 30 साल बाद चीन में यह तेजी से कम होकर 23 प्रतिशत रह गया, जो भारत के 44 प्रतिशत आंकड़े से बहुत कम है। इन 30 साल के भीतर चीन में लगभग 20 करोड़ कृषि श्रमिक उद्योग और सेवा क्षेत्रों में चले गए। विश्व बैंक के आंकड़ों के मुताबिक भारत में भी काफी संख्या में श्रमिक खेती से बाहर चले गए मगर इसी दौरान कृषि में रोजगार पाने वालों की संख्या 3.5 करोड़ बढ़ गई।

भारत को मौजूदा निम्न-मध्यम आय स्तर से उच्च आय स्तर या उच्च मध्यम आय स्तर तक लाने के लिए जरूरी बदलाव पर भी सबका ध्यान केंद्रित है । यह बदलाव रोजगार के ढांचे में होना है, जिसके तहत कृषि क्षेत्र से जुड़ा रोजगार घटना चाहिए और उद्योग तथा सेवा क्षेत्र का रोजगार उतना ही बढ़ना चाहिए। वैसे भारत 2047 तक विकसित देशों की श्रेणी में शामिल होने की आकांक्षा रखता है और इन देशों की अर्थव्यवस्थाओं में कृषि रोजगार के प्रतिशत की बात करें तो आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (ओईसीडी) देशों में यह लगभग 5 प्रतिशत है जो भारत में कृषि में वर्तमान रोजगार के प्रतिशत का लगभग आठवां हिस्सा है।

उच्च-मध्यम आमदनी वाले देशों में भी कृषि में रोजगार की हिस्सेदारी आज भारत की तुलना में केवल आधी है। विकसित देशों की श्रेणी में शामिल कृषि वस्तुओं के प्रमुख निर्यातक जैसे न्यूजीलैंड या ब्राजील में भी कृषि में रोजगार की हिस्सेदारी केवल 6-8 प्रतिशत के भीतर है। अगर भारत को 2047 तक उच्च आमदनी वाले देश का दर्जा हासिल करना है या उच्च-मध्यम आय के स्तर तक पहुंचना है तो उसे कृषि से बड़ी संख्या में श्रमिक उद्योग और सेवा क्षेत्र की ओर भेजने होंगे। इससे भी ज्यादा नाटकीय मामला वियतनाम का है, जहां 1991 में रोजगार में कृषि की हिस्सेदारी 75 प्रतिशत थी मगर 2021 में घटकर 29 फीसदी रह गई। इसका बड़ा कारण यह है कि चीन और वियतनाम में इन वर्षों के दौरान अधिक निर्भरता विनिर्माण में रोजगार सृजन और निर्यात बढ़ाने वाली वृद्धि पर रही है।

भारत के मामले में 1991 और 2021 के आंकड़ों की तुलना में एक अहम बिंदु छुप जाता है। कृषि की हिस्सेदारी में गिरावट और उद्योग तथा सेवाओं में वृद्धि मुख्य रूप से 1990-91 से 2014-15 के बीच यानी 25 वर्षों दौरान हुई। उसके बाद से विनिर्माण में वृद्धि की कई योजनाएं आने के बाद भी कोई बड़ा बदलाव नहीं देखा गया है। संभवतः कोविड के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों की वापसी की वजह से भी कृषि क्षेत्र से रोजगार स्थानांतरित होने की रफ्तार धीमी रही है।भारत में राज्यों के बीच अंतर पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। अहम मुद्दा यह है कि हम किस दर पर उद्योग और सेवा क्षेत्र में बेहतर रोजगार सृजन कर सकते हैं ताकि कामकाजी उम्र वाले लोगों की बढ़ती संख्या और कृषि क्षेत्र से आने वाले लोगों को इसमें खप सके। 2047 तक कामकाजी उम्र वाली आबादी (15 से 59 वर्ष) का आधिकारिक पूर्वानुमान लगाएं और मान लें कि काम ढूंढने वालों में करीब 65 प्रतिशत हिस्सेदारी इसी समूह की होगी तो हमारे पास रोजगार ढूंढने वाले करीब 12 करोड़ नए लोग होंगे।

इसके अलावा सबसे मुश्किल पूर्वानुमान कृषि क्षेत्र से निकलने वाले श्रम बल के दूसरे क्षेत्रों में स्थानांतरण के मूल्यांकन का स्तर है। अगर हम विकसित या उच्च आमदनी वाला देश बनना चाहते हैं तब कृषि क्षेत्र में रोजगार का हिस्सा कम होकर 10 प्रतिशत के स्तर पर आना चाहिए। इसका मतलब है कि लगभग 15 करोड़ लोगों को कृषि क्षेत्र छोड़ना होगा। इस तरह उद्योग और सेवा क्षेत्रों में 27 करोड़ से अधिक नए रोजगार पैदा करने की आवश्यकता है ताकि रोजगार ढूंढने वाली आबादी और कृषि क्षेत्र छोड़ने वाली अतिरिक्त आबादी इसमें खप सके। अगले 25 वर्षों में यह तादाद सालाना 1 करोड़ से अधिक नई उद्योग एवं सेवा क्षेत्र की नौकरियां हैं। असली चुनौती यह है कि हमें 2047 तक विकसित भारत बनाने के लिए एक ऐसी योजना चाहिए जो उद्योग और सेवा क्षेत्र में रोजगार के बेहतर मौके तैयार करे, खासतौर से उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, राजस्थान और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में, जहां आज भी औसतन करीब 55 प्रतिशत लोग खेती में रोजगार पाते हैं। अगले 25 साल में देश में जितने भी नए कामगार बढ़ेंगे, उनमें से लगभग 90 प्रतिशत इन पांच राज्यों से होंगे।

- राकेश दुबे

प्रमोद भार्गव

केरल : तबाही की वजह तलाशनी होगी

नयनाभिराम प्राकृतिक संपदा और बहुआयामी जल-संसाधनों के कारण केरल को उत्तराखंड की तरह भगवान का घर माना जाता है किंतु मूसलाधार बारिश और भूस्खलन हिमालय से लेकर केरल तक तबाही के कारण बन रहे हैं। सुदूर दक्षिण राज्य केरल में प्रकृति ने रौद्र रूप दिखाया और भूस्खलन एवं चेरियाल नदी के जलभराव क्षेत्र में बसे चाय बागान मजदूरों के चार गांवों ने मिट्टी के मलबे में जल समाधि ले ली। चेरियाल नदी पहाड़ों से निकलती हुई समतल भूमि पर चार दिनों से चल रही बारिश के कारण अत्यंत तेज गति से बही। इसी समय पहाड़ जल के प्रवाह से बह पड़े और पत्थरों व मलबे से चूरलमाला, अट्टामाला, नूलपुझा और मुंडक्कई मलबे में पूरी तरह दब गए। जल की रफ्तार में हजारों पेड़, सैकड़ों वाहन भी जड़ों से उखड़ कर ग्रामों की ओर बहते चले आए। करीब 2200 की आबादी के 400 से ज्यादा घर कुछ पलों में मिट्टी के ढेर में बदल गए।

यह पूरा इलाका पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण भूस्खलन प्रभावित क्षेत्र माना जाता है। केरल में केदारनाथ की तरह जो जल तांडव आया, उसने तय कर दिया है कि यह आपदा भगवान की देन न होकर मानव निर्मित है। पर्यावरणविद् ने भी इस बाढ़ को मानव निर्मित आपदा करार दिया है। कारण, बड़ी मात्रा में जंगलों की कटाई और पर्यटन में वृद्धि। चेरियाल बाढ़ क्षेत्र की जीवनदायिनी नदी मानी जाती रही है, लेकिन वही आधुनिक विकास के चलते मौत का सबब बन गई। कृषि प्रधान इस इलाके में चाय के अलावा नारियल, केला, मसाले और शुष्क मेवा की फसलें भी खूब होती हैं। पर्यटन भी राज्य की आमदनी व रोजगार का मुख्य स्रोत है। आय के ये सभी संसाधन प्राकृतिक हैं। गोवा, प्रकृति का इस तरह से रूठ जाना आर्थिक रूप से खस्ताहाल केरल पर लंबे समय से भारी पड़ रहा है क्योंकि इसके पहले बरसात में ही केरल के 80 बांधों में से 36 बांधों के दरवाजे एकाएक खोल दिए गए थे। बांधों से निकले पानी ने बड़ी तबाही मचाई थी। यह तबाही पूरी तरह मानवीय भूल थी, लेकिन सिंचाई विभाग के किसी नौकरपाह की जवाबदेही तय करके दंड दिया गया हो, ऐसा देखने में नहीं आया।

केदारनाथ, अमरनाथ, हिमाचल और कश्मीर के जल प्रलय से हमने कोई सीख नहीं ली। गोया वहां रोज बादल फट रहे हैं, पहाड़ के पहाड़ ढह रहे हैं। हिमाचल, असम और उत्तर प्रदेश में भी बारिश आफत बनी हुई है। बावजूद न तो हम शहरीकरण, औद्योगीकरण, तकनीकीकरण और तथाकथित आधुनिक विकास से जुड़ी नीतियां बदलने को तैयार हैं, और न ही ऐसे उपाय करने को प्रतिबद्ध हैं, जिनसे ग्रामीण आबादी शहरों की ओर पलायन करने को मजबूर न हो? शहरों में यह बढ़ती आबादी मुसीबत का पर्याय बन गई है। नतीजतन, प्राकृतिक आपदाएं भयावह होती जा रही हैं। सूरत, चेन्नई, बैंगलुरू, गुड़गांव ऐसे उदाहरण हैं, जो स्मार्ट सिटी होने के बावजूद बाढ़ की चपेट में रहे। यहां कई दिनों तक जनजीवन ठप रहा। बारिश का 90 प्रतिशत पानी तबाही मचाकर अपना खेल खेलता हुआ समुद्र में समा जाता है। यह संपत्ति की बरबादी तो करता ही है, खेतों की उपजाऊ मिट्टी भी बहाकर समुद्र में ले जाता है। देश हर तरह की तकनीक में पारंगत होने का दावा करता है, लेकिन जब हम बाढ़ की त्रासदी झेलते हैं, तो ज्यादातर लोग अपने बूते ही पानी में जान व सामान बचाते नजर आते हैं। आफत की बारिश के चलते डूब में आने वाले महानगर कुदरती प्रकोप के कठोर संकेत हैं, लेकिन हमारे नीति-नियंता हकीकत से आंखें चुराए हुए हैं। बाढ़ की यही स्थिति असम और बिहार जैसे राज्य भी हर साल झेलते हैं, यहां बाढ़ दशकों से आफत का पानी लाकर हजारों ग्रामों को डूबो देती है। इस लिहाज से शहरों और ग्रामों को कथित रूप से स्मार्ट व आदर्श बनाने से पहले इनमें ढांचागत सुधार के साथ ऐसे उपायों को मूर्त रूप देने की जरूरत है, जिससे ग्रामों से पलायन रु के और शहरों पर आबादी का दबाव न बढ़े ?

आफत की यह बारिश चेतावनी है कि हमारे नीति-नियंता, देश और समाज के जागरूक प्रतिनिधि के रूप में दूरदृष्टि से काम नहीं ले रहे हैं। कृषि एवं आपदा प्रबंधन से जुड़ी संसदीय समिति ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा है कि जलवायु परिवर्तन से कई फसलों की पैदावार में कमी आ सकती है, लेकिन सोयाबीन, चना, मूंगफली, नारियल और आलू की पैदावार में बढ़त हो सकती है। हालांकि कृषि मंत्रालय का मानना है कि जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए खेती की पद्धतियों को बदल दिया जाए तो अनेक फसलों की पैदावार में 10-40 फीसद बढ़ोतरी संभव है। बढ़ते तापमान के चलते भारत ही नहीं, दुनिया में वर्षा चक्र में बदलाव के संकेत 2008 में ही मिल गए थे, बावजूद इस चेतावनी को सरकार ने गंभीरता से नहीं लिया। बहरहाल, हर साल बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं का संकट नहीं झेलना पड़े, अतएव क्रांतिकारी पहल करना जरूरी हो गया है। वरना देश हर वर्ष किसी न किसी राज्य या महानगर में बाढ़ जैसी भीषण त्रासदी झेलते रहने को विवश होता रहेगा?

उपायुक्त ने की जनमन योजनाओं की समीक्षा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गुमला : गुमला उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी की अध्यक्षता में ढट JANMAN योजना को लेकर समीक्षात्मक बैठक का आयोजन किया गया । समीक्षा के क्रम में पीएचडी विभाग को शत प्रतिशत PVTG ग्रामों में घर-घर जल पहुंचा है या नहीं इसकी पुष्टि करते हुए सूची उपलब्ध कराने की बात कही। सभी PVTG ग्रामों में मोबाइल नेटवर्क की सुविधा उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए। उपायुक्त ने जिला आपूर्ति पदाधिकारी को शत प्रतिशत PVTG ग्राम अंतर्गत नागरिकों का राशन कार्ड बनवाने की बात कही उन्होंने कहा कि यदि किसी व्यक्ति का नाम राशन कार्ड से छूट गया है तो उसका नाम अविलंब जोड़ने को कहा गया। साथ ही उपयुक्त द्वारा निर्देश दिया गया कि सभी PVTG परिवारों को डाकिया योजना से राशन उपलब्ध कराया जाए। उपायुक्त ने जिन भी PVTG ग्राम अंतर्गत सड़क की स्थिति सही नहीं है वहां सड़क निर्माण हेतु प्रस्ताव उपलब्ध कराने की बात कही।

उन्होंने शत प्रतिशत PVTG समुदाय के नागरिकों को पीएम किसान, KCC, आधार कार्ड, आयुष्मान कार्ड, IFR/FRA पट्टा, किसान क्रेडिट कार्ड, राशन कार्ड, जाति प्रमाण पत्र, आवास, जल जीवन मिशन, मोबाइल नेटवर्क, उज्ज्वला योजना, विश्वकर्म योजना, गरीब कल्याण, छात्रवृत्ति, मातृ वंदना, विद्युत, आदि जैसी सभी सुविधाओं एवं योजनाओं से आच्छादित करने हेतु निर्देश दिया गया। इसके अलावा उपायुक्त द्वारा सभी ब्लॉक के आयुष्मान ऑपरेटर को सभी का आयुष्मान कार्ड बनाने हेतु कड़ा निर्देश दिया गया।इसके अलावा उपायुक्त द्वारा अन्य कई बिंदुओं पर समीक्षा करते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया। बैठक में उप विकास आयुक्त दिलेश्वर महतो, परियोजना निदेशक आईटीडीए, जिला कल्याण पदाधिकारी, जिला आपूर्ति पदाधिकारी, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी, जेटीडीएस, एलडीएम व अन्य उपस्थित थे।

हाईवे और नगर परिषद की सड़क की स्थिति दयनीय

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गुमला : झारखंड बॉर्डर से मध्य प्रदेश - छत्तीसगढ़ मुंबई रूट उड़ीसा प्रदेश राज्यों में आने जाने वाले हजारों वाहनों का परिचालन प्रतिदिन होता है। फिर भी गुमला जिला की अधिकांश सड़के बदसूरत हो गई है। गुमला रांची और उड़ीसा जाने वाली नेशनल हाईवे 23 तथा गुमला से मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ मुंबई रूट में जाने वाले अधिकांश सड़कों में गड्ढे नहीं बल्कि गड्ढे में सड़क होने के कारण और उक्त गड्ढे में बरसात का पानी भरा होने के कारण सड़क बराबर है। का भ्रम में पड़कर प्रतिदिन दर्जनों वाहन दुर्घटनाग्रस्त होते रहते हैं और तो और उक्त सड़क दुर्घटनाओं में प्रतिदिन दो-तीन लोगों की दर्दनाक मौतें भी होती रहती हैं, फर्क केवल उक्त पीड़ित परिवार और परिजनों को पड़ता है। और वह वापस नहीं आता है। जिम्मेदार कौन केंद्र सरकार, राज्य सरकार, स्थानीय संबंधित विभाग या स्थानीय प्रशासन पूछती है आम जनता और तो और चुनाव का बिगुल बजाते ही बरसाती मेंढक की तरह विभिन्न राजनीतिक दालों के मंत्री से लेकर संत्री तक और नेता से लेकर अभिनेता तक का ऐसा आश्वासन मिलते हैं। जैसे की कुछ माह में ही गुमला जिले को रेलवे लाइन से जोड़ा दिया जाएगा। और लाइसेंसी तथा कथित नेता कहता है। की बहुत जल्द अंतरराष्ट्रीय नेशनल हाईवे फोर लाइन से गुमला जिला मुख्यालय को जोड़ा जाएगा पर ऐसा होता नहीं है। उक्त आश्वासन चुनाव के बाद भी पूरे नहीं होते हैं और फिर दूसरी चुनाव आ जाती है।

बीओआई आरसेटी के माध्यम से लोगों को मिल रहा है स्वरोजगार का अवसर

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गुमला : गुमला जिला अंतर्गत स्थित भरनो प्रखण्ड क्षेत्र के खरका ग्राम निवासी रोशनी देवी की सफलता की कहानी उन्होंने दिसंबर 2022 में BOI RSETI गुमला से बकरी पालन का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। पहले से ही उनके द्वारा बकरी पालन किया जाता था। लेकिन टीकाकरण एवं दवा की जानकारी के आभाव में हर साल 8 से 10 बकरियां मर जाती थीं और 2022 में उनकी एक साथ लगभग 35 बकरियां चेचक के कारण मर गई और उन्हें लगभग 6 लाख रुपये का नुकसान हुआ। फिर उन्होंने बैंक ऑफ इंडिया आरसेटी गुमला से प्रशिक्षण लेने का फैसला किया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद, इंडियन बैंक और अपनी आजीविका एसएचजी की मदद से फिर से बकरी पालन शुरू किया और वर्तमान में वह खुद ही बकरियों का टीकाकरण कर रही हैं और प्रशिक्षण के बाद एक भी बकरी की मृत्यु नहीं हुई और वर्तमान में उनके पास 52 बकरियां हैं और लगभग 20000 रुपये की शुद्ध बचत हर महीने होती है। पंकज गोप की सफलता की कहानी पंकज गोप, पिता प्रभु गोप ग्राम अरमई बेहराटोली का निवासी है। उनके परिवारिक जीविका का मुख्य साधन कृषि है। उन्होने अगस्त 2023 में बीओआई आरसेटी, गुमला से सेल फोन रिपेयरिंग एवं सर्विस का प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण के बाद उन्होने उर्मी गुमला में स्वयं की पूँजी लगभग 150000/- से सेल फोन रिपेयरिंग एवं सर्विस का काम शुरू किया। आज उनकी मासिक आमदनी लगभग 10000/- है।

पवित्र हृदय के आदर में मिस्सा बलिदान का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

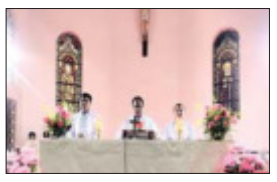

चैनपुर : कथोलिक चर्च टोंगो में शुक्रवार को पवित्र हृदय के आदर में मिस्सा बलिदान का आयोजन किया गया। मुख्य अनुष्ठाता फा. रोहित कुजूर एस. जे. ने मिस्सा बलिदान अर्पित किया इस दौरान फा. रोहित कुजुर ने अपने सन्देश में कहा की जीवन में सफलता-असफलता उन्हीं को मिलता जो जीवन की विभिन्न परीक्षाओं में भाग लेते हैं। सफल होने वाले को खुशी मिलती है वहीं असफल होने वाले को सीख लेनी चाहिए की हमको और अधिक मेहनत करने की आवश्यकता है। पवित्र हृदय के मिस्सा बलिदान में गानों की अगवाई यु. सी मध्य विद्यालय के शिक्षिकाओं और विद्यार्थियों के द्वारा की गई। पवित्र युखारिस्त में यु. सी. बालिका उच्च विद्यालय के शिक्षक अजय प्रसाद के जन्मदिन के अवसर पर उनके लिए प्रार्थना की गई। साथ ही

विशेष रूप से अच्छी वर्षा के लिए प्रार्थना की गई। जिसमें संत पीटर के प्रधानाध्यापक तेज कुमार बखला, संत पौल के प्रधानाध्यापक फा शैलेश, यु. सी. बालिका उच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापिका सिस्टर जुलिता टोप्पो, यु. सी. मिडल स्कूल के प्रधानाध्यापिका सिस्टर सुशीला टेटे, यु. सी. इंग्लिश मेडियम के प्रधानाध्यापिका सिस्टर रोस किरण कुजूर, शिक्षक अजय साहू. रोशन लकड़ा, अजित किंडो, अभय केरकेट्टा, शिक्षिका -शलोनी, अनिता, अनूपा सहित पांचो विद्यालय के सभी शिक्षक शिक्षिका और विद्यार्थी उपस्थित थे।

JAPIT
Jharkhand Agency for Promotion of Information Technology

(An Autonomous body under Department of Information Technology, Govt of Jharkhand)
Ground Floor, Engineer's Hostel – I, Near Golchakkar, Dhurwa, Ranchi, Jharkhand
Phone. 0651-2401044, 2401067 e-Mail: japit_doit@rediffmail.com

Corrigendum -1

Supply & installation of Server Virtualization software license with 1 year warranty for JAP-IT Data Centre
Tender Reference No. – JAPIT/JH-JDC/Server Virtualization/2024

Reference PR No. 331197
This is in reference to the Request for Proposal (RFP) published for the purpose of "Supply & installation of Server Virtualization software license with 1 year warranty for JAP-IT Data Centre" with Reference No.: JAPIT/JH-JDC/Server Virtualization/2024
Interested participants may download the corrigendum-I document from the portal i.e. https://jharkhandtenders.gov.in,
The address for correspondence for the purpose of this RFP is:
Chief Executive Officer,
JAPIT, Ground Floor, Near Golchakkar,
Engineer's Hostel - 1, Dhurwa, Ranchi, Jharkhand
Email: japit_doit@rediffmail.com,Phone No.: +91-651-2401044

Sd /-
OSD, JAP-IT

PR 331660 Information Technology(24-25).D

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय,
राष्ट्रीय ग्रामीण नियोजन कार्यक्रम, गुमला
E-Mail – nrepgumla@gmail.com

अति अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना संख्या – 02/2024-25

1. विज्ञापन दाता का नाम :–राष्ट्रीय ग्रामीण नियोजन कार्यक्रम, (NREP) गुमला।
2. परिमाण विपत्र बिक्री की तिथि :–दिनांक 08.08.2024 एवं 10.08..2024 को 10.00 बजे पूर्वा0 से 03.00 बजे अप0 तक।
3. निविदा प्राप्त करने की तिथि :–दिनांक 12.08.2024 को 03.00 बजे अपराहन तक।
4. निविदा खोलने की तिथि –दिनांक 12.08.2024 को 03.30 बजे अपराहन में।
5. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान :–कार्यपालक अभियंता, NREP, गुमला का कार्यालय में।
6. निविदा प्राप्त करने का स्थान :–कार्यपालक अभियंता, NREP, गुमला में।
7. निविदा खोलने का स्थान :–कार्यपालक अभियंता, छत्म्प्ए गुमला का कार्यालय में।
8. कार्य मद :–
9. कार्यो का विस्तृत विवरण :–

ग्रुप सं0	प्रखण्ड	पंचायत का नाम	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र का मूल्य	कार्य पूर्ण करने की अवधि	श्रेणी
1	2	3	4	5	6	7	8	
1	गुमला सदर	कतरी	कतरी आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
2	गुमला सदर	खरका	बड़ा खटंगा पाकरटोली आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण।	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
3	गुमला सदर	बसुआ	सावरिया खास आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
4	गुमला सदर	आंजन	उपर आंजन आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
5	गुमला सदर	असनी	असनी नवाटोली आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
6	गुमला सदर	असनी	बरिसा नकटीटोली –मिनी आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
7	गुमला सदर	कलिगा	कलिगा बड़काटोली आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
8	गुमला सदर	कलिगा	कलिंगा बोकोटोली आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
9	गुमला सदर	कसीरा	कोयनजारा महुआटोली आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
10	गुमला सदर	कसीरा	कोयनजारा गांजूटोली आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
11	गुमला सदर	अम्बुआ	गिन्ढरा खास आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
12	गुमला सदर	वृन्दा	कोयनारा टोंगरीटोली आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
13	गुमला सदर	वृन्दा	कोयनारा खास आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
14	गुमला सदर	कुलाबीरा	पतिया खास आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
15	गुमला सदर	खोरा	घोघरा पाकरटोली आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
16	गुमला सदर	घटगांव	घटगांव पश्चिमी आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
17	गुमला सदर	घटगांव	काटासारू आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
18	गुमला सदर	फसिया	फसिया नदीटोली आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
19	गुमला सदर	फसिया	फसिया ढोढरीटोली 2 आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
20	गुमला सदर	नगरपालिका	चेटर कन्हर टोली आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
21	रायडीह	नवागढ़	कुकुरसेपटा आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
22	रायडीह	सिलम	पान्दनटोली आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
23	रायडीह	सिकोई	लुंगा आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
24	रायडीह	परसा	तेलया आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
25	रायडीह	कोब्जा	भिंजपुर आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
26	रायडीह	उपर खटंगा	दुडुरूमा आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
27	चैनपुर	जनावल	कराकु आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
28	चैनपुर	जनावल	लुपुगपाठ आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
29	चैनपुर	बामदा	कोरकोटोली आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
30	चैनपुर	कातिंग	कातिंग अम्बाटोली आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
31	चैनपुर	कातिंग	ब्रह्मपुर आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
32	चैनपुर	बरडीह	ऊरु आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
33	चैनपुर	बरवेनगर	डुठाटोली आंगनबाड़ी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III

निविदा की शर्तें:–
1. परिमाण विपत्र का शुल्क परिमाण NIT में अंकित राशि के अनुसार आवेदन के साथ बैंक ड्राफ्ट के रूप में जो कार्यपालक अभियंता, NREP, गुमला के नाम पर भुगतेय होगा। परिमाण विपत्र निर्गत किया जाएगा, जो लौटाया नहीं जायेगा। बैंक ड्राफ्ट निबंधित संवेदक के खाता से ही बना हुआ मान्य होगा एवं बैंक ड्राफ्ट की वैद्यता निविदा की प्रकाशन की तिथि से तीन माह का होना अनिवार्य है।
2. S.O.R से 10% कम दर पर अंकित करने तक अतिरिक्त जमानत राशि (Additional Performance Security money) की आवश्यकता नही है लेकिन यदि 10% से ज्यादा कम दर अंकित करते है तो नियमानुसार (Additional Performance Security) एकरनामा के साथ ही देना अनिवार्य होगा।
3. Bank certificate certified/Prescribed format के अनुसार निविदा डालने के समय देना अनिवार्य होगा।
4. भवन निर्माण विभाग में निबंधित संवेदक ही निविदा में भाग ले सकेंगे।
5. निविदा की विस्तृत शर्तें कार्यालय की सूचना पटट पर अनिवार्य रूप से देख लें।

ह0/–
कार्यपालक अभियंता,
राष्ट्रीय ग्रामीण नियोजन कार्यक्रम, गुमला।

PR.NO.331588 NREP(24-25):D

सांसद ने अल्बर्ट एक्का के नाम से जिला में सैनिक स्कूल खोलने की मांग की

गुमला : लोहरदगा लोकसभा के सांसद सुखदेव भगत ने संसद में लांसनायक परमवीर चक्र विजेता अल्बर्ट एक्का के नाम से गुमला जिला में सैनिक स्कूल खोलने की मांग को प्रमुखता से उठाया। सांसद सुखदेव भगत ने संसद में कहा की 1971 के इंडो पाक के युद्ध में पूरे पूर्वोत्तर भारत में एकमात्र देश के सर्वोच्च सैनिक सम्मान पाने वाले परमवीर चक्र विजेता लांसनायक अल्बर्ट एक्का के नाम पर लोहरदगा संसदीय क्षेत्र के गुमला जिला में सैनिक स्कूल खोला जाय। सांसद ने कहा कि यह अल्बर्ट एक्का के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी। गुमला जिला आदिवासी बाहुल्य जिला है। पुलवामा की बात हो चाहे कारगिल की युद्ध बात हो इस क्षेत्र के काफी सैनिक शहीद हुए हैं। मेरे संसदीय क्षेत्र के बच्चों ,युवकों के दिलों में देश सेवा करने के लिए एक अलग जज्बा है ये सैनिक बनकर देश सेवा करना चाहते हैं। पूर्व में भी इस क्षेत्र से बड़ी संख्या में युवक सैनिक बने हैं यहां सैनिक स्कूल खुलता है तो अल्बर्ट एक्का को भी सच्ची श्रद्धांजलि मिलेगी।

खिजरी विधानसभा क्षेत्र में आज मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना का हुआ शुभारंभ

अंगड़ा : माननीय विधायक राजेश कच्छप कल दिनांक 03 अगस्त को झारखण्ड मुख्यमंत्री मंईया सम्मान योजना हर बहना को हर साल 12 हजार रुपए 21 से 50 वर्ष तक की उम्र की बहनों को हर महीने 1000 रुपए की सम्मान राशि की शुभारंभ खिजरी विधानसभा क्षेत्र के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रखण्डों में किये जाने की सुनिश्चित की गई है।
अत: आप सभी को सूचित किया जाता है कि समय पर कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे का कष्ट करेंगे। 1 प्रखण्ड नगड़ी के चेटे पंचायत भवन में 10 .30 बजे। 2 प्रखण्ड नामकुम के सिठियो पंचायत भवन में 12 .15 बजे। 3 प्रखण्ड अनगड़ा के हेसल पंचायत भवन में 01.30 बजे। 4 प्रखण्ड ओरमांझी के चकला पंचायत भवन में 02 .30 बजे।

पुलिस ने हथियार सहित पांच आरोपियों को किया गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिमडेगा : सिमडेगा के पुलिस को मिली बड़ी सफलता। पुलिस ने अपराध की योजना बना रहे 05 अपराधी को हथियार के साथ किया गिरफ्तार। जानकारी देते हुए एसडीपीओ ने बताया कि केरसई थाना क्षेत्र विगत 31 जुलाई को इन अपराधियों दिपक समीर लकड़ा, सुरेश मल्लिक, बादल बिल्हौर, जॉय मिंज, अमित टोप्पो द्वारा कोनजोबा पंचायत के पाकरटोली खिजुरटोली में जीवन आइन्द उर्फ पाला नामक व्यक्ति के घर जाकर झगड़ा किया गया था, एवं लौटने के क्रम में फायरिंग भी किया गया था। इस मामले का अनुसंधान कर रही केरसई पुलिस को आज गुप्त सूचना मिली कि उक्त अपराधियों द्वारा पुनः केरसई आकर कुछ घटना को अंजाम दिया जाना है। समय रहते केरसई पुलिस टेंसेर मनोहरपुर में घेराबंदी कर इन पांचों अपराधियों को धर दबोचा। पुलिस को इनके पास से दो विदेशी पिस्टल एवं जिंदा कारतूस एवं एक स्कार्पियो बरामद हुआ। केरसई पुलिस द्वारा पूछताछ एवं अनुसंधान के बाद उक्त अपराधियों को भारतीय आयुद्ध अधिनियम 1959 की धारा 25(1-)/26/35 के तहत जेल भेजा जा रहा है।

झारखण्ड सरकार
कार्यपालक अभियन्ता का कार्यालय
पेयजल एवं स्वच्छता प्रमण्डल, राँची पूर्व, राँची

अति अल्पकालिन निविदा सूचना –6/2024–25

1) विभाग का नाम : पेयजल एवं स्वचछता विभाग, झारखण्ड, रॉंची ।
2) विज्ञापन दाता का नाम : कार्यपालक अभियंता, पेयजल एवं स्वचछता प्रमंडल, रॉंची पूर्व रॉंची ।
3) परिमाण विपत्र की बिक्री की अंतिम तिथि एवं समय : 12.8.2024 अपराहन 5 बजे तक।
4) निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय : 13.8.2024 अपराहन 3:30 बजे तक।
5) निविदा खोलने की तिथि एवं समय : 13.8.2024 अपराहन 4 बजे।
6) परिमाण विपत्र की बिक्री का स्थान : 1) कार्यपालक अभियंता, का कार्यालय,पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल, रॉंची पूर्व, रॉंची। 2) अधीक्षण अभियन्ता, का कार्यालय, पेयजल एवं स्वच्छता, रॉंची अंचल, रॉंची।
7) निविदा प्राप्ति का स्थान : 1) कार्यपालक अभियन्ता का कार्यालय, पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल, रॉंची पूर्व, रॉंची।
8) कार्य विवरणी :

क्र0	कार्य का नाम	प्रा० राशि (लाख में)	अग्रधन की राशि (रु० में)	परिमाण वि० का मूल्य	कार्य समाप्ति की अवधि
1.	Seepage repair & Renovation of Bathroom, Toilet and improvement of water supply with replacement of sanitary fittings and sewerage work at Qtr No LIG-R/353-54 and others LIG High court pool under D. W. & S. Division, Ranchi East, Ranchi.	1033865.00	20700.00	2500.00	15 Days
2.	Renovation& Re-Construction of Sewerage and drainage for drainage out of water from sump overflow water in the campus of central training institute home gaurad, Dhurwa, Ranchi Government of Jharkhand Ranchi Under D.W.&S. Division Ranchi East Ranchi.	2388005.00	47800.00	5000.00	30 Days
3.	Supply & Installation of Geyser & Iron cum Turbidity Removal filtration plant, Carbon filtration Plant with Multiport Valve & necessary water supply pipe line and its allied work at Judge Quarter no. - 6 Opp. Jal Bhawan Doranda, Ranchi under D.W. & S. Division, Ranchi East Ranchi.	658381.00	13200.00	1250.00	15 Days
4.	Special Repair and maintenance of Commercial type RO Water purifier and water cooler of differen t models installed at Jharkhand High Court Campus Ranchi under D.W. & S. Division, Ranchi East Ranchi.	355482.00	7200.00	750.00	07 Days
5.	Overhauling of 125Cu.M/Hr. Iron and Turbidity Removal filtration plant with multiple valve, & necessary water supply pipe line and its allied work at office of the Commandant 209 Cobra Fudi khunti Jharkhand under D.W. & S. Division, Ranchi East Ranchi.	1790420.00	35900.00	5000.00	15 Days
6.	Construction of 5Nos. Of toilets with septic tank and soak pit with water supply connection at campus of fire brigade cum central training institute, Dhurwa, Ranchi, Jharkahand Government of Jharkhand Ranchi Under D. W. & S. Division, Ranchi East, Ranchi. (Part - A)	1312572.00	26300.00	2500.00	30 Days
7.	Seepage repair & renovation of toilet and bath room, improvement of W/S, Sanitary fittings, Sewerage Work at Quarter Nos. B-1694, B-1360, B-651, B-652 of Sector-II & AN-223 Sector-III and others Jharkhand Govt. pool quarters, HEC Campus , Dhurwa, Ranchi under D.W. & S. Division, Ranchi East, Ranchi.	1099615.00	22000.00	2500.00	15 Days
8.	Supplying fitting and fixing of High Purification Capacity water purifier, water cooler , Gyser and its allied works at Qtr. No. E - 13 Sector -I and E-311, Sector-II, Dhurwa and other quarters under D.W. & S. Division, Ranchi East Ranchi.	1044594.00	20900.00	2500.00	15 Days
9.	Seepage repair and renovation of bathroom, toilet & improvement of water supply with replacement of sanitary fittings and sewerage work at outhouse of Staff Qtr.No. -16 and other High Court pool quarters under D.W and S. Division, Ranchi East, Ranchi.	659155.00	13200.00	1250.00	15 Days
10.	Seepage repair and renovation of bathroom, toilet & improvement of water supply with replacement of sanitary fittings and sewerage work at Qtr.No. -M.O-82/124 Set Doranda and other High Court pool quarters under D.W and S. Division, Ranchi East, Ranchi.	604522.00	12100.00	1250.00	15 Days
11.	Supplying and Installation of Softener filt er plant, Iron Removal Plant, & Carbon Filter Plant (2000LPH) and necessary water supply pipe line and its allied work with one year Operation and Maintenance of Plant at Jharkhand State Police Complain Authority Hinoo Ranchi under D.W. & S. Division, Ranc hi East Ranchi.	973611.00	19500.00	1250.00	15 Days
12.	Provision of water supply by construction of 1Nos. HYDT with Installation of 3.00 H. P. Submersible Pump Motor with R.C.C staging(3mx2mx4.5m) and & Its allied works at Jharkhand central training institute of Home gaurad for family barrcak Ranchi Under D. W. & S. Division, Ranchi East, Ranchi.	1498992.00	30000.00	2500.00	30 Days

आवश्यक शर्तों के लिए देखें www.jharkhand.gov.in
Email ID- eedwsd.ranchieast@gmail.com

कार्यपालक अभियंता
पेयजल एवं स्व० प्र० रॉंची पूर्व रॉंची

PR 331635 Drinking Water and Sanitation (24-25)_D

एक नजर

77 वर्षीय वृद्ध लापता, गुमशुदगी का सनहा दर्ज

कुकडू: कुकडू प्रखंड क्षेत्र के तुलीनडीह गांव के 77 वर्षीय वृद्ध गुन्नू गोप की लापता के संबंध में नीमडीह थाना में गुमशुदगी का सनहा दर्ज किया गया। गुन्नू गोप के पुत्र चित्रसेन गोप ने नीमडीह थाना में लिखित सुचना मे बताया गया है कि 21 जुलाई की सुबह करीब 3 बजे घर से निकला है और वापस नहीं लौटा। खोजबीन के बाद भी कहीं नहीं मिला। बताया गया है कि वह सफेद गंजी व धोती पहने हुआ है । सर पर सफेद बाल और गोरा बदन है। उन्होंने बताया कि थाना में गुमशुदगी का सनहा दर्ज कर खोजबीन करने में मदद करने का गुहार लगाया गया है। उन्होंने कहा कि वे मानसिक रूप से कमजोर है, जिससे वह घर वापस नहीं आ पा रहा है। उन्होंने लोगों से अपील किया है कि किसी को उन्हें कहीं दिखाई दे तो मोबाइल नंबर 77 39536240 पर सुचना देकर सहयोग करें।

उपायुक्त की अध्यक्षता में वन अधिकार अधिनियम के तहत वन पट्टा वितरण को लेकर हुई बैठक

साहिबगंज: कार्यालय प्रकोष्ठ में उपायुक्त हेमंत सती की अध्यक्षता में वन अधिकार अधिनियम (एआए) के तहत वन पट्टा वितरण के संबंध में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में 9 अगस्त को विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर वन पट्टा वितरण करने के दिशा-निर्देश दिए गए। बैठक के दौरान उपायुक्त ने यह सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया कि वन पट्टा वितरण से पहले सभी आवश्यक गाइडलाइन्स का पालन किया जाए। इसके तहत, ग्राम सभा का आयोजन किया जाएगा जिसमें 2/3 जनसंख्या की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी, और उनमें से 1/3 महिलाओं की उपस्थिति अनिवार्य होगी। इस अवसर पर उपायुक्त ने कहा,₹वन पट्टा वितरण से पहले सभी प्रक्रियाओं का पालन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हर योग्य लाभार्थी को उसका हक मिले।₹ इस बैठक में वन प्रमंडल पदाधिकारी, अनुमंडल पदाधिकारी, कल्याण पदाधिकारी, अंचल अधिकारी और संबंधित कर्मचारी उपस्थित थे जिन्होंने वन पट्टा वितरण की तैयारियों पर चर्चा की और आवश्यक कदम उठाने का संकल्प लिया।

भारत फाइनेंशियल इंक्लूजन लिमिटेड के फील्ड ऑफिसर को मार कर किया घायल

तालझारी: थाना क्षेत्र के महाराजपुर पुराना भट्ठा में गुरुवार को लोन का पैसा रिकवरी करने को लेकर भारत फाइनेंशियल इन्क्लुजन लिमिटेड फिल्ड ऑफिसर के साथ मारपीट करने का मामला प्रकाश में आया है। पीड़ित राहुल रविदास 26 पिता स्वर्ग रामकरण दास,सोना जोड़ी थाना पाकुड़ के निवासी ने तालझारी थाना में लिखित आवेदन में कहा है कि मैं भारत फाइनेंशियल इन्क्लुजन लिमिटेड शाखा जिरवाबाड़ी साहेबगंज में फिल्ड ऑफिसर के पद पर कार्यरत है। गुरुवार को अपने जिरवाबाड़ी शाखा से पुराना भट्ठा महराजापुर क्लेक्सन करने आये थे। वहाँ पर कुछ सदस्य का पैसा बांकी था। उसमे एक सदस्य का घर गये जिसका नाम विजली देवी था। उनसे फोन में बात करके पता चला कि वो अपना पैसा यसोदा देवी पति बोना राय गाँव पुराना भट्ठा के पास दे दिया है।

अबुआ आवास का निर्माण शुरू नहीं करने वालों पर होगी कार्रवाई : बीडीओ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चाईबासा : अबुआ आवास योजना के कार्य में कर्मचारी तेजी लाकर जल्द से जल्द कार्य को पूरा करायें। यह निर्देश चक्रधरपुर बीडीओ गिरिजानंद किस्कू ने पंचायतकर्मियों को दिया। अबुआ आवास निर्माण को लेकर चक्रधरपुर प्रखंड कार्यालय में शुक्रवार को बैठक हुई। बैठक में पंचायती राज पदाधिकारी मनोज कुमार, प्रखंड समन्वयक अमित कुमार के अलावे विभिन्न पंचायतों में कार्यरत पंचायत सचिव व पंचायत सहायक उपस्थित थे। बीडीओ गिरिजानंद किस्कू ने कहा कि अबुआ आवास योजना निर्माण के लिए जिन लाभुकों के बैंक खाते में पहली किश्त की राशि भेजी गई है, वे निर्माण कार्य जल्द शुरू करायें। निर्माण कार्य शुरू नहीं करने पर कार्रवाई की जाएगी। साथ ही अबुआ आवास योजना के लिए भेजी गई राशि भी वापस ली जाएगी। पंचायतकर्मियों को कार्य में लापरवाही नहीं बरतने की दी हिदायत

उन्होंने पंचायतकर्मियों को भी कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं बरतने की हिदायत दी। बीडीओ ने कहा कि पंचायत स्तर पर कार्य करने वाले कर्मचारी अबुआ आवास निर्माण करने वाले लाभुकों पर निगरानी रख जल्द से जल्द कार्य पूरा करायें। वे स्वयं पंचायतों में भी जाकर अबुआ आवास योजना के कार्यों की स्थिति का जायजा ले रहे हैं। बैठक में मनरेगा कानून, पंद्रहवें वित्त आयोग के तहत होने वाले विकास कार्यों पर भी चर्चा कर जल्द से जल्द अधूरे कार्यों को पूरा करने को कहा गया.बैठक में प्रखंड के विभिन्न पंचायत के पंचायत सचिव व पंचायत सहायक उपस्थित थे।

बारिश से नदी व तालाबों का जल स्तर बढ़ा, प्रशासन ने लोगों को किया अलर्ट

चाईबासा : दो दिन से हो रही बारिश के कारण पोड़ाहाट अनुमंडल के नदी-तालाब, नालों का जल स्तर बढ़ गया है। बारिश नहीं होने के कारण नदी-तालाब सूखने के कगार पर आ गये थे। वहीं एक ओर बारिश होने से लोगों में राहत है तो नदी-तालाब का जल स्तर बढ़ने से नदी किनारे रहने वाले लोगों को खतरे का डर सता रहा है। नदी किनारे रहने वाले लोगों को प्रशासन ने अलर्ट किया है। चक्रधरपुर के संजय-विजय नदी के अलावे सोनुआ, गोईलकेरा, मनोहरपुर के कोयल कारो नदी का जल स्तर बढ़ने के कारण क्षेत्र के लोग चिंतित भी हैं। अगर दो-तीन दिनों तक इसी तरह बारिश हुई तो क्षेत्र के नदी खतरे के निशान से ऊपर बहने लगेंगे। बंदगांव का हिरणी जल प्रपात उफान पर झारखंड के विख्यात बंदगांव प्रखंड स्थित हिरणी जल प्रपात भी इन दिन उफान पर है। हिरणी जल प्रपात के चार मीटर से ऊपर पानी बह रहा है।

मुख्य सड़क पर पानी भरने से ग्रामीण परेशान, व्यवसाय ठप

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोटालपोखर : बरहरवा प्रखंड अन्तर्गत कोटालपोखर मुख्य सड़क स्थित गनी चौक सहित आसपास कई जगहों पर पानी भर जाने की वजह से लोगों को बहुत सी परेशानियों का सामना इन दिनों करना पड़ रहा है साथ ही साथ यहाँ के व्यवसाय भी बहुत परेशान हैं क्योंकि पानी के सड़क में पूरी तरह से भर जाने की वजह से ग्राहँको की संख्या बिल्कुल शून्य होती जा रही है, जिससे यहाँ की आम जनता को बहुत नुकसान उठाना पड़ रहा है। पानी का जमाव होने का मुख्य कारण है की यहाँ पर सड़क किनारे जितने भी निकासी हेतू नाले का निर्माण किया गया था वो पूरी तरह से बंद हो चुका है, जिसकी वजह से पानी का निकास नहीं हो पा रहा है,ग्रामीणों द्वारा लगातार प्रयास करने एवं अखबार में प्रकाशित होने के बाद भी मामले में किसी प्रकार की कोई प्रतिक्रिया नहीं देखी जा रही। जबकि मामला ग्रामीणों के रोजगार एवं यातायात को पूरी तरह से बर्बाद होने से जुड़ा हुआ है। सड़क और नाले का निर्माण बीते एक वर्ष पूर्व किया गया था, जो की बहुत बड़ी लापरवाही की ओर इशारा करता हुआ नजर आता है की कैसे ठेकेदारों द्वारा लोगों को सरकारी योजनाओं के नाम पर चुना लगाने का कार्य किया जा रहा है।

'विनोदिनी' पर आधारित सुष्मिता मुखर्जी की आई 5वीं किताब 'नटी'

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

देवघर : साल 1874 में 12 साल की उम्र में बिनोदिनी ने कलकत्ता नेशनल थियेटर में अपना पहला सीरियस ड्रामा रोल अदा किया. साल पढ़ के चौंक गए होंगे ना आप चौंकना बनता भी है। क्योंकि ये वो दौर था जब थियेटर या सिनेमा में महिला का कैरेक्टर भी पुरुष एक्टर ही निभाते थे। उस जमाने में फिल्मों में काम करने की इच्छा रखने वाली महिलाओं को ही वैश्या के रूप में देखा जाता था। उस दौर में थियेटर पर एक्टिंग का जलवा बिखेरने वाली क्रांतिकारी एक्ट्रेस थीं, बिनोदिनी दासी। नटी विनोदिनी के नाम से मशहूर हुई रंगमंच पर अपना जलवा बिखेरने वाली विनोदिनी दासी पर आधारित किताब 'नटी - एक मूल नाट्य' अब हम सभी के लिए उपलब्ध है। इसका लेखन 40 वर्षों से अधिक का अभिनय अनुभव रखने व साठ से अधिक फिल्मों में काम कर चुकीं एनएसडी) से स्नातक प्रख्यात अभिनेत्री व लेखिका सुष्मिता मुखर्जी ने किया है। यह उनकी पांचवी किताब है, जिसमें उन्होंने विनोदिनी दासी की कहानी को आधुनिक समय में वर्तमान संदर्भों के साथ नाटक ह्यनटी की नायिका मणि मेखला के जरिए कहने का प्रयास किया है। उन्होंने इस नाटक को न सिर्फ लिखा बल्कि अपने थिएटर ग्रुप ह्यनाटक कंपनी के अंतर्गत इसका सफल मंचन भी किया है। पाठक इस नाटक की कथा में सिनेमाई छवियों का भी अनुभव कर सकते हैं। बुंदेलखंड के ह्रदय सम्राट कहे जाने वाले अभिनेता-डायरेक्टर राजा बुंदेला की धर्मपत्नी सुष्मिता मुखर्जी ने इससे पूर्व मी एंड जूही बेबी, 'बांझ-स्त्री मन के अधखुले पन्ने', कॉफी-टेबल बुक 'ब्रेवआर्ट्स ऑफ बुंदेलखंड' व उपन्यास 'खजुराहो कन्नंड्रम' का लेखन भी किया है। 19वीं सदी के बंगाल में अभिनेत्री विनोदिनी दासी ने न केवल सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ा बल्कि अपने खुद के अंधेरे अतीत की छाया से बाहर आने का भी सफल प्रयास किया। एक दिन स्वामी रामकृष्ण परमहंस से हुई भेंट के बाद नटी विनोदिनी का स्वयं से साक्षात्कार हुआ और वह अध्यात्म की राह पर चल पड़ी।

पत्थर लदा ओवरलोड ट्रक जब्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरहरवा : मालदह रेल मंडल अंतर्गत बरहरवा रेलवे स्टेशन के समीप बरहरवा रेल फाटक में गुरुवार की देर रात्रि लगभग 1:00 बजे अवैध पत्थर लदा ओवरलोड छह चक्का 1109 ट्रक पंजीकरण संख्या डबल्यूबी 52ए 7628 रेलवे फाटक पार करने के दौरान पटरियों के बीच फस गया एवं रेलवे द्वारा पैचिंग को भी नुकसान पहुँचा है,लगभग दो से तीन घंटे ट्रक फसे रहने के कारण कई मालवाहक ट्रेन एवं एक्सप्रेस ट्रेन घंटो बाधित हुई, जानकारी मिलने के बाद बरहरवा आरपीएफ इंस्पेक्टर संजीव कुमार दल बल के साथ मौके पर पहुँचे तत्पश्चात जेसीबी बुलवाकर घंटो फसे ट्रक को निकाल लिया। साथ ही वाहन को मौके से जब्त कर वाहन चालक को भी गिरफ्तार कर लिया गया है। जानकारी के अनुसार मामले को लेकर जब्त वाहन के कारण रेलवे की कई ट्रैन घंटो बाधित हुई जिससे नुकसान पहुँची है जिसके आलोक में वाहन को जब्त कर रेलवे एक्ट के तहत अग्रेषित कार्यवाही आरपीएफ द्वारा की जा रही है। ज्ञात हो कि उक्त रेलवे फाटक आपातकाल सेवा एवं छोटे वाहनो के आवागमन के लिए है। इस फाटक से किसी भी प्रकार के भारी वाहन को पार करने पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध है,परन्तु स्थानीय वाहन एवं पत्थर माफियायों व विचौलियों द्वारा मनमाने ढंग से वाहनो की पासिंग कराने की होड़ लगी होती है। वाहनो द्वारा ओवरलोड पत्थर प.बंगाल के तस्करी करने के लिए प्रसाशन की आंखों में धूल झोंककर आवागमन कराया जाता है, जिसमें कुछ स्थानीय विचौलियों की भागीदारी और रेकी गिरोह की होती है।

कल्याण विभाग ने छात्र-छात्राओं के बीच किया साइकिल वितरण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

तालझारी : कल्याण विभाग द्वारा शुक्रवार को प्रखंड कार्यालय परिसर में प्रखंड के विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़ा वर्ग के छात्र छात्राओं के बीच साइकिल वितरण किया गया। साइकिल वितरण का शुभारंभ प्रखंड के पांच विद्यालयों का तालझारी प्रमुख बेरोनिका मुर्मू, प्रखंड विकास पदाधिकारी सालखु हेम्ब्रम, प्रखंड कल्याण पदाधिकारी शशि भूषण राय, शिक्षा विभाग के राजेंद्र कुमार ने संयुक्त रूप से छात्र छात्राओं को साइकिल दिया। इस अवसर पर तालझारी प्रमुख बेरोनिका मुर्मू ने कहा कि साइकिल उपलब्ध होने से दूर दराज के क्षेत्रों से विद्यालय आने वाले छात्र छात्राओं को सुविधा होगी। प्रखंड विकास पदाधिकारी सालखु हेम्ब्रम ने छात्र छात्राओं को प्रतिदिन विद्यालय जाने व मन लगाकर पढ़ने की बात कही। उन्होंने बताया कि प्रखंड के विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत 155 छात्र छात्राओं को साइकिल उपलब्ध कराया जाना है। अभी तक 85 छात्र व 70 छात्राओं के लिये कुल 155 साइकिल उपलब्ध कराया गया है। उपलब्ध कराए गये साइकिल वितरण के बाद शेष बचा हुआ साइकिल उपलब्ध कराया जायेगा। वहीं मौके पर सबंधित विद्यालय के प्रधानाध्यापक व छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

ईस्टर्न रेलवे के जीएम ने साहिबगंज स्टेशन का किया निरीक्षण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : ईस्टर्न रेलवे के जीएम मिलिन्द के देऊस्कर अपने विशेष सैलून से साहिबगंज पहुंचे। जहां रेलवे लाइन मेंटेनेंस के दौरान उपयोग होने वाली उपकरणों के बारे में जानकारी प्राप्त की जहां संबंधित रेल अधिकारियों ने रेलवे ट्रैक पर इस्तेमाल होने वाले उपकरणों का डेमो दिखाया की किस तरह से ट्रैकमैन के दौरान ट्रैक मेंटेनेंस के दौरान इस्तेमाल इस्तेमाल किया जाता है। फिर जीएम ने अमृत भारत के तहत बन रहे नवनिर्मित स्टेशन का निरीक्षण किया साथ ही रेल अधिकारियों ने मैप के जरिए पूरे रेलवे स्टेशन डेमो दिखाकर जानकारी मुहैया कराया। पत्रकारों से बातचीत के दौरान जीएम ने बताया ट्रैफिक व्यवस्था किस प्रकार से काम कर रही है और साहिबगंज रेलवे स्टेशन पर रेलयात्रियो को क्या क्या सुविधाएं उपलब्ध कराई गई है उसका निरीक्षण किया जा रहा है। रेलखंड पर अधिक से अधिक ट्रेन चलाई जा सकें इसको लेकर भी जायजा लिया जा रहा है। कहा कि मालदा रेलमंडल अंतर्गत आने वाले जितने भी रेलवे स्टेशन पर अमृत भारत योजना के तहत सौंदर्यकरण का कार्य चल रहा है सभी जगहों पर संतोषजनक कार्य किए जा रहे हैं जिसे आने वाले दिनों में समय से पूरा कर लिया जाएगा। वही उन्होंने कहा कि अभी तीसरी व चौथी लाइन को लेकर सर्वे किया गया है जिसका रिपोर्ट तैयार किया जा रहा है अगर लगेगा कि मालदा रेलमंडल अंतर्गत आने वाले बरहरवा भागलपुर रेलखंड पर तीसरी व चौथी रेलवे लाइन की जरूरत पड़ेगी तो इसका भी काम जल्द से जल्द शुरू किया जायेगा। वही उन्होंने कहा कि कोरोना काल में जो भी पैसेंजर ट्रेनों को बंद कर दिया गया था उनमें से कई ट्रेनों को फिर से चालू किया गया है और जिन ट्रेनों को अब तक चालू नहीं किया जा सका है उसके लिए रेलवे बोर्ड को प्रस्ताव भेजा गया है। उधर राजमहल तीनपहाड़ रेलखंड पर चलने वाले टिआर पैसेंजर ट्रेन का मुरली हाल्ट रेलवे स्टेशन पर ठहराव फिर से बहाल करने के लिए उनके स्तर से रेलवे बोर्ड नई दिल्ली को पत्राचार किया गया है जहां से निर्देश मिलने के बाद उस ट्रेन का फिर से ठहराव चालू कर दिया जाएगा।

संक्षिप्त खबरें

जिला टास्क फोर्स की हुई बैठक

साहिबगंज: समाहारणालय सभागार में उपायुक्त हेमंत सती की अध्यक्षता में जिला टास्क फोर्स (खनन) की बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में जिले में खनन गतिविधियों को सुव्यवस्थित और पारदर्शी बनाने के लिए महत्वपूर्ण निर्देश दिए गए। उपायुक्त ने सभी अंचल अधिकारियों को जिले में चल रहे सभी माइंस की मापी एक महीने के अंदर करने के आदेश दिए हैं।इसके अलावा, सभी अंचल अधिकारियों को केएमएल फाइल तैयार कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए निर्देशित किया गया है। केएमएल फाइल तैयार करने के कार्य में सभी अनुमंडल पदाधिकारी लीड करेंगे और सुनिश्चित करेंगे कि रिपोर्ट समय पर प्रस्तुत हो। उपायुक्त ने विशेष रूप से स्टोन क्रशर प्लांट के ऑनर्स को चालान दिशानिर्देशों का पालन करते हुए ही चालान जारी करने का निर्देश दिया। चालान जनरेट करने के बाद, यदि कोई स्टोन चिप्स लोडेड वाहन जिला के अधिकार क्षेत्र में 5 घंटे तक पाया जाता है, तो उसके खिलाफ उचित कार्यवाही की जाएगी। उपायुक्त हेमंत सती ने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया है कि वे इन आदेशों का सख्ती से पालन करें और रिपोर्टिंग समय सीमा का ध्यान रखें। वही मौके पर पुलिस अधीक्षक कुमार गौरव, सदर अनुमंडल पदाधिकारी अंगार नाथ स्वर्णकार, जिला वन प्रमंडल पदाधिकारी, जिला खनन पदाधिकारी एवं सभी अंचल पदाधिकारी और अन्य पदाधिकारी गण मौजूद थे।

राजमहल अनुमंडल पदाधिकारी की अध्यक्षता में स्वतंत्रता दिवस को लेकर हुई बैठक

राजमहल: अनुमंडल पदाधिकारी के कार्यालय कक्ष में शुक्रवार को अनुमंडल मुख्यालय में स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाने को लेकर बैठक का आयोजन किया गया। अनुमंडल पदाधिकारी कपिल कुमार के अध्यक्षता में आयोजित बैठक में प्रशासनिक पदाधिकारी सहित शहर के गण्यमान लोग उपस्थित थे। बैठ के दौरान स्वतंत्रता दिवस के आयोजन को लेकर चर्चा की गई, सर्वप्रथम मुख्यालय स्थित महापुरुषों के प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं सभी सरकारी कार्यालय में झंडोतोलन के समय पर चर्चा की गई। इस पर निर्णय लिया गया कि पूर्व वर्ष की भांति ही समय यथावत रहेगा। सभी सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं द्वारा पैरेड निकाला जाएगा। स्वतंत्रता दिवस के एक दिन पूर्व 14 अगस्त को सिंधी दालान परिसर में स्कूली छात्राओं के बीच पेंटिंग, भाषण एवं क्विज प्रतियोगिता का आयोजन होगा। स्वतंत्रता दिवस के दिन नयाबाजार स्थित नगर पंचायत भवन में संध्या 6 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा, जिसमें देशभक्ति, नृत्य सहित अन्य को तीन खंडों में बांटा गया। बैठक के दौरान प्रशासनिक पदाधिकारी एवं प्रत्रकारों के बीच मैत्री मैच के आयोजन पर भी सहमति बनी। बैठक में एसडीपीओ विमलेश कुमार तिवारी, राजमहल बीडीओ उदय कुमार सिंहा, उधवा बीडीओ विशाल पांडे, राजमहल सीओ अशोक सिंह, प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉक्टर उदय टुडू, नगर प्रशासक स्मिता किरण, थाना प्रभारी गुलाम सरवर, निवर्तन अध्यक्ष किताबुद्दीन शेख, उपाध्यक्ष पार्थ कुमार दत्ता, सुधीर घोष, प्रदीप अग्रवाल, पंकज घोष, अनंत कुमार राय सहित अन्य उपस्थित थे।

सविता महतो ने विधानसभा में की सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र निर्माण की मांग

कुकडू: झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र के शून्य काल में विधायक सविता महतो ने कुकडू प्रखंड मुख्यालय में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र निर्माण का मांग किया। इस दौरान विधायक ने सदन पर कहा कि कुकडू को वर्ष 2008 में प्रखंड का दर्जा दिया गया है तथा वर्ष 2009 से कुकडू में आंचल एवं प्रखंड कार्यालय संचालित है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार कुकडू की आबादी लगभग 55 हाजार है परंतु अभी कुकडू की आबादी अनुमानत एक लाख के लगभग है। लगभग 15 वर्ष के बाद भी आज तक कुकडू को पूर्ण प्रखंड का दर्जा नहीं दिया गया है, आजतक कुकडू में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण नहीं हो पाया है जिस कारण आम जनों को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को लेकर काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उन्होंने आसन के माध्यम से सरकार से अपार लोकहित एवं जनहित में कुकडू प्रखंड मुख्यालय में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का अभिलंब निर्माण का मांग किया है।

जर्जर भवन कर रहा बड़ी दुर्घटना होने का इशारा

साहिबगंज: जिला के राजमहल नगर पंचायत क्षेत्र अंतर्गत कई ऐसी भवन हैं जो पूरी तरीके से जर्जर हो चुकी है और इस बरसात के मौसम में इन भवनो का मलबा टूट टूट कर सड़कों पर गिर रहा है आए दिन ऐसी बोहोत सारी दुर्घटनाएँ क्षेत्र में ऐसे जर्जर भवनों के कारण होती रहती है और ऐसी परिस्थिति में एसी भवन जो जर्जर हो चुकी है जिससे जानमाल की क्षति हो सकती है फि लहाल राजमहल के कासिम बाजार ग्रामीण बैंक के नजदीक एक ऐसे ही भवन है जो पूरी तरीके से जर्जर हो चुकी है। जिसका मलबा टूट टूट कर आए दिन सड़कों पर गिरता रहता है। नगर पंचायत राजमहल द्वारा वैसे भवनों के मालिकों को नोटिस देकर उस पर उचित कार्रवाई करनी चाहिए।

फरार चल रहे वारंटी को पुलिस ने गिरफ्तार कर भेजा जेल

तालझारी: थाना क्षेत्र के बांसकोला में छापेमारी कर एक पुराने मामले में फरार चल रहे वारंटी को पुलिस अधिकारी ने गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए वारंटी बांसकोला निवासी प्रमोद कुमार मंडल है। उसे शुक्रवार को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। थानाध्यक्ष अमर मिंज ने बताया कि गिरफ्तार अभियुक्त बांसकोला में वर्ष 2014 के एक मामले में आरोपी था। उसपर न्यायालय की ओर से वारंट निर्गत किया गया था। वारंट निर्गत होने के बाद से अभियुक्त फरार चल रहा था।

एक नजर

लापता युवक अजीत उरांव का शव बरामद

गुमला : गुमला जिला अंतर्गत स्थित घाघरा प्रखंड क्षेत्र के आदर गांव से बीते 5 दिन पूर्व से लापता युवक अजीत उरांव 28 वर्ष का शव लोहरदगा जिला के सेन्हा थाना पुलिस ने घाघरा रांची मुख्य पथ में स्थित कंडरा पतरा से बरामद किया है। शव को बरामद कर पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए लोहरदगा सदर अस्पताल भी भेज दिया है। घटना के संबंध में ग्रामीणों ने बताया कि अजीत 29 जुलाई से लापता था। जिसके बाद से परिवार के अलावे गांव के लोग काफी खोजबीन कर रहे थे। युवक अपने पत्नी ममता देवी से 5 दिन पूर्व घूमने निकला था। जिसके बाद से गायब था। उसके पत्नी ममता के ऊपर जब ग्रामीणों ने दबाव बनाया तो पत्नी ममता ने बताया कि अजीत का हत्या उसने खुद करके कंडरा पतरा में शव को छोड़ दिया है। ममता ने अजीत का हत्या अत्यधिक शराब पिलाकर जब वह पूरा नशा में आ गया तो गला घोटकर कर दी। पत्नी ममता ने यह भी बताया कि लगातार शराब के नशे में मारपीट और गाली गलौज करता था जिससे वह तंग आ गई थी। इसके कारण इस घटना को उसने अंजाम दिया।

घरों में घुसा मूसलधार बारिश का पानी, बढ़ी लोगों की परेशानी

सरिया(गिरिडीह) : शुक्रवार की सुबह से हो रही मूसलाधार वर्षा के कारण सरिया प्रखंड क्षेत्र के बागोडीह गांव स्थित मौनी बाबा चौक के पास जल जमाव हो गया। सड़क पर लगभग दो फीट पानी जम गया। जो धीरे-धीरे अगल-बगल के लोगों के घरों में घुसने लगा। इस दौरान मुंशी मिस्त्री,खूबलाल मिस्त्री,महेश मिस्त्री आदि लोगों के घरों में पानी घुस जाने से लोगों को रहने में परेशानी हो रही है। लोगों की माने तो उनके घर के ग्राउंड फ्लोर के सभी कमरों में लगभग एक फुट पानी भर गया। इस संबंध में इस संबंध में सेवानिवृत्ति रोकड़िया खूबलाल मिस्त्री ने बताया कि उक्त जगह सड़क पर जल जमाव की समस्या पुरानी है। इस समस्या के समाधान के लिए संबंधित अधिकारियों से मांग की जाति रही थी। बाद में जिला परिषद निधि से नाली निर्माण की स्वीकृति हुई। जो वर्तमान में निमार्णाधीन है।

उग्रवादियों का सहयोगी गिरफ्तार, पैसा एवं मोबाइल बरामद

लोहरदगा : उग्रवादी संगठन जेजेएमपी के सक्रिय सदस्य को पचास हजार नगद राशि एवं मोबाइल के साथ एक नामजद आरोपित को सेन्हा थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया है। सेन्हा थाना क्षेत्र के अलौदी पंचायत में अंडा,चाउमीन दुकान संचालक के पास से लेवी का पैसा एवं मोबाइल पहुंचाने की गुप्त सूचना पुलिस अधीक्षक हारीश बिन जमां को मिलते ही उनके निर्देश पर सेन्हा थाना प्रभारी अजित कुमार के नेतृत्व में सूचना सत्यापन करके कार्रवाई की गई। उसी दौरान अलौदी निवासी बौड़ा उरांव का पुत्र सुनील उरांव को पुलिस द्वारा हिरासत में लेकर पूछताछ किया गया, जिसे मामला का खुलासा हुआ कि उग्रवादी संगठन जेजेएमपी का सक्रिय सदस्य फिरोज अंसारी द्वारा सरना बाउंड्री घेराव कार्य में संवेदक लक्ष्मण भगत से एक लाख पचास हजार नगद एवं एक ओप्पो मोबाइल का मांग किया गया था। इससे पूर्व जेजेएमपी संगठन के सक्रिय सदस्य फिरोज अंसारी द्वारा वट्सअप कॉलिंग के माध्यम से गाली गलौज करते हुए जान से मारने की धमकी दी गई थी। इस संदर्भ में थाना प्रभारी ने जानकारी देते हुए बताया कि पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर तथा सेरेंगदाग थाना क्षेत्र के चपरोंग निवासी सनिया भगत के पुत्र लक्ष्मण भगत (36) की शिकायत पर पुलिस कारवाई के दौरान सुनील उरांव को लेवी की राशि एवं मोबाइल के साथ गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करते हुए लोहरदगा जेल भेजा गया।

चुटूपालू घाटी में होगी रोशनी, खराब लाइट तत्काल बदले जाएंगे : डीसी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : रामगढ़ छत्तरमांडू स्थित जिला समाहरणालय के सभागार में शुक्रवार को डीसी चंदन कुमार ने एसपी अजय कुमार की उपस्थिति में जिला स्तरीय सड़क सुरक्षा समिति की बैठक की। बैठक में डीसी एवं एसपी ने जिला स्तरीय सड़क सुरक्षा समिति की पूर्व की बैठक में दिए गए निदेशों के आलोक में किए गए कार्य की समीक्षा की गई। समीक्षा के क्रम में डीसी ने चुटूपालू घाटी में होने वाली सड़क दुर्घटनाओं पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए वर्तमान में घाटी में लगाई गई लाइटों के नियमित रूप से कार्य करने की जानकारी ली। मौके पर डीसी ने हर हाल में घाटी में लगाई गई लाइटों का नियमित रूप से कार्य करना सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। इसके अलावा डीसी ने वाहन जांच अभियान, जागरूकता कार्यक्रमों के आयोजन, ब्लैक स्पॉट चिंहितिकरण आदि को लेकर भी आवश्यक निर्देश दिए।

सड़क के मुख्य मार्ग पर साइन बोर्ड लगाने का निर्देश

डीसी ने जिला परिवहन पदाधिकारी मनीषा वत्स को सड़क सुरक्षा के तहत नियमित रुप से जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को बिना हेलमेट वाहन चलाना व ट्रिपल लोडिंग से होने वाली दुर्घटनाओं को लेकर जागरूक करने व एनएचआई से समन्वय स्थापित करते हुए सड़क के मुख्य मार्ग पर साइन बोर्ड लगाने का निर्देश दिया। बैठक में डीसी ने जिला परिवहन पदाधिकारी मनीषा वत्स को नियमित रूप से वाहन जांच अभियान चलने व अवैध परिवहन पर लगाम लगाने के लिए समय-समय पर विशेष वाहन जांच अभियान चलाने का निर्देश दिए।

सीसीटीवी कैमरा लगाए जाने वाले स्थलों को चिह्नित करने का निर्देश

बैठक के दौरान एसपी अजय कुमार ने हेडक्वार्टर पुलिस उपाधीक्षक चंदन कुमार को जिले में यातायात व्यवस्था सुगम बनाने व दुर्घटनाओं को कम करने के उद्देश्य से सीसीटीवी कैमरा लगाए जाने वाले स्थलों का चिन्हित करने का निर्देश दिया । बैठक में अपर समाहर्ता, अनुमंडल पदाधिकारी, जिला स्तरीय वरीय पदाधिकारियों, अधिकारियों, एनएचएआई के अधिकारियों, कार्यपालक अभियंताओं सहित अन्य उपस्थित थे।

इंसान को मापने का पैरामीटर नहीं : राजेश ठाकुर

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पलामू : कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने शुक्रवार को ह्यएक मुलाकात अपनों के साथ कार्यक्रम के दौरान सतबरवा प्रखंड के कांग्रेसियों से मुलाकात की। इसके उपरांत कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष प्रमोद यादव के आवास पर बैठक हुई। उन्होंने कहा कि प्रत्येक प्रखंड अध्यक्षों के घर पर जाकर उनके सुख-दुख में शामिल हो रहे हैं। उनके आचार और व्यवहार के विषय में जानकारी ले रहे हैं। प्रदेश अध्यक्ष ने पांकी विधानसभा क्षेत्र के कार्यकताओं के द्वारा नये उम्मीदवार की मांग पर कहा कि इंसान को मापने का पैरामीटर नहीं होता है। आप जिनके विषय में बात करेंगे वह आगे चलकर खराब हो सकता है। विधायक या सांसद बनने के बाद किसी के घर का खर्च कोई नहीं चलाता है। आपको साफ-सुथरा एवं स्वच्छ लोगों को चुनना है, ताकि लोगों का कल्याण कर सके। उन्होंने कहा कि हर सुख-दुख में हमेशा आपके साथ रहे ऐसा प्रत्याशी चयन करना है। इससे पहले प्रदेश अध्यक्ष के साथ आवास बोर्ड के अध्यक्ष संजय लाल पासवान, पूर्व कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष मानस सिंहा, झारखंड कांग्रेस पार्टी के सेक्रेटरी रामाशीष पांडे, वरिष्ठ कांग्रेसी मुकेश सिंह को जिला तथा प्रखंड कांग्रेस कमेटी ने स्वागत किया। प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने कहा कि कांग्रेस का यह अभियान है कि प्रत्येक लोगों के घरों पर जाकर उनके साथ उनके परेशानियों को साझा करें। अभी तक 12 जिलों के प्रखंड अध्यक्षों के घरों पर जाकर उनसे मुलाकात कर चुके हैं। उन्होंने बताया कि अध्यक्ष में रहूं या नहीं मुझे यह आइडिया होनी चाहिए कि कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष का कौन सा घर है। इस मौके पर लातेहार कांग्रेस के जिला अध्यक्ष मुनेश्वर उरांव, ओमप्रकाश अमन, पिंटू असलम, उमेश यादव, युगल किशोर राम, अरुण साहू, उप मुखिया उमेश सिंह, अमित साहू, केश्वर परहिया, सकलदीप सिंह, महेंद्र महतो, बीडीसी प्रेमचंद उरांव, उमेश उरांव, अजीत उरांव, मेराज, साबिर, प्रदीप सिंह समेत सैकड़ों लोग बैठक में मौजूद थे।

सोना लूटकांड के आरोपी और पुलिस के बीच फायरिंग

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू) : पलामू जिले में सोना लूटकांड के आरोपी और पुलिस के बीच फायरिंग हुई है। इस मुठभेड़ में लूटकांड के एक आरोपी को गोली लगने के भी सूचना है। हालांकि अपराधी को गोली लगने की पुष्टि नहीं हुई है। घटना के बाद पुलिस ने इलाके के बड़ा सर्च अभियान शुरू किया है। दरअसल गुमला में 30 जुलाई को एक सोना दुकान में लूट का प्रयास हुआ था। पूरे मामले में गुमला के पुलिस अनुसंधान शुरू किया था और सर्च अभियान चला रही थी। पुलिस सोना लूटकांड से जुड़े हुए आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पलामू के चैनपुर थाना क्षेत्र में सर्च अभियान शुरू किया था। सर्च अभियान में पलामू और गुमला पुलिस की टीम शामिल थी। इसी क्रम में चैनपुर के इलाके में सोना लूटकांड के मुख्य आरोपी मोनू सोनी और पुलिस के बीच फायरिंग हुई है। घटना के बाद सदर एसडीपीओ मणिभूषण प्रसाद समेत कई टॉप अधिकारी इलाके में कैंप कर रहे हैं और सर्च अभियान में शामिल हुए। सदर एसडीपीओ मणिभूषण प्रसाद ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि इलाके में छानबीन की जा रही है। दरअसल रांची, जमशेदपुर, गुमला और पलामू समेत कई इलाकों में सोने के लूट हुई है और बड़े पैमाने पर चोरी की घटना हुई है। सभी का तार पलामू में कुख्यात सोना लूट गिरोह से जुड़ा हुआ था। इसी मामले में पलामू पुलिस के अलावा अन्य जिला बल भी सर्च अभियान चला रही थी। आरोपी झारखंड, बिहार, बंगाल, छत्तीसगढ़ और ओडिशा में कई बड़े लूट की घटनाओं को अंजाम दे चुके हैं।

विधायक ने मंदिर परिसर में भवन निर्माण कार्य का किया शिलान्यास

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिल्ली/मुरी : सिल्ली के रुगड़ी टोला स्थित ठाकुर बाड़ी मंदिर में विधायक ने एक कमरे के भवन निर्माण कार्य का शिलान्यास, बीडीओ रेणु बाला, राजा पुष्पेंद्र नाथ सिंह देव, ग्रामीणों एवं आजसू कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में किया। निर्माण कार्य विधायक निधि की राशि से किया जाना है। गौरतलब है कि ठाकुर बाड़ी मंदिर परिसर में एक कमरे का भवन निर्माण को लेकर लंबे समय से मांग की जा रही थीं। विधायक ने कहा कि क्षेत्र की जनता के प्रेम के कारण सिल्ली विधानसभा क्षेत्र में विकास संभव हो पाया है। लोगों के सहयोग से क्षेत्र में तेजी से विकास हो रहा है। पुजा के आयोजन एवं श्रद्धालुओं को परेशानी ना हो इसके लिए मंदिर के सामने भवन का निर्माण कराया जा रहा है। इस मौके पर गूंज के संयोजक जयपाल सिंह, आजसू के केंद्रीय सचिव संजय सिद्धार्थ, प्रखंड अध्यक्ष रविन्द्र करमाली, नगर अध्यक्ष भरत देव साय, विपुल राय, निर्मल मंडल, संतोष कोइरी, वंशी गोस्वामी, गुड्डू गोस्वामी, अनिल गोस्वामी, मामुनि चंद्र समेत ग्रामीण उपस्थित थे।

भाकपा ने मेदिनीनगर प्रखंड कार्यालय में तालाबंदी कर किया प्रदर्शन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पलामू : भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी की सदर अंचल कमेटी की चियांकी शाखा के द्वारा शुक्रवार को सदर मेदिनीनगर प्रखंड सह अंचल कार्यालय में तालाबंदी कर प्रदर्शन किया गया। इस दौरान तीन घंटे तक कार्य ठप रहा। कार्यालय को बाहर से बंद कर मुख्य गेट पर धरना दिया गया। इससे पहले के प्रखंड कार्यालय के समक्ष प्रदर्शन बैरिया चौक से नारबाजी करते हुए भाकपा नेता प्रखंड सह अंचल कार्यालय पहुंचे। भ्रष्ट पदाधिकारी होश में आओ, तेरी मनमानी नहीं चलेगी आदे नारे लगाए गए। मौके पर भाकपा जिला सचिव रुचिर कुमार तिवारी ने कहा कि सदर अंचल और प्रखंड कार्यालय भ्रष्टाचार का अड्डा बन गया है। बिना घूस के कोई काम नहीं हो रहा है। एनएच 75 में प्रभावित दलित, आदिवासियों की जमीन का मुआवजा दलाल एवं दूसरे लोग लेने में लगे हुए हैं और अंचल कार्यालय के कर्मी मूकदर्शक बनकर उनका सहयोग कर रहा है। भाजपा के विधायक और सांसद को आम जनता के कार्यों से कोई लेना-देना नहीं रह गया है। रघुवर सरकार की तरह ही हेमंत सरकार की भी भ्रष्ट पदाधिकारियों एवं अफसरों पर लगाम ढीली पड़ गयी है, जिसे टाइट करने की जरूरत है। हमारी पार्टी ऐसे भ्रष्ट पदाधिकारी पर लगाम लगाना अच्छी तरह से जानती है। मौके पर अखिल भारतीय किसान सभा के जिला अध्यक्ष उमेश सिंह चेरों, अखिल भारतीय नौजवान संघ के जिला सचिव अभय कुमार भुइयां, नगर सचिव सुरेश ठाकुर ने भी संबोधित किया। मौके पर नसीम राईन, सोनू अहमद, करीमन पासवान, पिंटू सिंह, तारा देवी, फुलवा देवी, फूल कुमारी देवी, गजेंद्र राम, मृत्युंजय तिवारी, दिलदार सिंह, उपेंद्र कुमार सिंह, संजय सिंह शाहिद सैकड़ो लोग उपस्थित थे।

गया-शेरघाटी एवं बरवाडीह-चिरिमिरी रेल लाइन को लेकर रेलमंत्री से मिले पलामू सांसद

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पलामू : सांसद विष्णु दयाल राम ने शुक्रवार को नई दिल्ली स्थित रेल भवन में रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से मुलकात की। उन्होंने अपने संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत रेलवे से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा की। कहा कि दो महत्वपूर्ण रेल परियोजनाओं के लंबित रहने के कारण उस क्षेत्र के निवासियों को आवागमन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। सांसद ने कहा कि एक परियोजना गया-शेरघाटी, इमामगंज-डालटनगंज रेलवे लाइन और दूसरी बरवाडीह, चिरिमिरी, अंबिकापुर रेल लाइन निर्माण से संबंधित है। दोनों रेल परियोजना में एक समानता है कि कई किलोमीटर तक रेलवे लाइन का निर्माण हो चुका है। करोड़ों रुपये खर्च भी हो चुके हैं लेकिन वर्षों से उस पर कार्य होना बंद हो गया। इसे पूरा कराया जाए, जिससे न केवल उनके संसदीय क्षेत्र, बल्कि बिहार एवं छत्तीसगढ़ राज्यों के संबंधित जिलों के निवासियों को भी सुविधा होगी। हाल ही में छतीसगढ़ के मुख्यमंत्री ने भी आपसे मुलाकात कर बरवाडीह, चिरिमिरी, अंबिकापुर रेल लाइन के निर्माण का अनुरोध किया है। सांसद ने कहा कि वन्दे भारत ट्रेन-टाटानगर मुरी रांची-लोहरदगा, डालटनगंज, गढ़वा रोड, जपला होते हुए वाराणसी तक चलाया जाता है तो इस रूट पर

यात्री भी मिलेंगे। इस रूट पर वाराणसी के लिए गाड़ी भी कम है तथा जो गाड़ियां हैं भी तो पूरी तरह से भरी जाती है। रांची गढ़वा रोड से सेक्शन का स्पीड भी 100 केएमपीएच तथा गढ़वा रोड डॉस का सेक्शन स्पीड 120 केएमपीएच है। इस रूट पर पड़ने वाले चारों जिले लोहरदगा, लातेहार, पलामू एवं गढ़वा देश के 112 आकांक्षी जिलों में आते हैं, जिनको विकास की मुख्यधारा में जोड़ने की प्रधानमंत्री की महत्वाकांक्षी योजना भी है। सांसद ने कहा कि रांची से पटना जाने के लिए वंदे भारत ट्रेन का परिचालन प्रारम्भ हो गया है, जिसके मार्ग में हजारीबाग, गिरीडीह एवं कोडरमा जिले पड़ते हैं, जो झारखंड राज्य के हैं और रांची-पटना वन्दे भारत ट्रेन से कनेक्ट हो गए हैं। इसलिए वन्दे भारत ट्रेन को टाटानगर मुरी, रांची, लोहरदगा, डालटनगंज, गढ़वा रोड, जपला होते हुए वाराणसी तक चलायी जाये। कोविड 19 के समय से बंद बरवाडीह, चोपन, चुनार पैसेंजर ट्रेन का परिचालन अभी तक प्रारम्भ नहीं हो सका है। सांसद ने कहा कि शक्तिपुंज एक्सप्रेस का मेराल रेलवे स्टेशन पर ठहराव करने की मांग की गयी है। रांची नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस ट्रेन का नगर उटारी (श्री बंशीधर नगर) रेलवे स्टेशन पर ठहराव की मांग काफी दिनों से की जा रही है। रांची-नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस 12453-12454 वाया डालटनगंज होकर सप्ताह में 2 दिन चलती है उसे चार दिन किया जाए। रॉची-नई दिल्ली गरीब रथ ट्रेन 12877-12878 को सप्ताह में तीन दिन चलती है, उसे 6 दिन किया जाए।

संक्षिप्त खबरें

हाथी के आतंक से वन क्षेत्र के ग्रामीणों की जान आफत में, वन विभाग मौन

गुमला : गुमला जिला अंतर्गत स्थित परमवीर अल्बर्ट एक्का - जारी प्रखंड अन्तर्गत पाँच गरीब किसानों के घरों को बीती रात तीन जंगली हाथियों ने क्षतिग्रस्त कर घर मे रखे अनाज को चट कर गया। वहीं सबसे पहले जंगली हाथी श्रीनगर निवासी करमेला लकड़ा, भोंदाईल देवी, फुलमाईत देवी, देवन्ती देवी उसके बाद रेंगारी निवासी लुईस मिंज के घर को बीती रात तीन जंगली हाथियों के क्षतिग्रस्त कर दिया। वहीं घटना की जानकारी मिलने पर जीप सदस्य ने पीड़ित परिवार से मिलकर बन विभाग से हर सम्भव मदद दिलाने की बात कही। वही बृद्ध भोंदाईल देवी के घर मे खाने के लिए चावल नही रहने पर जीप सदस्य ने अपनी ओर से 20किलो चावल दिये साथ ही वन विभाग को ओर से प्राप्त पटाखा एवं टार्च का भी वितरण ग्रामीणों के बीच किया गया। सभी पीड़ित गरीब किसान बन विभाग से मुआवजे की माँग की है।

मिशन समृद्धि संस्था ने किया पौधों का वितरण सह पौधरोपण

मेदिनीनगर (पलामू) : मिशन समृद्धि संस्था ने करीब सौ पौधों का वितरण सह पौधारोपण प्राकृतिक गीत संगीत के साथ किया।मिशन समृद्धि संस्था सालों भर अपने संसाधन के मुताबिक जरूरतमंदों के लिए रोटी, बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा देकर ,महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के क्षेत्र में काम करती आई है। उसी प्रकार प्रकृति और पर्यावरण की सुरक्षा के क्षेत्र में भी काम करना समाज के प्रति अपना कर्तव्य समझती है। इस कार्य में वन पदाधिकारी शंकर श्रीवास्तव की पत्नी आरती श्रीवास्तव उनके पुत्र प्रज्जवल जी और इस कार्य को पूर्णरूपेण सफल बनाने में एक्वेरियम व्यवसायी शेखर संजीव कुमार का योगदान रहा। उन्होंने पौधारोपण की जिम्मेदारी भी ली है। स्वतंत्रता सेनानी नीलकंठ सहाय के आवास पर पौधा वितरण का कार्य किया गया, उनके पुत्र अमित सहाय का भी सहयोग रहा। नागरिकों ने पौधा के संरक्षण का जिम्मा लेते हुए आंवला सागवान गम्हार अनार कटहल पीपल मधुमालती एवं अन्य पौधों को लेते हुए खुशी जाहिर की। सदर थाना मेदिनीनगर और अंबेडकर पार्क में पौधारोपण किया गया। थाना प्रभारी और सभी साथियों ने मिलकर पौधारोपण किया। इप्टा के अध्यक्ष एवं काष्ठ कलाकार प्रेम भसीन उपेन्द्र मिश्रा शैलेन्द्र कुमार प्रेम प्रकाश ने समय देते हुए पौधा वितरण का कार्य किया। प्रेम प्रकाश ने प्रकृति प्रेम के गीत को गाया। पूर्व सैनिक बृजेश शुक्ला जी एवं उनकी पत्नी संजू शुक्ला ने पौधा वितरण से लेकर पौधारोपण तक के कार्य में पूर्ण रुपेण सहयोग प्रदान किया। मिशन के कलाकार सदस्य अमन चक्र आशा शर्मा बैजन्ती गुप्ता वीणा राज रंजीता ममता शिल्पी गोस्वामी संध्या शेखर एवं रेडियो उद्घोषिका एवं संस्था के सदस्य शालिनी श्रीवास्तव ने पौधारोपण कार्य का संचालन किया।

छतरपुर नगर क्षेत्र में डिज्नीलैंड मेला का हुआ शुभारंभ

छतरपुर पलामू : छतरपुर नगर क्षेत्र के बारा स्थित फुलवारी मैदान में शुक्रवार को डिज्नीलैंड मेला का शुभारंभ किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में छतरपुर प्रखंड विकास पदाधिकारी आशीष कुमार साहू ने फीता काटकर मेले का शुभारंभ किया। मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी ने कहा कि मेला मनोरंजन का एक बहुत अच्छा साधन है। ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के लोग मेला में भरपूर मस्ती और मनोरंजन के लिए एकत्रित होते हैं। डिज्नीलैंड मेले के संचालक सुनील यादव ने बताया कि श्याम इंटरप्राइजेज के द्वारा मेला का आयोजन किया गया है। डिज्नीलैंड मेले में बड़े बुजुर्ग और बच्चों के लिए मनोरंजन के कई साधन हैं।

सड़क हादसे में बाइक सवार की मौत

गुमला : गुमला जिला अंतर्गत स्थित सिसई थाना क्षेत्र के बालक मध्य विद्यालय के समीप गुरुवार की देर शाम ऑटो व बाइक की सीधी भिड़ंत में बाइक सवार नईम मिंया (48) की मौके पर ही मौत हो गई। हालांकि उसे बचाने की उमीद से पुलिस अस्पताल ले गया था किन्तु डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। वह मेन रोड सिसई का रहने वाला था। छारदा रोड से वह बाइक से घर लौट रहा था। इसी क्रम में घटना हुई थी। उसे सिर सहित शरीर के कई हिस्सों में गम्भीर चोट आई थी। टक्कर में दोनो वाहनों बुरी तरह से छतिग्रस्त हो गया है, पुलिस रात में ही शव व दोनो वाहन को कब्जे में लेकर थाना ले आई थी, शुक्रवार को शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौप दिया है। वही मृतक के पत्नी सलमा खातून के आवेदन पर पुलिस ने ऑटो चालक बरगांव गांव निवासी बसंत उरांव के पुत्र रंजीत उरांव के विरुद्ध तेज गति से लापरवाही पूर्वक वाहन चलाते हुए बाइक सवार को टक्कर मारने के आरोप में केस दर्ज कर शुक्रवार को उसे जेल भेज दिया।

नेशनल स्पोर्ट्स में डीएवी सिल्ली के छात्र-छात्राओं ने जीता स्वर्ण और रजत पदक

सिल्ली : डीएवी पब्लिक स्कूल बरियातू के द्वारा बिरसा मुंडा फुटबॉल स्टेडियम ,रांची में नेशनल स्पोर्ट्स क्लस्टर (लेवल- 5) एथलेटिक (दौड़) का आयोजन किया गया। जिसमें डीएवी सिल्ली के अंडर-14 के छात्र-छात्राओं ने 100 मिटर तथा 200 मिटर तक के दौड़ में भाग लिया तथा अच्छे प्रदर्शन के साथ 1 स्वर्ण पदक, 5 रजत पदक तथा 2 कांस्य पदक प्राप्त किया। इन छात्र-छात्राओं का चयन अब जोनल लेवल के लिए किया गया है। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका महोदय बी. शरण ने बताया कि हमारे बच्चे बहुत ही कम सुविधाओं के साथ सिर्फ 20 दिनों की तैयारी में यहां तक पहुंचे हैं और आगे भी बहुत अच्छा करेंगे। इस अवसर पर खेल शिक्षक विजय कुमार तथा शिक्षिका मोनालिशा सेनगुप्ता भी बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए उपस्थित थे।

पार्टी को सशक्त बनाने में कार्यकर्ताओं की भूमिका अहम : सयूम अंसारी

खूंटी : जिला के तोरपा प्रखंड में शुक्रवार को कांग्रेस पार्टी का प्रखंड स्तरीय बैठक हुई। प्रखंड अध्यक्ष अजय गुप्ता की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में पार्टी के प्रखंड प्रभारी सयूम अंसारी मुख्य रूप से शामिल हुए। आगामी विधानसभा चुनाव के लिए आयोजित बैठक में प्रखंड प्रभारी ने कार्यकर्ताओं से चुनाव की तैयारी में जुट जाने की अपील करते हुए कहा कि किसी भी राजनीतिक दल को सशक्त बनाने में उसके कार्यकताओं की भूमिका सबसे अहम होती है। चुनाव में पार्टी प्रत्याशियों की जीत की राह कार्यकताओं की मेहनत से ही आसान होती है। उन्होंने कार्यकताओं से एकजुट होकर पार्टी को बूथ स्तर तक सशक्त बनाने की अपील की। जिससे चुनाव में पार्टी प्रत्याशी की जीत की राह आसान हो सके। बैठक में मुख्य रूप से पार्टी के पूर्व प्रत्याशी पुनीत हेंब्रम, सोशल मीडिया जिला कोऑर्डिनेटर सुनीता गोप, कुर्बान खान, जनेश्वर गोप, रिया धान, सलीम टोपनो, फुलरेंज टोपनो, जाउल खान, इमरान खान सहित अन्य प्रखंड एवं पंचायत स्तर के कार्यकर्ता शामिल थे।

जाह्नवी को पसंद नहीं आया ओरी का हेयरस्टाइल

अपने बोल्ड स्टाइल के लिए मशहूर ओरहान अवत्रमणि यानी ओरी ने इंस्टाग्राम पर अपना नया हेयर स्टाइल फ्लॉन्ट किया। इसके साथ ही उन्होंने 9 से 5 जॉब करने वालों पर भी तंज कसा। ओरी के हेयर स्टाइल को जब उनकी बेस्ट फ्रेंड और एक्ट्रेस जाह्नवी कपूर को पसंद नहीं आया, तो बाकी लोगों को कैसे आ सकता है। नेटिजंस ने ओरी को उनके हेयर स्टाइल और नौकरी पर तंज कसने पर ट्रोल किया। ओरहान अवत्रमणि ने इंस्टाग्राम पर अलग-अलग स्टाइल में अपने हेयर लुक को फ्लॉन्ट करती तस्वीरें शेयर कीं। इन तस्वीरों के कैप्शन में उन्होंने लिखा, 'मैं हर शाम चेहरे पर एक लंबी मुस्कान लिए उठता हूं। और मैं निराशा या दुखी महसूस नहीं करता और हां, आप शायद अभी भी 9-5 में काम कर रहे हैंज और मुझे यह सच बहुत बुरा लगता है।' ओरी की इस पोस्ट ने न सिर्फ नेटिजंस का बल्कि दोस्त जाह्नवी कपूर का भी पारा बढ़ा दिया। जाह्नवी कपूर ने ओरी की पोस्ट पर कमेंट किया, 'यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा।' कई लोगों ने जॉब करने वालों पर असंवेदनशीलता और कई लोगों ने उनके हेयर स्टाइल की आलोचना की। ट्रोल्स ने हेयर स्टाइल का मज़ाक उड़ाया। मुर्गे से उनकी तुलना की और कुछ ने उनके फैशन सेंस पर सवाल उठाए। मीम्स और नेगेटिव कमेंट्स अलग-अलग सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर तेजी से फैल गए। एक यूजर ने लिखा, 'स्टाइलिस्ट का नाम? बचने के लिए?' एक अन्य ने कमेंट किया, 'मुर्गे ने ओरी को काट दिया।' एक और यूजर ने लिखा, 'भाई तुम्हारी पूरी पर्सनैलिटी 9 से 5 काम करने वाले लोगों का अपमान करने पर आधारित है। जिन नर्स ने आपको जन्म दिया, वे 9-5 काम करती थीं, लेकिन क्या ही कर सकते हैं।' हालांकि कुछ लोगों ने उनके हेयर स्टाइल को कूल बताया है। बता दें कि ओरहान अवत्रमणि यानी ओरी अपने फैशन सेंस और पब्लिक अपीयरेंस को लेकर चर्चा में रहते हैं। ओरी ने सबको अपने नए लुक से चौंका दिया। नेटिजन्स ने उन्हें ट्रोल करना शुरू कर दिया।

मैं साधारण परिवार से हूं, मेहनत से पहचान बनाई है: कृति सेनन

हाल ही में बालीवुड एक्ट्रेस कृति सेनन ने नेपोटिज्म पर खुलकर अपनी बात रखी थी। उन्होंने कहा था, हर किसी की अपनी जर्नी होती है। अगर मैं एक फिल्मी परिवार से होती, तो मेरे लिए काम करना आसान होता। लोग मुझे पहले से ही जानते और मुझे जल्दी मौके मिलते। लेकिन मैं एक साधारण परिवार से हूं, इसलिए मुझे अपनी मेहनत से अपनी पहचान बनानी पड़ी। बड़े पर्दे का अब जाना माना चेहरा बन चुकी कृति दिल्ली से हैं। उनका जन्म 27 जुलाई 1990 को दिल्ली के पंजाबी परिवार में हुआ। पिता राहुल सेनन एक चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं, तो मां गीता सेनन दिल्ली यूनिवर्सिटी में फिजिक्स की प्रोफेसर। एक्ट्रेस ने अपनी स्कूलिंग दिल्ली पब्लिक स्कूल से की और नोएडा के एक कॉलेज से इंजीनियरिंग की। इसके साथ उन्होंने मॉडलिंग भी की। कृति को पहला बड़ा ब्रेक हिंदी सिनेमा में नहीं बल्कि साउथ सिनेमा में मिला। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत सुपरस्टार महेश बाबू की तेलुगू थ्रिलर फिल्म नेनोक्काडाइन से की थी। बॉलीवुड डेब्यू टाइगर श्रॉफ की फिल्म हीरोपंती से किया। ये फिल्म ब्लॉकबस्टर रही। इसके लिए उन्हें आईफा अवॉर्ड स्टार डेब्यू ऑफ द इयर फीमेल अवॉर्ड भी मिला। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। वह कई फिल्मों में नजर आईं, जिसमें लुका छिपी, बरेली की बर्फी, दिलवाले, राब्ता, हाउसफुल 4, पानीपत, बच्चन पांडे, आदिपुरुष, हम दो हमारे दो, भेड़िया, शहजादा, गणपत, तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया और क्रू जैसी फिल्मों में नजर आईं। सुपर स्टार प्रभास के साथ आदिपुरुष में भी वो जानकी की भूमिका में दिखीं। कृति ने कई स्पेशल सॉन्ग भी किए, जैसे फिल्म स्त्री के आओ कभी हवेली पे, फिल्म कलंक के ऐरा गैराआदि। युवा, ऊर्जावान एक्टर अपने करियर को लेकर जितनी समर्पित हैं उतना ही खुद को बिजनेस वूमन के तौर पर भी साबित कर रही हैं। कृति सेनन का फैशन और क्लोदिंग लेबल भी है, जिसका नाम मिसेज टेकन है। वह इसकी सह-मालकिन हैं। हाल ही में उन्होंने अपना प्रोडक्शन हाउस ब्लू बटरफ्लाई फिल्म्स लॉन्च किया। इस बैनर के तले पहली फिल्म जल्द ही पर्दे पर रिलीज होगी, जिसका नाम दो पत्ती है। इस फिल्म में काजोल लीड रोल में नजर आएंगी। बता दें कि बॉलीवुड की कुछ हस्तियां ऐसी भी हैं जिनको विरासत में एक्टिंग नहीं मिली हैं। उन्होंने अपने बेहतरीन एक्टिंग के दम पर सिनेमा में अपनी पहचान बनाई। कृति सेनन भी ऐसी ही एक्टर हैं, जिन्हें इंडस्ट्री का आउटसाइडर कहा जाता है। आज कृति अपना 34वां जन्मदिन मना रही हैं।

सलमान खान से बेहद डरती हैं जरीन खान

एक्ट्रेस जरीन खान ने कहा कि कैटरीना जैसी दिखने ही उनके करियर के लिए अभिशाप बन गया है।इसके साथ ही उन्होंने ये भी कहा कि वह सलमान खान से बेहद डरती हैं। जरीन खान को यूं तो फिल्मों में 14 साल हो चुके हैं।उन्होंने अपने करियर की शुरुआत फिल्म वीर से की थी। यह फिल्म साल 2010 में रिलीज हुई थी।फिल्म में लोगों ने सलमान संग उनकी जोड़ी काफी पसंद किया था।फिल्म बॉक्स ऑफिस पर भी हिट साबित हुई थी।कैटरीना कैफ जैसी दिखने की वजह से जरीन सनसनी बन गई थीं।हालांकि, कैटरीना जैसी दिखना ही करियर के लिए सबसे बड़ी कमियों में से एक बन गई।जरीन खान हाल ही में भारती सिंह और हर्ष लिम्बाचिया के पॉडकास्ट शो में शामिल हुईं। इस दौरान उन्होंने अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ को लेकर ढेर सारी बातें शेयर की।इस दौरान उन्होंने बताया कि वह क्यों अपने करियर के पीक प्वॉइंट पर फ्लॉप एक्ट्रेस बन गईं। जरीन खान ने इस बातचीत में खुलासा करते हुए कहा, फिल्म वीर के बाद उनकी जिंदगी बद से बदतर बन गई. मेरी बहुत आलोचना हुई। यह फिल्म मेरे लिए जिंदगी बदलने वाली पल थी। शुरुआत में मुझे बहुत खुशी हुई कि मेरी तुलना कैटरीना कैफ से की जा रही है, लेकिन इंडस्ट्री में चीजें बदतर होती चली गईं। मैं जहां मोटी और थुलथुली थी , वहीं कैटरीना कैफ बेहद सुंदर और अच्छी पर्सनैलिटी वाली थीं। ऐसे में उनसे मेरी तुलना होती तो मैं फूले नहीं समाती थी। जरीन आगे बताती हैं कि उनका चहकना कैसे शांत हुआ और खुद को खोई हुई महसूस करने लगीं। उन्होंने कहा, मेरा ये चहकना तब शांत हो गया, जब इंडस्ट्री में इसे गलत तरीके से लिया गया। यह सब उल्टा पड़ गया। बाद में मैंने खुद को इंडस्ट्री में एक खोई हुई बच्ची जैसी महसूस करने लगी। इसके साथ ही मैं झिझक भी महसूस करने लगी थी। मैं वाकई में बहुत लोगों को नहीं जानती थी, लेकिन उन्हें लगने लगा कि मैं घमंडी हूं क्योंकि सलमान खान ने मुझे लॉन्च किया है। हालांकि, ऐसा कुछ नहीं था। जरीन खान ने आगे बताया कि आलोचना ने उन पर इतना बुरा असर डाला कि एक समय ऐसा भी आया जब वह घर पर ही रहना पसंद करती थीं। उन्होंने कहा, एक समय ऐसा भी था जब मैं अपने घर से बाहर निकलने से भी डरती थी क्योंकि लोग मेरे कपड़ों पर कमेंट करते थे। यह तुलना बहुत नेगेटिव तरीके से होती थी। मुझे इतने सारे नाम दिए गए कि एक समय तो मैं घर पर ही बैठना चाहती थी। लोगों ने मुझे फ्लॉप घोषित कर दिया था।जरीन खान आगे अपना दर्द शेयर करते हुए कहती हैं कि कैटरीना संग मेरी तुलना होने का नतीजा ये हुआ कि मुझे काम मिलना ही बंद हो गया। लोगों ने अपने दरवाजे मेरे लिए बंद कर दिए। इसका नजीता ये हुआ कि मेरे पास बिल भरने के भी पैसे नहीं बचे। मेरी लाइफ एकदम खराब हो गई। जरीन खान ने दावा किया कि फिल्म वीर के बाद काफी दिनों तक वह बेराजगार बैठी रहीं। उनके पास काम नहीं था। काफी दिनों बाद उन्हें फिल्म रेडी में कैरेक्टर ढीला गाने के बाद उनकी सोच बदल गई। इस गाने को करने के बाद उन्हें जो भी काम मिल रहा था, वो उसे बिना सोचे समझे करती चली गईं। मैं एक अमीर घराने से नहीं आती, मैं अपने घर की अकेली कमाने वाली हूं, इसलिए उस समय, मैं अपना घर चलाने के लिए नौकरी करना चाहती थी। इतने मुश्किल समय में फिर उनके हाथ हेट स्टोरी लगी, लेकिन यह उनके जीवन का बहुत ही अजीब समय था। वह बिना कुछ समझे इसे ज्वॉइन किया था। बता दें कि जरीन खान को आखिरी बार 2021 की फिल्म हम भी अकेले तुम भी अकेले में देखा गया था। बता दें कि जरीन खान की तुलना अक्सर कैटरीना कैफ से की जाती थी।

करीना अपनी मां की तरह ईसाई धर्म करती हैं फॉलो

बॉलीवुड एक्ट्रेस करीना कपूर को लेकर हमेशा से लोग जानना चाहते हैं कि वो आखिर किस धर्म का पालन करती हैं। क्योंकि उनका जन्म हिंदू फैमिली में हुआ है और उनकी शादी मुस्लिम परिवार में हुई है। अब तैमूर-जेह की नैनी ने खुलासा कर दिया है कि करीना किस धर्म को मानती हैं। करीना कपूर अपने बच्चों का खास ध्यान रखती हैं। हर कोई उनकी परवरिश की तारीफ करता है। करीना अपने दोनों बच्चों को डिसिप्लेन में रखती हैं। इस बारे में खुद एक्स नैनी ललिता डी सिल्वा ने बताया है। एक इंटरव्यू में ललिता डी सिल्वा ने करीना कपूर के बारे में बात की। उन्होंने कहा- करीना अपने बच्चों से बहुत प्यार करती हैं। वो बहुत ही डिसिप्लेन में रहती हैं और इसके पीछे की वजह उनकी मां बबीता है। ललिता डी सिल्वा ने आगे कहा- करीना कपूर अपनी मां की तरह ईसाई धर्म फॉलो करती हैं। वो मुझसे चर्च में गाए जाने वाले भजन को बजाने के लिए कहती थीं। उन्हें ये बहुत पसंद है। ललिता ने आगे बताया कि वो अपने बच्चों को हर धर्म के बारे में सिखाती हैं। वो कई बार मुझसे इक ओंकार बजाने के लिए भी कहती थीं। वो अपने परिवार में होली से लेकर ईद तक हर त्योहार को बहुत ही धूमधाम से मनाती हैं। वर्कफ्रंट की बात करें तो करीना कपूर के पास कई प्रोजेक्ट्स हैं। वो जल्द ही द बकिंगम मर्डर में नजर आने वाली हैं। ये फिल्म 13 सितंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। वो आखिरी बार फिल्म क्रू में कृति सेनन और तब्बू के साथ नजर आईं थीं। बता दें कि करीना हमेशा किसी ना किसी वजह से सुर्खियों में बनी रहती हैं। उनकी फिल्मों का तो फैंस को इंतजार रहता ही है साथ ही उनके बच्चों तैमूर और जेह के बारे में भी लोग जानना चाहता हैं। पब्लिक में जहां तैमूर शांत नजर आते हैं तो वहीं जेह मस्ती करते हुए दिखते हैं। करीना के बच्चों का क्यूट अंदाज देखकर फैंस भी खूब उन्हें पसंद करते हैं।

शोस्टॉपर के तौर पर रैंप पर शानदार वापसी की सोनाक्षी ने

हाल ही में बालीवुड एक्ट्रेस सोनाक्षी सिन्हा और जहीर इकबाल अपने हनीमून के लिए फिलीपींस गये थे। उन्होंने दिल्ली में इंडिया कॉउचर वीक में डिजाइनर डॉली जेके कलेक्शन के लिए शोस्टॉपर के तौर पर रैंप पर शानदार वापसी की। अभिनेता जहीर इक़बाल से शादी के बाद सोनाक्षी का यह पहला रैंप वॉक है। सोनाक्षी के कई वीडियो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं और फ़ैशन की दुनिया में उनकी वापसी पर प्रशंसक प्यार बरसा रहे हैं। वॉक के दौरान सोनाक्षी सीक्विन थाई-हाई स्लिट गाउन में बेहद खूबसूरत लग रही थीं। उन्होंने अपनी मिलियन-डॉलर स्माइल बिखेरी, अपने लहराते घुंघराले बालों को खुला छोड़ा। रैंप पर सोनाक्षी पहले से कहीं ज्यादा कॉन्फिडेंट दिखीं। उन्होंने अपने चमकीले गुलाबी गाउन को केप और हील्स के साथ स्टाइल किया। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस इवेंट के दौरान सोनाक्षी ने जहीर के साथ अपनी शादी के बारे में भी खुलकर बात की। उन्होंने कहा, मुझे सच में लगता है कि सिंपल दुल्हनें फिर से वापस आने वाली हैं। ईमानदारी से कहूं तो मुझे अपनी शादी का पूरा आनंद लेने की आजादी मिली क्योंकि मैं बहुत सहज थी। और मैं सांस लेने और घूमने में सक्षम थी। मैंने खुद पर कोई तनाव नहीं लिया। इसलिए मुझे लगता है कि सिंपल लेकिन खूबसूरत दुल्हन, यह निश्चित रूप से आने वाला ट्रेंड होगा। शादी समारोह के बाद इस जोड़े ने मुंबई में एक शानदार रिसेप्शन का आयोजन किया, जिसमें सलमान खान समेत इंडस्ट्री के तमाम सितारे शामिल हुए। शादी के बाद से ही जहीर और सोनाक्षी अपनी नई-नवेली जिंदगी का भरपूर लुत्फ उठा रहे हैं। इस दौरान दोनों कई जगहों पर घूमे और कई बार डिनर डेट का भी लुत्फ उठाया। सोनाक्षी सिन्हा के वर्क फ्रंट की बात करें तो सोनाक्षी जल्द ही खिलाड़ी 1080 में नजर आएंगी। यह कबीर सदानंद द्वारा निर्देशित एक एक्शन फिल्म होगी। इस फिल्म में सोनाक्षी मुख्य भूमिका में नजर आएंगी। इसके अलावा वह मल्टीस्टारर फिल्म हाउसफुल 5 में नजर आएंगी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक सोनाक्षी इस फिल्म में कैमियो रोल में नजर आएंगी।

जुनैद खान की फिल्म महाराज की सक्सेस पार्टी, एक्स वाइफ के संग दिए पोज

अभिनेता आमिर खान के बड़े बेटे जुनैद खान भी अब फिल्मी दुनिया में कदम रख चुके हैं। जुनैद खान की डेब्यू फिल्म 'महाराज' थी। जो 22 जून को ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई थी। इसी के चलते अब आमिर खान ने बेटे के लिए एक पार्टी होस्ट की, जिसकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। फिल्म का निर्माण आमिर करेंगे और इसकी शूटिंग जापान में होने की खबर है। इसके अलावा जुनैद का नाम खुशी कपूर के साथ एक रोमांटिक कॉमेडी फिल्म में भी सामने आ रहा है। आमिर खान ने बेटे की सफलता के लिए अब घर पर सक्सेस पार्टी का आयोन किया, जिसकी एक झलक डायरेक्टर सिद्धार्थ ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर शेयर की है और कैप्शन में लिखा, गुड टाइम्स और हार्ट इमोजी भी बनाया। हालांकि, रिलीज से पहले फिल्म को लेकर कई तरह की कंट्रोवर्सी भी देखने को मिली, लेकिन जब ओटीटी पर आई तो दर्शकों ने खूब प्यार भी दिया। फोटो में आमिर खान की भी झलक देखने को मिली, जिसमें कैप्शन दिया गया, जीवन भर उनका फैन रहूंगा। तब भी उनसे प्यार करता था। अब और हमेशा उनसे और भी ज्यादा प्यार करता रहूंगा। सिद्धार्थ पी मल्होत्रा द्वारा निर्देशित फिल्म महाराज में जयदीप अहलात, शालिनी पांडे और श्रावरी स्पेशल भी नजर आए। महाराज की कहानी एक रियल ऐतिहासिक अदालती मामले पर आधारित है, जिसमें एक साहसी पत्रकार एक प्रतिष्ठित नेता के अनैतिक आचरण पर सवाल उठाता है। महाराज के बाद अब जुनैद खान जल्द ही साई पल्लवी के साथ सह-कलाकार के रूप में निर्देशन और अभिनय करेंगे।

बीते 6 साल से दर्शकों को निराश कर रहे हैं आमिर खान

लगातार ब्लॉकबस्टर फिल्म देने वाले बालीवुड के सुपर स्टार आमिर खान बीते 6 साल से दर्शकों को निराश कर रहे हैं। हालांकि, अब लगता है कि आमिर खान एक बार फिर से नई शुरुआत करने के लिए एकदम तैयार हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार आमिर खान एक नई रणनीति के साथ वापसी करने का प्लान किया है।

सूत्रों के हवाले से बताया गया है कि आमिर अपनी एक साल में एक फिल्म की रणनीति पर वापस जाने प्लान किया है। वह साल में कम से कम एक फिल्म जरूर करने की योजना बना रहे हैं। वह इसके लिए कमर कस चुके हैं। रिपोर्ट में आगे बताया गया है कि आमिर खान ने फिल्मों से ब्रेक लेकर यह महसूस किया कि बतौर अभिनेता और एक स्टार के रूप में वे ऐसा काम नहीं कर पा रहे हैं जैसा कि वे करते आ रहे हैं। भले ही क्रिसमस पर उनकी कई फिल्में रिलीज होंगी। जैसे जेनेलिया डिसूजा के साथ 'सितारे जमीन पर' और वीर दास की 'हैप्पी पटेल' फिल्में हैं। हालांकि वे फिर से एक्टिंग की दुनिया में हाथ आजमाना चाह रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, परफेक्शनिस्ट के पास भी अपने एक्टिंग करियर के लिए भी कई बड़ी योजनाएं हैं। वह पूरे दिल से एक बार फिर से एक्टिंग की दुनिया में उतरना चाहते हैं। हालांकि, उनकी स्टैटजी पहले से एकदम जुदा होगी।

याद दिला दें कि आमिर खान की फिल्में बीते 6 साल से बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह से पीट रही हैं। उनका ये हाल साल 2018 से अब तक जारी है। साल 2018 में आई फिल्म 'ठग्स ऑफ़ हिंदोस्तान' जो एक भारी बजट में बनी काफी महंगी फिल्म थी, लेकिन ये दर्शकों को इम्प्रेस करने में चूक गई थी। इस फिल्म में आमिर खान के साथ अमिताभ बच्चन और कैटरीना कैफ जैसे सितारे भी थे। इस फिल्म के रिलीज के बाद आमिर खान की 'लाल सिंह चड्ढा' भी 2022 में बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचाने में नाकाम रही। इस फिल्म के फ्लॉप होने के बाद आमिर खान ने फिल्मों से ब्रेक लेना ही उचित समझा। बीते दो साल से आमिर खान की बतौर एक्टर कोई फिल्म नहीं आई है। बता दें कि आमिर खान बतौर प्रोड्यूसर एक के बाद एक फिल्में प्रोड्यसर कर रहे हैं।

आमिर खान के प्रोडक्शन हाउस में बनी हालिया रिलीज 'लापता लेडीज' को हर किसी को पसंद आई। इस फिल्म के आमिर खान की एक्स वाइफ किरण राव के डायरेक्ट किया था। अब उनके प्रोडक्शन में 'सितारे ज़मीन पर', 'लाहौर 1947' और 'हैप्पी पटेल' है। मालूम हो कि 59 साल के हो चुके आमिर खान ने फिल्म इंडस्ट्री में कई सारे गोल्स स्थापित किये हैं। बॉक्स ऑफिस पर ताबतोड़ कमाई करने का रिकॉर्ड उन्हीं के नाम है। बॉक्स ऑफिस पर 100 करोड़, 200 करोड़ और 300 करोड़ रुपये के क्लब की शुरुआत करने का श्रेय उन्हीं की फिल्मों को जाता है। 'गजनी', '3 इडियट्स', 'पीके', 'दंगल', 'लगान' और 'दिल चाहता है' जैसी उनकी फिल्मों की तूती अभी भी बॉक्स ऑफिस पर बोलती है।

पेरिस ओलंपिक: भारतीय हॉकी टीम ने ऑस्ट्रेलिया को हराकर इतिहास रचा

कोलंबो (एजेंसी)। पेरिस (ईएमएस)। भारतीय हॉकी टीम ने पेरिस ओलंपिक में ऑस्ट्रेलिया को अंतिम ग्रुप मैच में हराकर इतिहास रच दिया। भारतीय टीम ने ऑस्ट्रेलिया को ओलंपिक में 52 साल बाद हराया है। भारत ने ऑस्ट्रेलिया को एक रोमांचक मुकाबले में 3-2 से हराया। भारत ने इससे पहले ऑस्ट्रेलिया को म्यूनिख ओलंपिक 1972 में हराया था।

भारत और ऑस्ट्रेलिया की हॉकी टीमें पेरिस ओलंपिक के ग्रुप बी में हैं। वहीं बेल्जियम इस ग्रुप में अपने चारों मैच जीतकर पहले नंबर पर है। ऑस्ट्रेलिया 9 अंक के साथ दूसरे और भारत 7 अंक लेकर तीसरे नंबर पर है। वहीं अर्जेंटीना के भी 7 अंक हैं. लेकिन वह गोल अंतर में पीछे होने के चलते चौथे नंबर पर है। आयरलैंड और न्यूजीलैंड अपने चारों मैच हारा है और खिताबी रेस से बाहर हैं।

भारत ने इस मैच में तेज शुरुआत की। ऑस्ट्रेलिया ने 10वें मिनट में जोरदार अटैक किया। उसे पेनाल्टी कॉर्नर भी मिला लेकिन भारत ने गोल नहीं होने दिया।

भारत ने पहले क्वार्टर के 12वें मिनट में गोल किया। यह मैच का पहला गोल अभिषेक ने ललित के शॉट पर रिबाउंड पर किया। भारत ने इसके साथ ही 1-0 की बढ़त बना ली है।

भारत ने 13वें मिनट में एक गोल और किया। ये गोल पेनाल्टी कॉर्नर पर कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने किया। पहले क्वार्टर का खेल खत्म होने पर भारत 2-0 से आगे रहा। यह पेरिस ओलंपिक में पहला मौका है, जब भारत ने किसी टीम के खिलाफ पहले क्वार्टर में दो गोल किए हैं।ऑस्ट्रेलिया ने 19वें मिनट में पेनाल्टी कॉर्नर हासिल किया. हालांकि, वह गोल नहीं कर सका.

ऑस्ट्रेलिया ने 25वें मिनट में गोल कर दिया है। उसने इस गोल के साथ ही भारत की बढ़त कम कर दी है। ऑस्ट्रेलिया के लिए यह गोल थॉमस क्रेग ने किया। मैच का दूसरा क्वार्टर खत्म हुआ तो भारत 2-1 से आगे रहा।

तीसरे क्वार्टर की शुरुआत भी तेज हुई है। पहले ही मिनट में ऑस्ट्रेलिया बॉल लेकर भारतीय टीम में पहुंचा, पर गोल नहीं कर पाया. इसके एक मिनट बाद ही भारत ने पेनाल्टी कॉर्नर हासिल कर लिया. ऑस्ट्रेलिया ने भारत के पेनाल्टी कॉर्नर को बचाने में गलती की। हरमनप्रीत का शॉट ऑस्ट्रेलिया के डिफेंडर के पैर से लगा और भारत को पेनल्टी स्ट्रोक मिल

गया। हरमनप्रीत ने इस पर गोल कर भारत को 3-1 से आगे कर दिया। यह हरमनप्रीत सिंह का पेरिस ओलंपिक में छठा गोल है। ऑस्ट्रेलिया के गोवर्स ने अंतिम क्वार्टर में एक गोल किया पर भारत ने मुकाबला 3-2 से जीत लिया।

पेरिस ओलंपिक: मनु 25 मीटर पिस्टल इवेंट के फाइनल में पहुंची

-आज जीत सकती हैं तीसरा पदक

पेरिस (एजेंसी)। भारत की महिला निशानेबाज मनु भाकर अब पेरिस ओलंपिक में अपने तीसरे पदक के करीब पहुंच गयी हैं। मनु महिलाओं की 25 मीटर पिस्टल इवेंट के फाइनल में पहुंच गयी हैं। ऐसे में उनके पास शनिवार को अपने पदकों की हैट्रिक पूरी करने का अच्छा अवसर है।

मनु ने रैपिड राउंड की शुरुआत शानदार तरीके से करते हुए 25 मीटर पिस्टल क्वालीफिकेशन रैपिड राउंड में दूसरा स्थान हासिल किया। मनु ने सीरीज 2 में कुल 98 का स्कोर बनाया। वहीं पहली सीरीज में उन्होंने 100 का स्कोर किया थी।

मनु ने प्रेसिजन में पहली सीरीज में कुल 97 का स्कोर किया है। वहीं दूसरी सीरीज में 98 स्कोर कर शीर्ष 8 में जगह के प्रयास किये। इसके बाद तीसरी सीरीज में 99 अंक हासिल करते हुए कुल 294 अंकों के साथ मनु तीसरे स्थान पर रही। इस भारतीय निशानेबाज ने तीसरे और फाइनल सीरीज में 97 अंक हासिल किए। 8 शॉट में 10 अंक जबकि दो में 8 और 9 अंक हासिल किए जबकि ईशा को 581 अंक लेकर 10 वां स्थान मिला। मनु ने इससे पहले 10 मीटर एयर पिस्टेल में पहला कांस्य पदक जीता था और इसके बाद वो 10 मीटर एयर पिस्टल के मिक्स्ड इवेंट में सरबजोत सिंह के साथ मिलकर एक और कांस्य जीतने में सफल रहीं। वहीं अब 25 मीटर इवेंट में वो फिर पदक जीत सकती हैं.

वहीं रैपिड राउंड में भारत की ही ईशा सिंह ने पहली सीरीज में कुल 97 अंक हासिल किए। उन्होंने 10 में से 7 शॉट 10 का लगाया और 3 शॉट में 9 अंक हासिल किए। वहीं दूसरी सीरीज में इस भारतीय निशानेबाज ने 100 में से कुल 96 अंक हासिल किए। 10 में से उन्होंने 6 में परफेक्ट 10 का स्कोर किया जबकि 4 में 9 अंक हासिल किए। वह प्रेसिजन में 10वें स्थान पर रही।

आईसीसी ने चैंपियंस ट्रॉफी के लिए सात करोड़ डॉलर का बजट मंजूर किया

दुबई (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने पाकिस्तान में होने वाली चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए बजट की घोषणा कर दी है। आईसीसी की कोलंबो में जो सालाना बैठक के बाद ये घोषण की गयी है। आईसीसी ने चैंपियंस ट्रॉफी के आयोजन के लिए करीब सात करोड़ डॉलर के बजट को मंजूरी दी है। बीसीसीआई सचिव जय शाह की अध्यक्षता वाली आईसीसी की वित्त और वाणिज्य कमेटी ने इस बजट को मंजूरी दी। इसमें अनुमानित बजट करीब सात करोड़ डॉलर का है और केवल 45 लाख डॉलर अतिरिक्त खर्च के लिए आवंटित किए गए हैं। वहीं कुल बजट और अतिरिक्त खर्च रकम को लेकर आईसीसी की पिछली बैठक में ये अटकलें लगायी जा रहीं थी कि अगर भारतीय टीम टूर्नामेंट के लिए पाकिस्तान नहीं आती है तो बैकअप कोष रखा जाएगा। इसके लिए 45 लाख डॉलर काफी कम बताये जा रहे हैं। वहीं पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने अपने कार्यालय और साथी सहकर्मियों को सलाह दी है कि वे चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भारत के अपनी टीम भेजने को लेकर कोई भी बयान नहीं दें। पीसीबी प्रमुख ने इस मुद्दे पर खुद और अन्य अधिकारियों के लिए एक नीति अपनाई है कि इस पर टिप्पणी नहीं की जाए और आईसीसी को ही इसे संभालने दिया जाए। इसलिए ही हाल के दिनों में नकवी या किसी अन्य बोर्ड अधिकारी की ओर से इस बारे में कोई टिप्पणी या बयान नहीं आया है कि अगर भारत अपनी टीम पाक नहीं भेजता है तो क्या होगा।

हार से सिंधु का लगातार तीसरा ओलंपिक पदक जीतने का सपना टूटा

पेरिस (एजेंसी)। भारतीय महिला बैडमिंटन स्टार पीवी सिंधु ओलंपिक में तीसरी बार पदक जीतने का रिकार्ड बनाने में असफल रही हैं। सिंधु को प्री-क्वार्टर फाइनल में हार का सामना करना पड़ा है। उन्हें चीन की हे बिंग जियाओ के हाथों दो गेमों में 21-19 और 21-14 से लगातार हार का सामना करना पड़ा है। ये पहली बार बार है जब सिंधु ओलंपिक से खाली हाथ वापस लौट रही हैं। इससे पहले उन्होंने दो ओलंपिक खेले थे और दोनों में ही पदक जीते थे। सिंधु अगर पेरिस ओलंपिक में पदक जीत जाती, तो वह ओलंपिक के इतिहास में लगातार तीन पदक जीतने वाली पहली खिलाड़ी जाती पर हार के साथ ही उनका ये सपना टूट गया। सिंधु ने ओलंपिक में दो पदक जीते हैं। उन्होंने रियो ओलंपिक 2016 में रजत और टोक्यो ओलंपिक 2020 में कांस्य पदक जीता था।

सिंधु और बिंग जियाओ के खिलाफ मुकाबला

तकरीबन एक घंटे तक चला। मुकाबले में सिंधु की शुरुआत अच्छी नहीं रही। उन्हें कुछ गलतियां की वहीं जियाओ ने कुछ सटीक स्मैश लगाए जिससे चीन की खिलाड़ी 5-1 की बढ़त बनाने में सफल रही। सिंधु को कोर्ट पर मूवमेंट में दिक्कत हो रही थी और उन्होंने कुछ शॉट बाहर मारकर चीन की खिलाड़ी को 7-2 की बढ़त बनाने का मौका दिया। भारतीय खिलाड़ी ने इसके बाद कुछ अच्छे अंक जुटाकर वापसी की कोशिश की, लेकिन जियाओ ब्रेक तक 11-8 से आगे रहीं। सिंधु ने चीन की खिलाड़ी पर दबाव बनाया।

तीन बेहद करीबी अंक मिलने से सिंधु 12-12 पर बराबरी हासिल करने में सफल रहीं। बिंग जियाओ ने सिंधु के शरीर पर स्मैश के साथ 19-17 की बढ़त बनाई। भारतीय खिलाड़ी ने लगातार दो अंक के साथ स्कोर 19-19 किया। चीन की खिलाड़ी ने लाइन पर शॉट मारकर एक गेम अंक हासिल किया और फिर लंबी रैली के बाद क्रॉस कोर्ट स्मैश के साथ पहला गेम 30 मिनट में 21-19 से जीत लिया।

दूसरे गेम में भी बिंग जियाओ ने अपने स्मैश से सिंधु को परेशान किया और लगातार छह अंक के साथ 8-2 की बढ़त बनाकर मुकाबला जीत लिया।

पेरिस ओलंपिक : अंकिता और धीरज क्वार्टर फाइनल में पहुंचे

पेरिस। भारतीय तीरंदाज अंकिता भकत और धीरज बोमादेवरा की जोड़ी यहां पेरिस ओलंपिक की मिश्रित स्पर्धा के क्वार्टर फाइनल में पहुंच गयी है। अंकिता और धीरज की जोड़ी ने इस मुकाबले में 5-1 से इंडोनेशियाई जोड़ी को हराया। अंकिता और धीरज की भारतीय जोड़ी ने इस मुकाबले में शानदार खेल दिखाते हुए पहला सेट 37-36 से जीता और 2 अंक लेकर शुरुआत की। वहीं दूसरे सेट में मुकाबला कठिन रहा और इंडोनेशियाई जोड़ी ने 38-38 स्कोर के साथ बराबरी पर ला दिया। भारतीय जोड़ी को यहां 1 अंक मिला और उसका स्कोर तीन हो गया। इसके बाद अगले दौर में अंकिता और धीरज ने 38-37 से जीत हासिल करते हुए 2 अहम अंक हासिल कर अंतिम आठ में जगह बनायी।

उथप्पा बोले, सचिन तेंदुलकर और सौरव जैसी सफल रहेगी शुभमन और यशस्वी की जोड़ी

नई दिल्ली। पूर्व क्रिकेटर रोबिन उथप्पा ने शुभमन गिल और यशस्वी जायसवाल की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा है कि श्रीलंका के खिलाफ जिस प्रकार टी20 सीरीज में शुभमन और यशस्वी ने पारी की शुरुआत करते हुए जमकर रन बनाये। उससे ये लगने लगा है कि ये जोड़ी भी आने वाले समय में सचिन तेंदुलकर और सौरव गांगुली जैसी जोड़ी की तरह ही सफलताएं हासिल करेगी। रोहित शर्मा और विराट कोहली के टी20 से संन्यास लेने के बाद माना जा रहा है कि रोहित और विराट का विकल्प भी ये दोनो ही बनेंगे। इस जोड़ी ने टी20 सीरीज में पहले छह ओवरों में 74 रन बनाए और टीम के लिए जबरदस्त आधार तैयार किया। इससे पहले इस जोड़ी ने जिम्बाब्वे में भी काफी अच्छा प्रदर्शन किया था। तब शुभमन ने टीम की कप्तानी भी की थी। उथप्पा ने कहा कि शुभमन और जायसवाल की केमिस्ट्री और खेलने की शैली को देखकर ही उन्हें गांगुली और तेंदुलकर की जोड़ी की याद आ जाती है। इस जोड़ी ने 136 पारियों में 49.32 की औसत 6609 रन बनाए। उन्होंने 21 शतकीय साझेदारियां और 23 अर्धशतकीय साझेदारियां की, जिसने क्रिकेट में शुरुआती जोड़ियों के लिए एक उच्च मानक स्थापित हुआ। उथप्पा ने कहा कि जिस तरह से शुभमन और यशस्वी मैदान पर खेलते हुए दिखते हैं उससे सचिन-गांगुली की यादें ताजा हो गई हैं।

भारत के लिए ओलंपिक खेलों की मेजबानी आसान नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत साल 2036 में ओलंपिक मेजबानी करना चाहता है पर ये इतना आसान नहीं है। ओलंपिक में दुनिया भर के खिलाड़ी भाग लेते है। ऐसे में इसके आयोजन और इंतजामों पर हजारों करोड़ रुपये का खर्च आता है हालांकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन और खेल मंत्री मनसुख मंडाविया की देखरेख में एक कमेटी ओलंपिक आयोजन के सपने को पूरा करने की तैयारियां कर रही है। अगर सब कुछ ठीक रहा, तो भारत 2036 ओलंपिक मेजबानी हासिल करने के लिए दावेदारी पेश करेगा। वहीं एक रिपोर्ट के अनुसार, पेरिस ओलंपिक 2024 की मेजबानी पर 10 बिलियन डॉलर (करीब 83,000 करोड़ रुपये) का खर्च आने की उम्मीद है। हालांकि यह बस अनुमान है। दरअसल, ओलंपिक खेलों में स्टेडियम और खेल

सुविधाओं के विकास के साथ पर्यटन, सुरक्षा सहित अन्य सुविधाओं के विस्तार पर मोटा खर्च आता है। ऐसे में छोटे देशों के लिए इसकी मेजबानी करना संभव नहीं होता है।

वहीं अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति के अनुसार, खेलों की मेजबानी से अधिक नौकरियां पैदा होती हैं। मेजबान देश में पर्यटन को बढ़ावा मिलता है और शहर को आर्थिक लाभ मिलता है। कम से कम 1960 के बाद से हर ओलंपिक मेजबान ने योजना से ज्यादा खर्च किया है। हर ओलंपिक खेलों का कैलेंडर लगभग सात साल पहले तय किया जाता है, चाहे उस समय की आर्थिक स्थिति कैसी भी हो। हालांकि, कुल खर्च और कमाई के बारे में पारदर्शिता बहुत कम है।

एक रिपोर्ट के अनुसार, लंदन ओलंपिक 2012 पर 16.8 बिलियन डॉलर (89,000 करोड़), रियो ओलंपिक 2016 पर 23.6 बिलियन डॉलर (1.55 लाख करोड़) और टोक्यो ओलंपिक 2020 पर 13.7 बिलियन डॉलर (1.04 लाख करोड़ रुपये) खर्च हुए थे। इन आंकड़ों को देखकर ये साफ है कि जिस देश को भी ओलंपिक की मेजबानी करनी होगी उसे एक मोटी रकम खर्च करनी होगी। इसलिए भारत को मेजबानी करनी है, तो एक मोटी रकम जोड़नी होगी। सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण को ध्यान में रखते हुए भारत ओलंपिक की मेजबानी के लिए एक मजबूत दावेदार है। लेकिन भारत के सामने कई चुनौतियां होंगी और एक मजबूत रणनीति तैयार करनी होगी।

ओलंपिक में विजेताओं को इसबार पदक के साथ ही अन्य पुरस्कार भी मिल रहे

पेरिस। पेरिस ओलंपिक में इस बार पदक विजेताओं को इस बार इनाम के साथ ही एक विशेष सुनहरा बॉक्स भी दिया जा है। इसमें अतिरिक्त पुरस्कार हैं जो सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को दिये जा रहे हैं। पेरिस में इस बार खेलों के लिए विशिष्ट पोस्टर को पेश करके पिछले ओलंपिक की तुलना में उल्लेखनीय रूप से अलग और आकर्षक रवैया अपनाया गया है। यह पोस्टर कलाकार उगो गैटोनी ने विशेष रूप से लिए तैयार किया है। उगो को विश्व स्तर पर अपनी मनमोहक शैली के लिए जाना जाता है। इस कलाकार ने पोस्टरों के शानदार डिजाइन तैयार करने में ही छह महीने लगा दिये थे। आयोजकों का विजेताओं को गिफ्ट में पोस्टर देने का यह अनोखा कदम पेरिस 2024 को पिछले ओलंपिक से अलग बनाता है। 2020 टोक्यो ओलंपिक में एथलीटों को पीले, हरे और नीले फूलों के गुलदस्तों से सम्मानित किया गया जबकि रियो 2016 में पदक विजेताओं को आधिकारिक लोगो के मॉडल प्राप्त हुए। वहीं लंदन 2012 में पदक विजेताओं को फूल दिये गये। ये अतिरिक्त पुरस्कार शहर की गहरी सांस्कृतिक विरासत और जीवन में एक बार होने वाले ओलंपिक खेलों की प्रकृति के मिश्रण का प्रतीक है। पोडियम पर पहुंचने वालों को पोस्टर के अलावा ओलंपिक शुभंकर का स्टफ टॉय भी दिया जा रहा है। पिछले वर्षों में खेलों का आधिकारिक शुभंकर कोई न कई जानवर रहा है पर इस बार फीजियन टोपी को शुभंकर बनाया गया है। यह हेडवियर फ्रांस में लोकप्रिय है और यह उनकी स्वतंत्रता का प्रतीक है। शुभंकर का यह अनूठा संस्करण प्रमुखता से चित्रित रंगों के साथ स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक विजेताओं की उपलब्धियों का जश्न मनाता प्रतीत होता है। पदक के रंग को प्रदर्शित करते हुए उसे शुभंकर के पेट पर सिल दिया गया है, उसके जूतों को सुशोभित करता है, और उसकी पीठ पर 'ब्रावो' लिखे अक्षरों में हाइलाइट किया गया है।

धोनी ने बुमराह को बताया पसंदीदा गेंदबाज, बोले बल्लेबाज बताना मुश्किल

कोलंबो (एजेंसी)। रांची (ईएमएस)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी ने कहा है कि उनके पसंदीदा तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह है। धोनी ने एक कार्यक्रम के दौरान कहा कि बुमराह अभी के दौर के उनके सबसे पसंदीदा गेंदबाज हैं और वह उनकी गेंदबाजी देखने का आनंद उठाते हैं। वहीं धोनी ने कहा कि उनके लिए अपना पसंदीदा गेंदबाज चुनना आसान है, क्योंकि वह बुमराह हैं पर बल्लेबाज चुनना कठिन है, क्योंकि इतने सारे अच्छे बल्लेबाज खेल रहे हैं। उन्होंने कहा कि इसका मतलब यह नहीं है है कि हमारे गेंदबाज अच्छा नहीं कर है पर उनका मानना है कि इतने सारे बल्लेबाजों में से एक को चुनना कठिन है। वह किसी एक को नहीं चुनना चाहते। उम्मीद है कि वे सभी रन बनाते रहेंगे।

बुमराह की प्रशंसा आज दुनिया के कई दिग्गज क्रिकेटर करते हैं। उन्होंने भारतीय टीम के मुख्य तेज गेंदबाज के तौर पर अपनी जिम्मेदारी अच्छे से निभाई है। टी20 विश्वकप में वह अर्शदीप सिंह के बाद दूसरे सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज रहे। उन्होंने 8 मैचों में कुल 15 विकेट लिए पर उनका इकॉनमी रेट सबसे बेहतर रहा। उन्होंने पूरे विश्व कप टूर्नामेंट के दौरान केवल 4.17 के इकॉनमी रेट से रन दिये जबकि टी20 क्रिकेट में ऐसा करना काफी कठिन माना जाता है।

श्रीलंका के खिलाफ विराट कोहली समेत अन्य खिलाड़ियों ने जानें क्यों बांधी है काली पट्टी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम शुक्रवार को श्रीलंका के खिलाफ मैच खेलने मैदान में उतरी है। रोहित शर्मा और विराट कोहली लगभग नौ महीने बाद एक दिवसीय मैच खेलने मैदान में उतरे है। वनडे जर्सी में खिलाड़ियों को देखकर फैंस काफी खुश है। इस दौरान खिलाड़ी बांह पर काली पट्टी बांधे नजर आए है।

दरअसल खिलाड़ियों ने कोलंबो में श्रीलंका के खिलाफ पहले एकदिवसीय मैच के दौरान पूर्व सलामी बल्लेबाज और कोच अंशुमान गायकवाड़ को श्रद्धांजलि दी है। बीसीसीआई ने कहा, 'टीम इंडिया पूर्व भारतीय क्रिकेटर और कोच अंशुमान गायकवाड़ की याद में आज काली पट्टी बांध रही है, जिनका बुधवार को निधन हो गया था।'

गायकवाड़ ने कैंसर से जंग के बाद बुधवार (जुलाई) को वडोदरा में अंतिम सांस ली। गायकवाड़ का अंतरराष्ट्रीय करियर एक दशक से भी ज्यादा लंबा रहा, जिस दौरान उन्होंने 40 टेस्ट मैच और 15 वनडे मैचों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। अपनी ठोस तकनीक और दृढ़ निश्चय के लिए जाने जाने वाले, उन्होंने तेज गेंदबाजी के कुछ बेहतरीन दौरों का सामना करते हुए दृढ़ निश्चय दिखाया, उस समय जब सुरक्षात्मक उपकरण बहुत कम थे।

उच्चतम स्तर के बल्लेबाज के रूप में, श्री गायकवाड़ को सबसे ज्यादा 1976 में जमैका में खेली गई उनकी 81 रनों की साहसिक पारी के लिए याद किया जाता है, जहां उन्होंने कठिन पिच पर क्रूर गेंदबाजी आक्रमण का डटकर सामना किया था, तथा 1983 में जालंधर में पाकिस्तान के खिलाफ खेली गई 201 रनों की पारी के लिए याद किया जाता है, जहां उन्होंने 671 मिनट तक बल्लेबाजी की थी। उनका घरेलू रिकॉर्ड भी शानदार रहा, उन्होंने 200 से अधिक प्रथम श्रेणी मैचों में भाग लिया, जिसमें उन्होंने 34 शतकों और 47 अर्द्धशतकों सहित 12,000 से अधिक रन बनाए।

अपने खेल के दिनों के बाद भी गायकवाड़ ने भारतीय क्रिकेट की सेवा करना जारी रखा। उन्हें 1997 में मुख्य कोच नियुक्त किया गया और अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने टीम को उल्लेखनीय सफलताएँ दिलाईं। उनके मार्गदर्शन में भारत ने 1998 में शारजाह में त्रिकोणीय टूर्नामेंट में विजय हासिल की तथा 1999 में नई दिल्ली में पाकिस्तान के खिलाफ टेस्ट मैच में अनिल कुंबले ने ऐतिहासिक 10-74 रन बनाए।

बीसीसीआई अध्यक्ष रोजर बिन्नी ने इसे भारतीय क्रिकेट के लिए बहुत बड़ी क्षति बताया। +अनुषुमान गायकवाड़ का निधन भारतीय क्रिकेट के लिए बहुत बड़ी क्षति है। खेल के प्रति उनका समर्पण, लचीलापन और प्यार बेमिसाल

था। वह सिर्फ एक क्रिकेटर ही नहीं थे, बल्कि कई लोगों के लिए एक गुरु और दोस्त भी थे। क्रिकेट समुदाय उन्हें बहुत याद करेगा और उनके योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा। मेरी संवेदनाएँ और प्रार्थनाएँ उनके परिवार और प्रियजनों के साथ हैं, जो इस क्षति से उबर रहे हैं।'

श्रीलंकाई टीम को खेल के हालातों को समझना होगा : जयसूर्या

कोलंबो। श्रीलंकाई क्रिकेट टीम के अंतरिम कोच सनथ जयसूर्या ने कहा कि उनकी टीम के खिलाड़ियों को जीत दर्ज करने के लिए खेल के प्रति जागरुकता बढ़ानी होगी। जयसूर्या के अनुसार उनकी टीम भारत के खिलाफ टी20 सीरीज में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पायी और उसने एक के बाद एक विकेट खोये। उनके बल्लेबाजों ने कई बार अच्छी स्थिति में होने के बाद लगातार विकेट खोये जिससे टीम को 0-3 से हार का सामना करना पड़ा है। जयसूर्या ने कहा, 'मुझे टीम में प्रतिबद्धता की कमी नहीं दिखती पर उन्हें दबाव से बेहतर तरीके से निपटना होगा। उन्हें मैच के हालातों को लेकर अपनी समझ बेहतर करनी होगी। हम इस हार की जिम्मेदारी ले रहे हैं। आप इससे दूर नहीं जा सकते। उन्होंने कहा, 'जब तक उन्हें इस बात का एहसास होगा हमें तब तक उन्हें विश्वास और समर्थन देते रहना होगा। जयसूर्या ने कहा कि बल्लेबाजों को लगातार छक्के लगाने की जरुरत नहीं है क्योंकि हमारे मैदान बड़े है और चौके तथा दो रन दौड़कर लेने से भी स्कोर बना जाता है। उन्होंने कहा, 'जब आप पावर हिटिंग के बारे में बात करते हैं, तो मुझे नहीं लगता कि आपको उसकी जरुरत है। अगर आप पर्याप्त चौके और पर्याप्त दो रन लेते हैं, तो आपको वह स्कोर मिल जाता है जिसकी आपको जरूरत है। ऐसे में आप छक्के मारे बिना भी काम पूरा कर सकते हैं। इस पूर्व दिग्गज हरफनमौला ने कहा कि खिलाड़ियों को टी20 श्रृंखला जैसे खराब प्रदर्शन के बाद आलोचना स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए। साथ ही कहा कि सभी खिलाड़ियों को इस प्रकार के हालातों का सामना करना पड़ता है।

डर नाम की कोई चीज राहुल गांधी के अंदर नहीं : पप्पू यादव

नई दिल्ली । कांग्रेस सांसद और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का चक्रव्यूह वाला बयान काफी चर्चा में है। अब राहुल गांधी ने पोस्ट में लिखा कि भाजपा के लोगों को उनका चक्रव्यूह भाषण पसंद नहीं आया और ईडी के लोगों ने

उन्हें बताया है कि छापेमारी की योजना बन रही है। राहुल गांधी के पोस्ट पर बिहार की पूर्णिया सीट से सांसद पप्पू यादव ने कहा कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) एक पॉकेट की संगठन बन चुकी है। यह पूंजीपति और उद्योगपतियों का संगठन है। ईडी पर भरोसा नहीं किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि शरद पवार के लिए अलग कानून है और अजित के लिए अलग। नीतीश कुमार के लिए पहले अलग कानून था, अब अलग हो गया है। चंद्रबाबू नायडू और जगन के लिए अलग कानून हो गया है। स्वाभाविक है कि राहुल गांधी विपक्ष की मजबूत आवाज हैं। उन्होंने ईडी की छापेमारी की बात कही है, तब इसका मतलब है कि उन्हें इसकी खबर है। राहुल गांधी हमेशा मरने के लिए तैयार रहते हैं। डर नाम की कोई चीज उनके अंदर नहीं है। उनके परिवार ने मौत को बेहद करीब से देखा है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी हजारों किमी बिना किसी सुरक्षा के जनता के बीच चलते हैं। इसलिए न ही उन्हें किसी संस्था से डर लगता है और न ही किसी व्यक्ति से। जो ईमानदार होता है उसे किसी चीज से डर नहीं लगता है। राहुल गांधी संविधान और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं।

राउ आईएएस कोचिंग हादसे की जांच सीबीआई को सौंपी

नई दिल्ली । दिल्ली हाईकोर्ट ने 2 अगस्त को राउ आईएएस कोचिंग हादसे की जांच सीबीआई को सौंप दी है। साथ ही सेंट्रल विजिलेंस कमेटी के अधिकारी को जांच की निगरानी करने के निर्देश दिए। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने कहा कि लोगों को जांच पर शक न हो, साथ ही हादसे की गंभीरता, सरकारी कर्मचारियों के भ्रष्टाचार में शामिल होने की संभावना के चलते फैसला लिया गया है। कुटुंब ट्रस्ट की याचिका पर दिल्ली हाईकोर्ट ने मामले की सुनवाई की। दिल्ली के राउ आईएएस कोचिंग के बेसमेंट में स्थित लाइब्रेरी में पानी भरने से 27 जुलाई को तीन स्टूडेंट्स की मौत हो गई थी। इसके पहले कोर्ट ने दिल्ली पुलिस को फटकार लगाकर कहा था कि आप सड़क से गुजर रहे व्यक्ति को कैसे अरेस्ट कर सकते हैं। आपको माफी मांगनी चाहिए। पुलिस का सम्मान तब होता है, जब आप अपराधी को गिरफ्तार करते हैं और निर्दोष को छोड़ देते हैं। अगर आप निर्दोष को गिरफ्तार कर दोषी को छोड़ देते हैं, तब यह दुख की बात है। अच्छा हुआ, आपने पानी का चालान नहीं काटा। इसके बाद दिल्ली पुलिस ने माफी मांगी।

हिमाचल में संकट का दौर...आठ स्कूली बच्चे लापता , समेच गांव के 34 लोग लापता

शिमला । हिमाचल प्रदेश में बादल फटने से भारी तबाही हुई है। शिमला, कुल्लू और मंडी जैसे तीन इलाकों में बादल फटने से कई लोगों की मौत हुई और हादसे में 50 लोग लापता हैं। अब समेज गांव के आठ स्कूली बच्चों के लापता होने की खबर है। लापता बच्चों में सात लड़किया और एक छात्र शामिल है। लापता हुए सभी छात्र बैडमिंटन और वॉलीबॉल के खिलाड़ी हैं। स्कूल के प्रिंसिपल अरविंद ने कहा कि लापता छात्रों में 12वीं क्लास के हैं, 4 मैट्रिक और 6वीं और 9वीं कक्षा के एक-एक छात्र शामिल है। ये सभी छात्र स्थानीय निवासी थे। ये सभी बैडमिंटन और वॉलीबॉल खिलाड़ी थे। प्राकृतिक आपदा से जुझ रहे हिमाचल में शुक्रवार सुबह भूकंप के हल्के झटके महसूस हुए। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र के मुताबिक, शुक्रवार को हिमाचल प्रदेश के लाहौल स्पीति में भूकंप के झटके महसूस हुए। रिक्टर स्केल पर इसकी तीव्रता 3.2 की रही। हालांकि, इसमें किसी तरह के जानमाल का कोई नुकसान नहीं हुआ। रामपुर के समेच गांव के 34 लोग लापता हैं, इसमें 18 महिलाएं शामिल हैं। वहीं, मंडी के रामबन गांव तक जाने वाले सभी रास्ते क्षतिग्रस्त हैं। जगह जगह झरने बह रहे हैं। मलबा-कीचड़ और चट्टानें राहत और बचाव दलों को हर एक कदम पर चुनौती दे रहे हैं।

बिहार में बिजली गिरने से 24 घंटे में 12 लोगों की मौत, सीएम नीतीश ने किया मुआवजे का ऐलान

पटना । बिहार में भारी बारिश के बीच आकाशीय बिजली गिरने से 12 लोगों की मौत हो गई है। आधिकारिक जानकारी के मुताबिक, बिहार के चार जिलों में पिछले 24 घंटों में बिजली गिरने से 12 लोगों की जान गई है। मुख्यमंत्री कार्यालय के अनुसार, गया में वज्रपात की चपेट में आकर पांच मौतें हुई हैं। जबकि जहानाबाद में 3 और नालंदा एवं रोहतास में दो-दो लोगों की जान गई है। बता दें कि मौसम विभाग के पूर्वानुमान के मुताबिक, बिहार में 2 अगस्त को बादल छाए रहेंगे और कुछ जगहों पर गरज के साथ हल्की से मध्यम बारिश हो सकती है। वहीं, न्यूनतम तापमान 27 डिग्री और अधिकतम तापमान 33 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान है। राज्य के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने आकाशीय बिजली गिरने की घटना पर संवेदना व्यक्त की और प्रत्येक मृतक के परिजनों को 4 लाख रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की है। सीएम ने लोगों से आपदा प्रबंधन विभाग की सलाह का पालन करने का भी आग्रह किया। फरवरी में राज्य विधानसभा के बजट सत्र के दौरान प्रस्तुत नवीनतम बिहार आर्थिक सर्वेक्षण (2023-24) में कहा गया है कि राज्य में 2022 में बिजली गिरने से संबंधित 400 मौतें हुई हैं। सबसे ज्यादा मौतें गया (46), भोजपुर (23), नवादा (21), बांका (21), औरंगाबाद (20) और नालंदा और कैमूर में 18-18 मौते हुई हैं। सर्वेक्षण में यह भी कहा गया है कि बिहार ने 2022-23 में आपदा प्रबंधन के लिए 430.92 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। जिसमें सबसे बड़ा हिस्सा, 285.22 करोड़ रुपये बिजली गिरने और डूबने जैसी स्थानीय आपदाओं के लिए समर्पित हैं।

छेड़छाड़ के आरोपी सेना के जवान को कोर्ट मार्शल ने किया बरी

नई दिल्ली। यहां की सैन्य अदालत ने एक अधिकारी की बेटी से छेड़छाड़ के आरोपी जवान को बरी कर दिया है। आरोपी सिपाही सिग्नल कोर से है और उस अधिकारी से जुड़ा हुआ था। जो दिल्ली के एक नागरिक क्षेत्र में रह रहा था। अदालत ने अपने फैसले में कहा कि अदालत ने पाया कि आरोपी सिग्नलमैन दोषी नहीं है। मामले का पीठासीन अधिकारी कर्नल रैंक का अधिकारी है और उनके द्वारा सुनाया गया फैसला अभी सेना के वरिष्ठ अधिकारियों की पुष्टि के अधीन है। अधिकारी की बेटी से कथित छेड़छाड़ का मामला 2019 में सामने आया था, जिसके बाद जवान को कोर्ट मार्शल ने 11 जुलाई को वह जवान 10 साल ज्यादा वक्त तक अधिकारी का सहायक रहा था। महिला द्वारा जवान पर लगाए गए आरोपों के खिलाफ अगस्त 2019 में मामला शुरू हुआ था और 11 जुलाई को कोर्ट मार्शल ने अपना फैसला सुना दिया है।आर्मी कोर्ट ने फैसले का कारण बताते हुए कहा कि अभियोजन पक्ष और बचाव पक्ष द्वारा उनके समक्ष पेश किए सबूतों पर सावधानीपूर्वक विचार और जांच करने बाद ये निष्कर्ष निकाला है कि अभियोजन पक्ष आरोपी के खिलाफ आरोप साबित करने में सक्षम नहीं है। वहीं, इस मामले में कथित घटना के तीन महीने बाद महिला ने आधिकारिक तौर पर सैनिक के खिलाफ आरोप लगाए थे, क्योंकि वह एंट्रेंस एग्जाम के लिए अपनी पढ़ाई पर फोकस करना चाहती थी। सैनिक के वकील आनंद कुमार ने कहा कि यह मामला प्रशासनिक मुद्दों के कारण थोड़ा लंबा खिंच गया, लेकिन आखिरकार सैन्य अदालत से न्याय मिला है।

इलेक्टोरल बॉन्ड मामले में एसआईटी जांच की मांग वाली याचिका खारिज

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने चुनावी बॉन्ड दान के जरिए से कॉरपोरेट्स और राजनीतिक दलों के बीच कथित तौर पर लेन-देन की व्यवस्था की विशेष जांच दल द्वारा जांच की मांग करने वाली याचिकाओं को खारिज कर दिया। फरवरी में सुप्रीम कोर्ट ने चुनावी बॉन्ड योजना को रद्द कर दिया था, जो राजनीतिक दलों को गुमनाम फंडिंग की अनुमति देती थी, और एसबीआई को तुरंत चुनावी बॉन्ड जारी करना बंद करने का आदेश दिया था।

2027 तक 42 अरब डॉलर के निवेश का लक्ष्य, भारत और जापान ट्रेड पर जयशंकर ने कहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। सेंटर फॉर एयर पावर स्टडीज में 7वें जसजीत सिंह मेमोरियल लेक्चर में विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने कहा कि विश्व मामलों को आकार देने में बढ़ते राष्ट्रवाद की भूमिका को भी पहचाना जाना चाहिए। दुनिया के उन हिस्सों में जहां पुराना वैश्वीकरण मंत्र अभी भी प्रचलित है। सच्चाई यह है कि यह कई विकसित समाजों में निराशा को दर्शाता है जहां खराब भू-राजनीतिक और भू-आर्थिक विकल्पों के कारण जीवन की गुणवत्ता खराब हो गई है। चाहे आप इसे पसंद करें या न करें लेकिन निकट भविष्य में दुनिया में राष्ट्रवादी काफी बढ़ जाएगा। यह जरूरी है कि भारत वैश्विक घटनाओं का मूल्यांकन करे और हमारे लिए राष्ट्रीय हित में जो अच्छा है उसकी गणना की जाए। ज्यादातर मामलों में जो भारत के लिए अच्छा है वह दुनिया के लिए भी अच्छा होता है। इसी के चलते

ग्लोबल साउथ के साथ हमने मजबूत संबंध विकसित किया है और उन्होंने हम पर विश्वास जताया है।

पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंधों पर विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने कहा कि हम आज मानते हैं कि हमारे इतिहास को देखते हुए, पड़ोसियों के आकार को देखते हुए, हमारे पड़ोसियों और हमारे समाजशास्त्र को देखते हुए, इन रिश्तों को संभालना आसान नहीं है। भारत के बारे में हमारे कई पड़ोसियों की भावनाओं में राजनीतिक उतार-चढ़ाव होंगे। ये ऐसी वास्तविकताएं हैं जिन्हें हमें समय-समय पर स्वीकार करना होगा। हमारे कुछ पड़ोसियों में ऐसे अवसर आए हैं जब हम राजनीतिक बन गए हैं मुद्दा यह है कि हम वास्तव में कुछ बहुत गंभीर स्थितियों को कम करने में कामयाब रहे हैं... हमारे पड़ोस में, हमने दिखाया है कि हमारे पास खड़े होने, अपने हितों को आगे बढ़ाने, अन्य देशों के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता है, और अक्सर मैं कहूंगा- उन्हें संसाधन दें और निश्चित रूप से उनसे बेहतर प्रदर्शन करें, इसलिए मुझे लगता है कि हमारा रिकॉर्ड बहुत ठोस है।

एस जयशंकर ने कहा कि मैं सहमत हूं कि जापान के साथ व्यापार बढ़ाने की गुंजाइश है। हमारा लक्ष्य 2027 तक 5 ट्रिलियन येन है। हम लक्ष्य के आधे रास्ते पर हैं। भू-अर्थशास्त्र में बदलाव के साथ, हमें जापान के साथ अधिक मेहनत करनी होगी... जापान के रणनीतिक लोग भी समझते हैं कि उन्हें भारत के साथ काम करना है और हमारे हित बहुत समान हैं।

मणिपुर में जागी शांति की उम्मीद... मेइती और हमार समुदाय के बीच सहमति

नई दिल्ली । मणिपुर के हालात सामान्य होने का इंतजार पूरा देश कर रहा है। वहीं राज्य और केंद्र भी तमाम उपायों के माध्यम से कानून व्यवस्था की स्थिति को बहाल करने की कोशिशों में लगी हुई हैं। यह कोशिशें रंग लाईं जब मेइती और हमार समुदायों के प्रतिनिधियों ने मणिपुर के हिंसा प्रभावित जिरीबाम जिले में शांति बहाली के लिए हर संभव प्रयास करने पर सहमति जाहिर की। एक जिले में शांति पर बात बनना कोई कम उपलब्धि नहीं है। इसलिए देश को उम्मीद है कि जिरीबाम जिले में शांति स्थापित होने के बाद पूरे राज्य में भी शांति और समृद्धि आएगी। बता दें कि अधिकारियों ने बताया है कि असम के कछार में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के एक प्रतिष्ठान में हुई बैठक में दोनों पक्षों के बीच यह समझौता हुआ। बैठक का संचालन जिरीबाम जिला प्रशासन, असम राइफल्स और सीआरपीएफ ने किया। बैठक में जिरीबाम जिले के थाडौ, पैते और मिजो समुदायों के प्रतिनिधि मौजूद थे। बैठक के बाद इन समुदायों के प्रतिनिधियों द्वारा जारी संयुक्त बयान में कहा गया, ''बैठक में यह संकल्प लिया गया कि दोनों पक्ष सामान्य स्थिति बहाल करने तथा आगजनी और गोलीबारी की घटनाओं को रोकने के लिए हर संभव प्रयास होगा। दोनों पक्ष जिरीबाम जिले में कार्यरत सभी सुरक्षा बलों को पूर्ण सहयोग देने वाले है। बताया जा रहा है कि अगली बैठक 15 अगस्त को होगी।

वायनाड हादसा- गांव और जंगलों में मिल रहीं लाशें, अब तक 308 की हुई मौत

वायनाड (एजेंसी)। वायनाड में हुए भूस्खलन हादसे में अब तक 308 लोगों की मौत हो चुकी है। रेस्क्यू ऑपरेशन में गांव और जंगलों से लाशे मिल रहीं हैं। यहां युद्ध स्तर पर राहत एवं बचाव कर चल रहा है। रेस्क्यू में जुटे बचावकर्मियों को अब तक 195 शव ही मिले हैं। बाकी, लोगों की मौत की पुष्टि उनके बॉडी पाट्र्स से की गई है। यानी 105 लोगों के शव का कोई ना कोई हिस्सा बरामद हुआ है, जिससे उनकी मौत कंफर्म हुई है।

सेना ने हादसे के बाद जो बेली ब्रिज बनाया है, इससे 25 एंबुलेंस मुंडकई पहुंचाई जाएंगी। मिट्टी में दबे शवों का पता लगाने के लिए दिल्ली से ड्रोन आधारित रडार शनिवार को आने वाला है। तलाशी अभियान में 6 कुत्तों की भी मदद ली जा रही है। आज तमिलनाडु से 4 और कुत्ते लाए जाएंगे। 40 टीमें लोगों के रेस्क्यू में जुटे हुए हैं। रेस्क्यू ऑपरेशन को प्रभावी बनाने के लिए सर्च क्षेत्र को 6 अलग-अलग भागों में बांटने की बात चल रही है। इनमें से पहला क्षेत्र अट्टामाला और आरणमाला से बना है। दूसरा क्षेत्र मुंडकई, तीसरा क्षेत्र पुंजरीमट्टम, चौथा क्षेत्र वेल्लरमाला विलेज रोड, पांचवां क्षेत्र जीवीएचएसएस वेल्लरमाला और छठा इलाका नदी का बहाव क्षेत्र है। हर टीम के साथ तीन स्थानीय लोग और एक वन विभाग का कर्मचारी भी शामिल किया जाएगा। इसके अलावा चलियार नदी के आसपास के 8 पुलिस स्टेशनों के

पुलिसवाले और तैराकी में माहिर लोग भी खोज करने जा रहे हैं। इसके अलावा हेलिकॉप्टर के जरिए भी सर्च ऑपरेशन चलाया जा जा रहा है। तटरक्षक और नौसेना के साथ वन विभाग के कर्मचारी उन जगहों पर भी खोज करने जा रहे हैं, जहां शवों के बहकर आने की संभावना है। बता दें कि वायनाड में पहली लैंडस्लाइड 30 जुलाई की सुबह तड़के करीब 2 बजे हुई। इसके बाद सुबह करीब 4.10 बजे फिर एक बार लैंडस्लाइड हुई। इसके साथ ही तीसरी बार फिर लैंडस्लाइड हुई। लैंडस्लाइड में वायनाड के 4 गांव मलबे के ढेर में तब्दील हो गए, जिनमें से लोगों को निकालने के लिए लगातार रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया जा रहा है। रेस्क्यू ऑपरेशन की प्रगति के साथ मरने वालों का आंकड़ा लगातार बढ़ता जा रहा है।

राज्यपाल सम्मेलन: एक समृद्ध अनुभव होगा और कामकाज में मदद मिलेगी : राष्ट्रपति मुर्मू

नई दिल्ली (एजेंसी)। । दिल्ली में शुक्रवार से शुरू हुई दो दिनी राज्यपाल कांफ्रेंस राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने राज्यपालों को संबोधित किया। सम्मेलन में राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा कि सम्मेलन का विचार-विमर्श प्रतिभागियों के लिए एक समृद्ध अनुभव होगा और उन्हें अपने कामकाज में मदद मिलेगी। मुर्मू ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, गरीबों और वंचित वर्गों के विकास, युवा विकास, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक खेती सहित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की।

इस कार्यक्रम में केंद्र द्वारा तय एजेंडे पर किए गए काम की समीक्षा होगी। एमपी के विधानसभा चुनाव के पहले राज्यपालों की भूमिका में बदलाव कर केंद्र ने अंतर्राज्यीय मुद्दों को लेकर हर राज्यपाल को पड़ोसी राज्य के साथ बैठक करने के निर्देश दिए थे। इसके चलते प्रदेश के राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ सहित कुछ राज्यों के साथ बैठक भी की है। बैठक में एमपी के सीमावर्ती जिलों और दूसरे राज्यों के एमपी से सटे सीमावर्ती जिलों की

समस्याओं, बड़ी परियोजनाओं को लेकर चर्चा हुई थी।

अब दिल्ली में हो रही राज्यपाल कांफ्रेंस में इन मसलों पर केंद्र की ओर से रिपोर्ट ली जाएगी और अब तक की गई बैठकों की समीक्षा भी की जाएगी। राज्यपाल के दिल्ली प्रवास और दिल्ली में होने वाली बैठक के मद्देनजर राज्य सरकार ने संबंधित विभागों को निर्देश जारी कर विभाग से संबंधित अपडेट जानकारी राज्यपाल को सौंपी है।

इस दो दिनी कांफ्रेंस के पहले 10 राज्यों के राज्यपाल बदले हैं या उनके राज्य बदले गए हैं। राजभवन सूत्रों के अनुसार राज्यपालों की भूमिका में बदलाव समय के साथ हुआ है। इस कारण कांफ्रेंस में राष्ट्रपति मुर्मू राज्यपालों को कुछ और जिम्मेदारी भरे काम सौंप सकती हैं।

अयोध्या में उस बच्ची से मिल आओ राहुल और अखिलेश... जिससे गैंगरेप तुम्हारे नेता ने किया : आचार्य कृष्णम

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में विपक्ष नेता राहुल गांधी और यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव पर पूर्व कांग्रेस नेता आचार्य प्रमोद कृष्णम भड़क गए हैं। उन्होंने पोस्ट के द्वारा उसमें कुछ तीखे सवाल पूछे हैं।आचार्य कृष्णम ने कहा कि अयोध्या में 12 साल की बच्ची से गैंगरेप हुआ। बच्ची से मिलने के लिए अयोध्या चले जाओ। उस बच्ची से मिलने अयोध्या चले जाओ, जिसके साथ गैंग-रेप तुम्हारी पार्टी नेता ने ही किया है। कांग्रेसी नेता ने अपने पोस्ट में राहुल गांधी और अखिलेश यादव को भी टैग किया। उन्होंने कहा, सेक्युलरिज्म मौन है, ये मोईन खान कौन है।

दरअसल अयोध्या में 12 साल की बच्ची से गैंगरेप मामले में राजनीति तेज हो गई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समाजवादी पार्टी से पूछा कि अब तक मामले में जो आरोपी मोईन खान है, उसके खिलाफ पार्टी ने कोई कार्रवाई क्यों नहीं की। आरोपी का अयोध्या सांसद के साथ नजदीकी रिश्ता है। सपा

नेता मोईन खान पर 12 साल की बच्ची के साथ बलात्कार करने का आरोप है। बच्ची के साथ आरोपी के नौकर ने भी बलात्कार किया। आरोपी का मन नहीं भरा तब बच्ची का अश्लील वीडियो बना लिया। सोशल मीडिया पर वायरल की धमकी देकर बच्ची के साथ कई बार गैंगरेप किया गया। इस घटना की जानकारी सबके सामने तब आई जब बच्ची गर्भवती हो गई और उसने पूरी आपबीती अपनी मां को बताई। मां ने बेटी के साथ स्थानीय पुलिस थाने में शिकायत दी। हालांकि, पुलिस ने शुरुआती तौर पर कार्रवाई नहीं की। लेकिन, जब हिन्दू संगठनों ने पुलिस पर दबाव बनाया तो पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया।

घुसपैठ रोकना सिर्फ केंद्र की नहीं, सभी की जिम्मेदारी : मुख्यमंत्री हिमंत

दिसपुर (एजेंसी)। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने शुक्रवार को कहा कि घुसपैठ रोकना केवल केंद्र सरकार की नहीं बल्कि सभी की जिम्मेदारी है। उन्होंने कटाक्ष करते हुए राहुल गांधी से वह ''फॉर्मूला'' भी जानना चाहा कि ''अपनी जाति बताए बिना जाति सर्वेक्षण कैसे किया जाए।'' भाजपा के झारखंड चुनाव सह-प्रभारी शर्मा ने यहां संवाददाताओं से बातचीत में कहा, ''झारखंड का संथाल परगना घुसपैठ से सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ है। पिछले 20 वर्षों में इस क्षेत्र के विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों में घुसपैठियों की आबादी 50-60 प्रतिशत बढ़ गई है और स्थिति असम जैसी हो सकती

है।''

उन्होंने दावा किया कि असम में मुस्लिम आबादी 1952 के 12 प्रतिशत से बढ़कर वर्तमान में 40-42 प्रतिशत हो गई है, जिसका मुख्य कारण घुसपैठ है। शर्मा ने कहा, ''अगर घुसपैठ जारी रही तो वह दिन दूर नहीं जब मुख्यमंत्री को उनके (घुसपैठियों के) सामने आत्मसमर्पण करना पड़ेगा। यह कोई राजनीतिक मुद्दा नहीं है, बल्कि राज्य को बचाना सभी की जिम्मेदारी है। राज्य सरकार को इस मुद्दे पर आम सहमति बनानी चाहिए और घुसपैठियों के खिलाफ कार्रवाई शुरू करनी चाहिए।'' झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने घुसपैठ के लिए बार-बार केंद्र को जिम्मेदार ठहराया है और कहा है कि इसे रोकना केंद्र सरकार की जिम्मेदारी है। राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि राहुल गांधी जातीय सर्वेक्षण तो चाहते हैं लेकिन अपनी खुद की जाति का खुलासा नहीं करना चाहते। उन्होंने कहा, ''जातीय सर्वेक्षण बिहार में कराया गया है। क्या यह सारे देश में कराया जाएगा या नहीं, यह एक अलग मामला है।

केदारनाथ में फंसे शिवपुरी जिले के श्रद्धालुओं से सिंधिया ने की बात

शिवपुरी । केदारनाथ में आई प्राकृतिक आपदा के कारण मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले के श्रद्धालु फंस गए। कइयों को सुरक्षित निकालने के बाद शेष लोगों को निकालने की प्रक्रिया जारी है। वहीं केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने इन श्रद्धालुओं से बात कर उनकी हर संभव मदद का भरोसा दिलाया। केंद्रीय मंत्री सिंधिया ने सुबह केदारनाथ में बादल फटने के कारण वहां फंसे हुए श्रद्धालुओं से बात की। उन्हें अपने लोकसभा क्षेत्र गुना-शिवपुरी के श्रद्धालुओं के समूह के केदारनाथ में फंसने की सूचना मिली थी। केंद्रीय मंत्री ने इस सूचना पर एनडीआरएफ के अधिकारियों से बात कर बचाव कार्यक्रम के माध्यम से बदरवास के लोगों को जल्द नीचे लाने का आग्रह किया था।

दस साल से भारत में रह रहे शरणार्थी को कोर्ट ने फटकारा कहा- उदारता का फायदा मत उठाओ

नई दिल्ली (एजेंसी)। यमन का शख्स बीते दस सालों में पुणे में रहा रहा है। अब भारत छोड़ने को तैयार नहीं है। अवधि से ज्यादा समय तक ठहरे एक शरणार्थी को बॉम्बे हाईकोर्ट ने कड़ी फटकार लगाई है। इतना ही नहीं अदालत ने यमन के शख्स को पड़ोस में पाकिस्तान या किसी खाड़ी देश में जाने तक की सलाह दे दी। हाल ही में पुणे पुलिस की तरफ से उसे लीव इंडिया नोटिस जारी किया गया था। याचिकाकर्ता का कहना है कि वह 10 सालों से भारत में रह रहा है। मामले की सुनवाई जस्टिस रेवती मोहित डेरे और जस्टिस पृथ्वीराज चव्हाण की बेंच कर रही थी।

रिपोर्ट के अनुसार, जजों ने कहा, आप पाकिस्तान जा सकते हैं, जो पड़ोस में ही है। या आप किसी भी खाड़ी देश में जा सकते हैं। भारत के उदार रवैये का गलत फायदा न उठाएं। यमन के नागरिक खालिद गोमेई मोहम्मद हसन भारत में तय अवधि से ज्यादा रह रहे थे और उन्होंने पुलिस की तरफ से जारी नोटिस को भी कोर्ट में चुनौती दी थी।

वहीं दूसरी तरफ पुणे पुलिस की तरफ से कोर्ट में पेश हुए संदेश पाटिल की इस बात से कोर्ट सहमत था कि याचिकाकर्ता रिफ्यूजी कार्ड धारकों को अनुमति देने वाले 129 अन्य देशों में जा सकता है। कोर्ट ने कहा, हम आपको सिर्फ 15 दिनों तक सुरक्षा दे सकते हैं और उससे ज्यादा नहीं। इस दौरान कोर्ट ने कपल की बेटी की नागरिकता का भी मुद्दा उठाया, जिसका जन्म भारत में हुआ था। कोर्ट ने वकील से इस संबंध में सवाल किया। पाटिल ने कहा, मिलॉर्ड, अगर कोई पैरेंट भारतीय है, तो जन्म से ही भारतीय नागरिकता मिल सकती है। यहां दोनों यमन से हैं। साथ ही बच्ची का जन्म माता-पिता का वीजा खत्म होने के बाद हुआ है, जिसका मतलब है कि पैरेंट्स अवैध प्रवासी हैं। ऐसे में बच्ची को नागरिकता नहीं दी जा सकती।

बेंच ने पाया कि याचिकाकर्ता कुछ राहत चाहता था, क्योंकि वह ऑस्ट्रेलिया जाना चाहता है। हसन शरणार्थी कार्ड धारक हैं और उन्होंने जबरन डिपोर्ट किए जाने से बचने के लिए उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया है। याचिका में हसन ने कहा कि यमन सबसे खराब मानवीय संकट से गुजर रहा है और इसलिए वह भारत में बीते 10 सालों से रह रहा है। उन्होंने याचिका में कहा कि 45 लाख नागरिक विस्थापित हो गए हैं। हसन मार्च 2014 में स्टूडेंट वीजा पर भारत आए थे और 2015 में मेडिकल वीजा पर उनकी पत्नी भारत पहुंची थीं। हसन का वीजा फरवरी 2017 में खत्म हो गया और पत्नी का वीजा सितंबर 2015 में एक्सपायर हो गया था। पुणे पुलिस की तरफ से इस साल फरवरी में उन्हें लीव इंडिया

नोटिस जारी हुआ था और बाद में अप्रैल में भी नोटिस दिया गया था। पुलिस ने नोटिस मिलने के 14 दिनों में भारत छोड़ने के लिए कहा था। बेंच के सामने याचिकाकर्ता ने कम से कम ऑस्ट्रेलिया का वीजा मिलने तक डिपोर्टेशन से सुरक्षा की मांग की थी।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रधान संपादक-देवेंद्र सिंह*** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह**. 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**